Māhishmatī Māhātmya
An Ancient City Of India Glorified

Original Sanskrit Text with
Hindi Translation

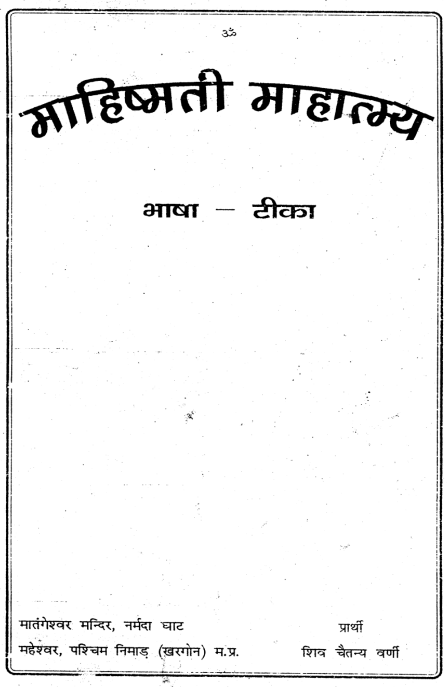
ॐ

माहिष्मती माहात्म्य

भाषा — टीका

मातंगेश्वर मन्दिर, नर्मदा घाट
महेश्वर, पश्चिम निमाड़ (खरगोन) म.प्र.

प्रार्थी
शिव चैतन्य वर्णी

Offered by

Murarilal Nagar
and
Linda Canestraight

Om Shanti Mandiram
Columbia MO
2013

Māhishmatī Māhātmya
An Ancient Sanskrit Classic

There is some controversy among scholars with regard to the identification of ancient Mahishmati with a town today.

Some say ancient Mahishmati is today's Maheshvara. Others argue that today's Omkara Mandhata is ancient Mahishmati.

We subscribe to the later view and have discussed it in previous publications.

A saint at Maheshvara presented a copy of a rare ancient work entitled ***Māhishmatī Māhātmya*** to Shri Komal Goswami of Indore, a true devotee of OM. A collection of photographs obtained from both Komal Goswami and Father Geo George Kannanayil of this holy city are presented in our previous publication ***Mahatī Māhishmatī Mahān Maheshvara***.

This rare transcribed Sanskrit text was done in long hand and now in digitized form by Om Shanti Mandiram to preserve for future generations. The original Sanskrit is followed by the Hindi translation. Sorry at this time we have no English translation, a task for a future scholar.

We are quite rich in this valued wealth of knowledge and present it to the world to view and honor.

ॐ

माहिष्मती माहात्म्य

भाषा — टीका

मातंगेश्वर मन्दिर, नर्मदा घाट
महेश्वर, पश्चिम निमाड़ (खरगोन) म.प्र.

प्रार्थी
शिव चैतन्य वर्णी

ॐ

माहिष्मती माहात्म्य

भूमिका

महर्षि वेदव्यास प्रणीत अष्टादश पुराणों मे वायु महा पुराण चौबीस हजार श्लोकों वाला है । जिसमें प्रायः सात हजार श्लोकों वाला वायु पुराण-श्री मनसुखराय-मोर कलकत्ता के यहाँ से छप गया है । शेष नर्मदा रहस्य और उसका भाग माहिष्मती माहात्म्य आज तक कहीं प्रकाशित नहीं हुआ है ।

हमारे घनिष्ठ मित्र स्वर्गीय पं. विष्णु जटाशंकर जी जोशी द्वारा हस्ताशिखित प्रायः तीन सौ वर्ष प्राचीन नर्मदा रहस्य और माहिष्मती माहात्म्य प्राप्त हुआ है । अभी हमने केवल माहिष्मती माहात्म्य का भाषा टीका महू निवासी पं. सुरेन्द्र द्विवेदीजी की सहायता से प्रकाशित किया है । विद्वान पाठकों से प्रार्थना है टीका की त्रुटियों को सुधारते हुए क्षमा कर अवश्य पढ़ें ।

नातंगेश्वर मन्दिर, नर्मदा घाट — प्रार्थी
महेश्वर, पश्चिम निमाड़ (खरगोन) म.प्र. — शिव चैतन्य वर्णी

ॐ

अथ माहिष्मती माहात्म्य प्रारभ्यते

श्रीगणेशाय नमः ॥ श्री गुरुचरणकमलेभ्योनमः
श्रीगुरुं गजनाथं च गोपतिं गोपतिप्रियम्
वन्दे गीर्वाणजनकं श्री गोपीजनवल्लभम् ॥१॥

अर्थ

श्री गुरुजी को गणेशजी को, गोपतिजी को, गोपति प्रिय को, वाणी के पितास्वरूप, श्री गोपीजन वल्लभ श्री कृष्णजी भगवान की वन्दना, नमस्कार करता हूँ ॥

संस्कृत

कदाचित् सूत आसीनं प्रपच्छ मुनिपुंगवाः
शौनकप्रमुखा विप्राः नैमिषारण्यवासिनः ॥२॥

अर्थ

एक समय नैमिषारण्य स्थान (तीर्थ स्थान) में रहने वाले मुनियों में श्रेष्ठ शौनकमुनिजी ने, ऋषि प्रवर सूतजी से पूछा ॥

संस्कृत

शौनक उवाच :—

शौनकजी ने कहा

त्वन्मुखाच्छ्रुतमस्माभिः पुराणं महदद्भुतम्
तत्र वायुपुराणोक्ताः पुरः पञ्चैव कीर्तिताः ॥३॥

अर्थ

हे भगवन्! हमने आपके मुख से अनेक श्रेष्ठ पुराण सुने हैं, उनमें से वायु पुराण में पाँच पुरियों का विशेष वर्णन है ॥

पुरश्च पञ्च सामान्याः शम्भुना कीर्तितः पुरा
प्रभासश्च कुरुक्षेत्रं तथा माया पुरी शुभा ॥४॥
अवन्ती च पुरी रम्या तथा माहेश्वरं पुरम्
लिङ्गानि चात्र पञ्चैव प्रभासे शशिभूषणः ॥५॥

भाषा — पहिले भगवान शिवजी ने इन पुरियों के बारे में कहा है, प्रभास, कुरुक्षेत्र, माया पुरी (हरिद्वार), अवन्ती (उज्जैन) और माहेश्वर पुर। इन पुरियों में क्रम से शिवजी का नाम प्रभास में है शशिभूषण — कुरुक्षेत्र में

२

एकानेश्वर मायापुरी (हरिद्वार) मे मनोहर
उज्जैन मे महाकाल माहेश्वरपुर मे माहेश्वर नाम
शिवलिंग है।

कुरुक्षेत्रे तथा ख्याता पुर्या मनोहरे
अवन्त्यां च महाकालं तथा माहेश्वरे पुरे ॥६॥
माहेश्वरमिति ख्यातं विदुर्लिंगान्यनुक्रमात्
तत्र माहिष्मती पुण्या नर्मदातीरमाश्रिता ॥७॥
तत्र तीर्थान्यनेकानि देवतायतनानि च
क्षत्रियाणामाश्रमास्तत्र तपस्विजनसेविता ॥८॥
तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि राजराजेश्वराश्रयम्

भाषा

महेश्वर मे माहेश्वर नाम प्रसिद्ध शिवलिंग को जानो
माहेश्वरपुरी माहिष्मती दूसरे नाम से प्रसिद्ध नगरी
श्री नर्मदातट पर स्थित है। यहाँ अनेक तीर्थ
देवालय है क्षत्रियों के आश्रम व तपस्वीजनो
से सेवित है। उस माहिष्मती को जानने की इच्छा से
सुनना चाहता हूँ जो कि श्रीराजराजेश्वर महाराज के
आश्रय में है॥

सूत उवाच :— श्रीसूतजी ने कहा :—

शृण्वन्तु सर्वे मुनय समाहिता: ॥
माहिष्मती पुण्य पवित्र कीर्तिम् ॥९॥
श्री सोमवंशोद्भव राज सेविताम् ॥
सोमोद्भवा तीरकृत प्रतिष्ठाम् ॥१०॥

भाषा

यहाँ एकत्रित हुए मुनीजनो माहिष्मती की पवित्र कीर्ति
को सुनिये। जिसकी प्रतिष्ठा चन्द्रवंशी राजाओं द्वारा
शिवपुरी श्री नर्मदा के तट पर हुई है ॥१०॥

मूल

कांचिद् महान्ति शिति कण्ठ तनुद्भवास्ता

३

ईडा कलेति हृदि रूप जलेति रेवा
सोमैक मूर्ति रिति मेकलकन्य केति
पर्यङ्ककेति सततं पुरमध्य पेति ॥११॥

भाषा

कुछ लोग इसे नील कण्ठ भगवान की पुत्री कहते हैं, कोई इसे मेकल पर्वत की पुत्री कहते हैं। कुछ लोग इसे सोम की प्रति मूर्ति कहते हैं। सदा ही महेश्वर पुर को घेरे रहती है ॥ ११॥

मूल

पुरा माहेश्वर क्षेत्रं पुण्यं भगवति निर्मितम्
नर्मदा संगमात् भूयो जातं मोक्षफलप्रदम् ॥१२॥

भाषा

प्राचीन काल से ही माहेश्वर क्षेत्र संसार में पुण्य दायक प्रसिद्ध है, नर्मदा जी संगम और बाधक है तथा मोक्ष फल दायक भी है ॥ १२॥

मूल

सच्चिदानन्द रूपं यत् ब्रह्मेति परमं महत्
वदन्ति परमात्मेति साकारं सोऽन्नपद्यते ॥१३॥

भाषा

सच्चिदानन्द रूप जो ब्रह्म है वह परब्रह्म परमात्मा है

मूल

सहस्र शीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्र पाद्
जातो नारायणः साक्षात् सृष्टि मार्ग प्रवर्तकः ॥१४॥

भाषा

सहस्र शिर, सहस्र पाद, सहस्र नेत्र वाला पुरुष ही नारायण है, जगत की सृष्टि करता है ॥ १४॥

मूल

तन्नाभि कमलाज्जातो ब्रह्मा लोक पितामहः ॥१५॥
ब्रह्मणो वेद तत्त्वज्ञ जातो वै मानसः सुताः ॥१५॥

७

भाषा

उनके नाभि कमल से लोक पितामह ब्रह्माजी पैदा हुए। ब्रह्माजी के मानस वेदज्ञ पुत्र पैदा हुए ॥१५॥

संस्कृत

तेषामत्रि गुणश्रेष्ठो सानुसूया तपो रत:
तस्य पुत्रास्त्रयो जाता ब्रह्म विष्णु शिवांशजा: ॥ १६

भाषा

उन ब्रह्माजी के मानस पुत्रों में अत्रि महर्षि जी गुणों में सर्व श्रेष्ठ थे, जो पत्नी अनुसूयाजी के साथ तपस्या में तल्लीन हुए, जिनके तीन पुत्र ब्रह्मा विष्णु शिवजी के अंश से पैदा हुए ॥

संस्कृत

ब्रह्मणोंशस्तु सोमो, भूत दत्तो दुर्वास एव च
विष्णु चन्द्रो दत्तो रांशो जाता त्रैलोक्य पालका: ॥१७॥

भाषा

ब्रह्माजी के अंश से चन्द्रमा पैदा हुए। श्री दत्तजी और दुर्वासाजी त्रैलोक्य के पालन कर्ता क्रमश: विष्णु भगवान और शंकरजी के अंश से पैदा हुए ॥

संस्कृत

ब्राह्मणानांच यो राजा स वनस्पति वीरुधाम्
तद्वा निधि जलानाच स्तस्मा ज्जातो बुध: स्वयम् ॥१८

भाषा

ब्राह्मणों के तथा वृक्षों वनस्पतियों के राजा कलानिधि जल के साथ चन्द्रदेव से बुध पैदा हुए ॥

संस्कृत

बुध स्य मनुकन्याया मिलायांच पुरूरवा
चक्रवर्ती त्रयोकर्ता राजा वै ख्यातिमान् ॥१९॥

भाषा

बुध से मनुकन्या इलामें पुरूरवा पैदा हुए जो चक्रवर्ती सम्राट थे तथा उर्वशी अप्सरा के पति भी थे ॥

४

चन्द्र पुरुरवसः पुत्रा स्तेषा मायुः सुबुद्धिमान्
तस्मान्नहुष संज्ञोऽभूत् यो सुरेशपदमलभत् ॥२७॥

भाषा

चन्द्रवंशी पुरुरवा के कई पुत्र हुए जिसमें आयु श्रेष्ठ बुद्धिमान थे, इनके पुत्र नहुष जी हुए जो कि सुरेश इन्द्र पद को प्राप्त किये।

मूल

तस्मात् गुणनिधिः पुत्रा ययातिरिति विश्रुतः
धर्मात्मा पुण्यशीलश्च दृशमो यः प्रजापते ॥२७॥
देवयानी शुक्रकन्यां प्रति जग्राह दैवतः
तयोश्चाभवतपुत्रो यदु लोक सुरर्वकरः ॥२२॥

भाषा

उनके नहुष जी के गुणनिधि नामक पुत्र हुए उनके ययाति नामक पुत्र हुए जिन्होंने ने संयोग वश शुक्र जी की पुत्री देवयानी से विवाह किया, उनके बड़े पुत्र यदु जी हुए ॥२२

मूल

यदोः सहस्रजिन्नामो तत्सुतः शतजित सुरवी
हैहयः शतजित पुत्रः सर्व लोकेषु विश्रुतः ॥२३॥
दिग्विजयी शत्रुदामनो यज्वकर्ता महोज्ज्वलः
धर्म स्तु हैहय सुतस्तत्सुतो नेत्र आत्मवान् ॥२४॥

भाषा

यदु से सहस्रजित, सहस्रजित से शतजित, शतजित के पुत्र हैहय लोकप्रसिद्ध दिग्विजयी यज्ञकर्ता और महान तेजस्वी हुए हैहय के धर्म पुत्र हुए धर्म के आत्मवान नेत्र पुत्र हुए ॥२४॥

मूल

नेत्राज्जातो कुन्तिनाम सोदृज्जिर भवत्ततः
महिष्मान्नाम विख्यातो विधुनंश निबर्हणः ॥२५॥

भाषा

५

नेत्र से कुन्त नामक पुत्र उससे सोहंजिर हुए उनके
पुत्र महिष्मान हुए जो चन्द्र वंश के भूषण स्वरूप थे ॥२४॥

मूल

सोहंजः पुत्रतां प्राप्तो तत्पुत्रो भद्रसेनकः।
पुत्रवत् पालयामास प्रजाः शोकं समन्वितः ॥२६॥
ययातिं नवमः श्रीमान् नियमाचारतत्परः
स च देव योगेन तपस्तप्तुं मनोदधे ॥२७॥
उमा माहेश्वरं क्षेत्रं रेवा याः संगमे वरः
आगत्य च नृपश्रेष्ठो महिष्मान्राज सत्तमः ॥२८॥

भाषा

महिष्मान के पुत्र भद्रसेन हुए जो अपनी प्रजा
जनों अपने पुत्रों के समान पालते थे। ययाति से
नवमे राजा श्रीमान महिष्मान ने नियम आचार
विचार युक्त होकर उमा माहेश्वर क्षेत्र (नर्मदा माहे
श्वरी के संगम पर तप करने की इच्छा से आये ॥२८॥

मूल

माहेश्वरी संगम सिद्धभूतले
स्थित्वा स्वनोऽभूद्धितो रतोऽभूत्
जपाप जाप्यं फल मूल भोजनो
माहेश्वरं ध्यान समर्चने स्थितः ॥२९॥
राजा त्रिषवणस्नायी रेवायां ध्यान तत्परः
तस्यैवं वर्तमानस्य शतवर्षमवर्तत ॥३०॥

भाषा

सिद्धक्षेत्र माहेश्वरी नर्मदा संगम पर स्थित स्वनसे
बैठकर मनसे जगत कल्याण की इच्छा रखते हुए
फल मूल भोजन पंच का जप करने लगे। भगवान
शिवजी के ध्यान में तत्पर होकर त्रिकाल स्नान
ध्यान सन्ध्या तत्परता से करने लगे इस प्रकार तप
करते हुए राजा महिष्मान एक सौ वर्ष व्यतीत हो गये ॥३०॥

६

दिव्य क्षेत्र सहस्राणि पृथिव्यां सन्ति शौनक
तेषु प्रियाणि सप्तैव उमाशंकरयोः सदा ॥ ३१ ॥
हिमाचलं कुरुक्षेत्रं काशी कालंजरं तथा
प्रभासमथ गोकर्णं तथा माहेश्वरं पुरम् ॥ ३२ ॥

भाषा

हे शौनक जो इस पृथ्वी पर शंकर पार्वती जी के हजारों क्षेत्र हैं लेकिन उनमें प्रिय सात ही क्षेत्र हैं हिमाचल (केदारनाथ) कुरुक्षेत्र - काशी - कालंजर - प्रभास पाटन - गोकर्ण तथा माहेश्वर क्षेत्र हैं ॥ ३२ ॥

प्रश्न कैलाशं निर्ध्य भगवान् सोमस्य गृहं मुत्तमम्
राज्ञः तपःप्रभावेण उमामाहेश्वरे पुरे ॥ ३३ ॥
शम्भुस्तत्र जगामाथ उमया गण समन्वितः
राजानं कृपयाप्राह वरदोऽहं समागतः ॥ ३४ ॥

भाषा

कैलाश तो भगवान श्रेष्ठतम गृह है। माहेश्वर पुर में राजा के तप के प्रभाव से भगवान शिव पार्वती तथा गणों के साथ आये और राजा से कहे हे राजन् प्रसन्न हूँ आप पर वरदान मांगो ॥ ३४ ॥

श्लोक

दृष्ट्वा प्रत्यक्ष मीशानं वरदोऽस्मीति वादिनम्
ननाम भुवि कायेन स्पष्टाङ्गः प्रेम निर्भरः ॥ ३५ ॥
माहिष्मत्या राजनेण संस्तुते
कृष्णकले शृणु शशांक मौलिः
स्थाणो पुरारे त्रिदशैकनाथ महेश्वरास्त्र्यम्बक शंकरेति ॥ ३६ ॥

भाषा

भगवान शंकर को साक्षात देखकर वरदोऽस्मि ऐसा सुन कर राजा माहिष्मान भगवान को साष्टांग प्रणाम करके हे भगवान हे स्थाणु हे त्र्यम्बक, हे चन्द्रचूड़ त्राहि माम् त्राहि माम्

6

एतेन श्रुतेन महादेवि प्रसन्नो भुवि पंकजः
माहिष्मतीमुवाचेदं वचनं हर्षगद्गदम् ॥ ३० ॥

भाषा

प्रार्थना सुनकर प्रसन्न मुख महिष्मती राजासे मनो
कामना पूर्ण करने वाली वचन बोले ॥ ३० ॥

इति श्री वायुपुराणे माहिष्मती माहात्म्ये
त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

वायु पुराण ~~में माहिष्मती माहात्म्य का~~
पहला अध्याय समाप्त
हुआ

ॐ

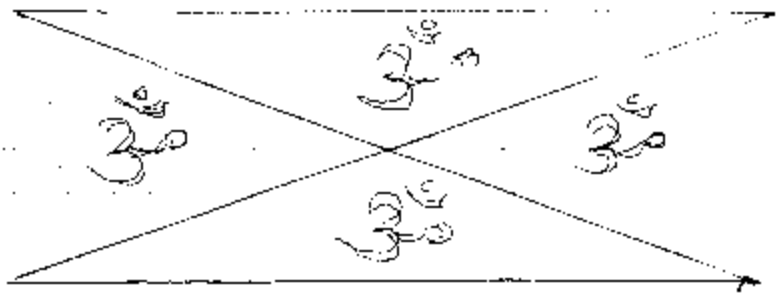

८

अथ द्वितीयोऽध्यायः

सूत उवाच - सूतजी बोले

मूल

संमुखो कृत्य राजानं वरदो नीललोहितः
उत्तिष्ठोत्तिष्ठ भो राजन् गृहाण त्वया पूजा समाधिभिः ॥१॥
तोषितोऽहं त्वया राजन् गृहाण विविधान् वरान्।
देवानां च नागानां मनुष्याणां सुदुर्लभान् ॥२॥

भाषा

भगवान शंकर राजा को सामने करके कहे हे राजन् आपकी पूजा और समाधि से मैं संतुष्ट हूँ अनेक प्रकार के वरदान जो कि देवताओं नागों और मनुष्यों के लिये दुर्लभ है हमसे प्राप्त करो ॥२॥

मूल

क्षेत्रे महीये कुरु राजधानीं
त्वदीय नामांकित नाम धारिणीम्
सुतोरणां रत्नपथां पणान्वितां
प्राकार चैत्य ध्वजशोभितां वराम् ॥३॥
माहिष्मतीति विख्याता पुरीयं ते भविष्यति
तस्यां राज्यं चिरं कृत्वा मत्समीपं समेष्यसि ॥४॥
तवैव वंशो चक्रस्थो हरेः कल्प
गुणाढ्यश्चक्रवर्ती च सप्तद्वीपपतिः प्रभुः ॥५॥
अनष्टद्रव्यता चैव नष्टं च पुनरा हरेत्
दत्तात्रेयप्रसादेन दोः सहस्रधरो विभुः ॥६॥
दुष्ट चौरादि दमनो राजराजो महाबली
अर्जुनेति विख्यातो कार्तवीर्यो भविष्यसि ॥७॥

भाषा

मेरे इस महेश्वर क्षेत्र में अपने नामवाली राजधानी बनावो। अच्छे तोरण वाली अच्छी सड़क वाली अच्छे दुकानों वाली निशान फाटक ध्वजा इत्यादि से शोभित माहिष्मती नाम से प्रसिद्ध तुम्हारी यह पुरी होगी। इसमें बहुत दिनों

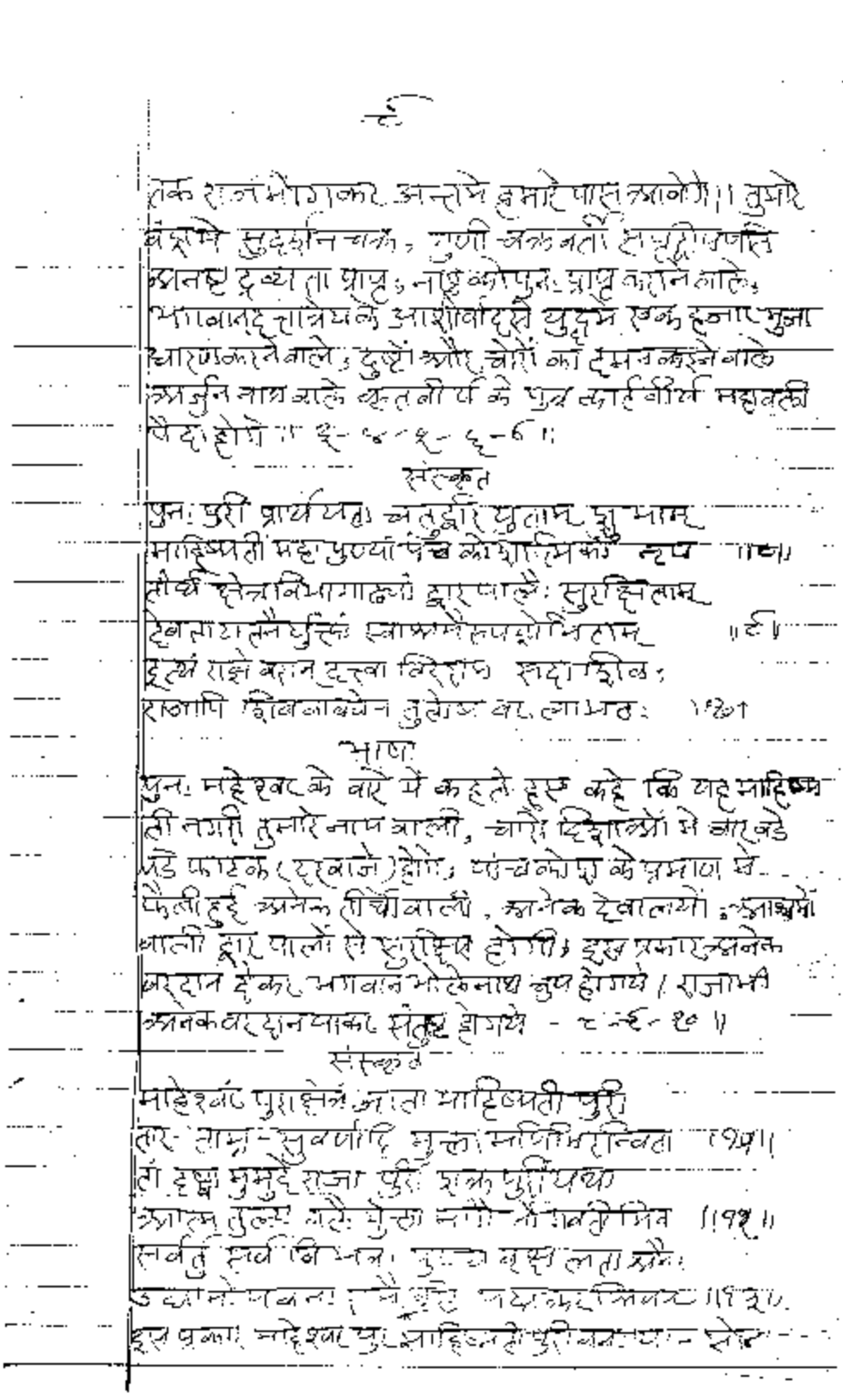

१०

चाँदी मोती इत्यादि रत्नों से भरपूर होकर अमरावती पुरी के समान रहेगी। उसे इस प्रकार देख कर महाराज बहुत प्रसन्न हो, अपने समान बलवान जनों को देखकर, नागों की भोगवती नगरी के समान सब ऋतुओं में सब प्रकार के बाग बगीचे तालाब आदि से परिपूर्ण थी ॥१९३॥

संस्कृत

गोपुरद्वारमार्गेषु कृतं कौतुकतोरणम्
चित्रध्वजपताकाभिः सुलब्धाभिः हृतं तथा ॥१९४॥
संमार्जितं महामार्गं रम्यं घणकचत्वरम्
सिक्तं गन्धजलैः कृत्वा फलपुष्पाक्षतांकुरैः ॥१९५॥
हरिद्रारिष्टहारीच दध्यक्षत फलैः शुभैः
आलवालपूर्णकुंभैः बलिभिः धूपदीपकैः ॥१९६॥

भाषा

गोपुरमार्गद्वारों पर सुन्दर तोरण चित्रित ध्वजपताकाओं से माहिष्मती नगरी सजगई (सजाई गई) सड़कें नित्य साफ की जाती, सब मार्ग चौराहा तिराहा आदि सुगन्धित जल से सींचे जाते, फल फूल अक्षत दूर्वा से प्रत्येक घर के द्वार रंगोली से सजाकर जल से भरे घड़े रखे जाते बलि के लिये धूप दीप प्रत्येक घर के सामने रखे जाते ॥१९६॥

संस्कृत

सर्वकाम समृद्धायां तस्यां राज्यं चकार सः
दानयज्ञपरो नित्यं प्रजापालनतत्परः ॥१९७॥
देवतीर्थस्य संयोगात् बहुपुण्यो बभूव हु
कल्पगा तीरमाश्रित्य न किंचिद्दुःखितम् ॥१९८॥

भाषा

सब प्रकार से समृद्ध हुई उस माहिष्मती पुरी में उसने माहिष्मान नाम वाले राजा ने राज्य किया दान पुण्य यज्ञ करते हुए प्रसन्नता पूर्वक नर्मदा तट पर स्थित होने से कुछ तीर्थ सेवन होने से कुछ भी दुःख नहीं था ॥१९८॥

१९

संस्कृत

बहु वर्ष सहस्राणि राज्यं चक्रे महीपतिः
प्रजा पुत्र मुदिते तस्य पुत्र पौत्र समन्विता ॥१९॥
भद्र सेन सुतश्चास्य जातो गुण निधि महान्
तेनाति शुशुभे राजा धार्मिकादी जितेन्द्रियः ॥२०॥
तस्यैव गुण शीलस्य शाश्वते राज्यमुत्तमम्
जरा विहीनकरणी प्राप्ता सत्सुखदायिनी ॥२१॥

भाषा

राजाने कई हजार वर्षों तक राज किया; उसके पुत्र पौत्र से संपन्न प्रजा सुखी रही ॥ राजा के भद्र सेन नामक गुणी पुत्र पैदा हुवा ॥ इससे (पुत्र से) धर्मवान, जितेन्द्रिय राजा बहुत प्रसन्न हुए ॥ इस प्रकार धर्मात्मा जितेन्द्रिय महाराज को वृद्धावस्था आगई ॥ १९ - २० - २१

संस्कृत

भद्र सेन समाहूय मंत्री गण समन्वितम्
पुरोहित महैनैव महिष्मानब्रवीत् सुधी ॥२२॥
माहेश्वरी समारभ्य यावद् हनारवर्तिका
माहिष्मती पुरी पुत्र पालनीयप्रयत्नतः ॥२३॥
रेन्द्र लक्षण माश्रित्य कोश मात्र प्रमाणतः
स्यात् कोटि तीर्थानि उमा माहेश्वरे पुरे ॥२४॥
राजेशं केशवं साक्षी माहिष्मु रघुनन्दनम्
सन्दे माहिष्मती रेवा काले शैलगदम्बिकाम् ॥२५॥

भाषा

महाराज महिष्मान जी ने कुलपुरोहित जी के मतानुसार मंत्री गणों के सहित प्रिय पुत्र को बुलाकर कहा कि, "बेटा! माहेश्वरी नदी से लगाकर हनारवर्तिका तक तथा पूर्व से पश्चिम एक कोश तक स्थित माहिष्मती नगरी को आप सब लोग मिल कर पालन करो। इसमें सभी करोड़ तीर्थ हैं। राजेश्वर - आदि केशव - साक्षी विनायक - माहेश्वर लिंग और रघुनन्दन राम जी - काले

१२

[illegible] नाम
स्मार है ॥२५

मूल

तीर्थभूतामिमां वत्स विद्धि शंकरवल्लभाम्
पालनीया त्वया वीर श्रेयस्ते भविता ध्रुवम् ॥२६॥
मया तु धूर्जटेर्ध्यानं कर्तव्यं वनवासिना
शिवप्रसादमासाद्य गन्तव्यं शांकरं पदम् ॥२७॥
इति स्वपुत्रमाज्ञाप्य गमनाय मनोदधे
भद्रसेनोऽपि पितरं ववन्दे खिन्नमानसः ॥२८॥

भाषा

बेटा! यह माहेश्वरी नगरी तीर्थ रूप है इसे भगवान
शिवजी की वल्लभा (प्रिया) समझो। हे वीरपुत्र!
तुम इसे पालन करना चाहिये तुमारा कल्याण होगा।
मैं तो वनवासी बनकर भगवान शिव के ध्यान ही
अपना कर्तव्य मानता हूँ। भगवान शिवजी की
कृपा से शिव लोक प्राप्त करूँ ऐसा प्रिय पुत्र कहकर
वानप्रस्थाश्रम में वनवास के लिये तैयार होगये।
भद्रसेन ने अत्यन्त दुःखी मन से पूज्य पिताजी को
प्रणाम किया ॥२८॥

मूल

निवृत्तो मानसं त्यक्त्वा निवृत्तो राजधानीतः
प्रजापालनधर्मज्ञो गृहीत्वा जननीं शिवाम् ॥२९॥
पितृदत्तमसौ राज्यं प्राप्य पालनतत्परः
तत्पुत्रो धनको राजा दशाब्दं क्षितिमण्डलम् ॥३०॥
पितृपैतामहं राज्यं पालयामास धर्मवित्
तस्य पुत्रो महायोगी दुर्मदो नाम नामतः ॥३१॥
राज्यं कृत्वा महीं भुक्त्वा शिवध्यानपरोऽभवत्
कृतवीर्यो तस्य पुत्रोऽभूत् महातेजा महाबलः ॥३२॥
इति श्री

वायु पुराणे माहिष्मती
माहात्म्ये द्वितीयो ध्यायः ॥२६॥

१२

मन को सांसारिक व्यवहारों से हटाकर
राजशासन से अलग होनेवाले पिताजी का
हार्दिक आज्ञीर्वाद लेकर प्रिय पुत्रजी ने
राज शासन करने मे तत्पर होगये। इनके
पुत्रजी ने जो कि धनक नाम वाले थे पिता
पितामह के राज को धर्म युक्त पालन किया;
उनके लड़के महायोगी दुर्मदजी हुए जो
धर्म पूर्वक राज्य करके अन्त में ध्यान परायण
होगये उनके लड़के महातपस्वी प्रबलपराक्रमी
कृतवीर्य जी पैदा हुए ॥ ३२॥
इति श्री वायु पुराण के गाहिज्यवी
माहात्म्य का दूसरा
अध्याय समाप्त हुवा॥२॥

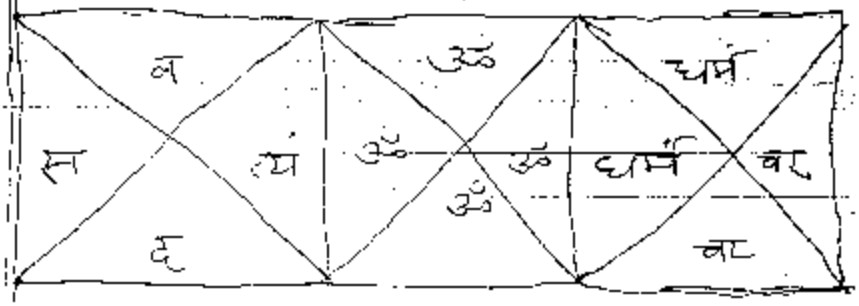

१४

अथ तृतीयोऽध्यायः

शौनक उवाच :—

शौनकजी ने कहा :—

मूल

कृतवीर्यस्तु राजर्षिः कीदृशं कर्म चाऽकरोत्
हरिचक्रावतारोऽत्र गृहे जातः कथं नृप ॥१॥

भाषा

श्रीमान् राजर्षि कृतवीर्यजी ने कौन सा कर्म किया
कि भगवान् विष्णुजी के चक्रावतार सुदर्शनजी
उनके घर जन्म लिये ॥१॥

सूत उवाच :—

सूत जी ने कहा

मूल

शृणु भार्गव यत्नेन कृतवीर्य पराक्रमम्
यथा सुदर्शनः साक्षात् – अवतीर्णो हरेः कलाः
कृतवीर्योऽपि राजर्षिः राजधर्म विचक्षणः
पितृदत्तं महीराज्यं पालयामास धर्मतः ॥३॥
एवं बहुतिथे काले जाते राजा विचारवान्
सुप्रजास्तु कथं मे स्यादिति चिन्तापरोऽभवत् ॥४॥

भाषा

हे भार्गवजी! यत्न पूर्वक कृतवीर्य राजा के पराक्रम
को सुनिये। जिस प्रकार विष्णु भगवान् के सुदर्शन
चक्र का अवतार हुआ। महाराज कृतवीर्यजी के पिता श्री द्वारा
दिये हुए राज्य को धर्म पूर्वक पालन किये। बहुत
समय बीत जाने पर चिन्तित होकर सोचने लगे कि
किस प्रकार से मुझे श्रेष्ठ धर्मपरायण पुत्र पैदा होगा ॥२,३,४॥

मूल

स्वमनः सार मालोक्य तपस्तप्तुं मनो दधे
रुद्रदेहोद्भवा तीरे निष्ठमाचार तत्परः ॥५॥
माहेश्वर समीपस्थो यतमाक्ष काम मानसः

१५

आहारं नियमं कृत्वा तपश्चक्रे नराधिपः ॥६॥
कार्तिक पूर्णमासे कन्द मूल फलाशनः
द्वितीये मासि पक्षाद्धौ तृतीये चोदकप्रियः ॥६॥
चतुर्थे वायु भक्षस्तु निराहारश्च पंचमात्
स्थाणुभूतश्च षष्ठेहो नाणश्यद्दुःखमुनेः
ध्यायन् महेश्वरं देवं नाभ्यात् किंचिदचिन्तयत्
सर्वाश्चेष्टा परं जातं तपो दीर्घं महीपतेः ॥

भाषा

अपने व्रत सार समाप्त कर तपस्या करने में मन लगाये शिवपुत्री श्री नर्मदाजी के किनारे माहेश्वरी नर्मदा संगम पर मनकर्मणा मौन होकर फलाहार का नियम करके राजा ने तप करना प्रारम्भ किया। जहिके माह में कन्द मूल खाकर नियम किये दूसरे महीने से पक्षा रात नियम किये तीसरे में केवल पानी पीकर रहे, चौथे महीने में वायु भक्षण किये, पांचवे महीने में निराहार वायु पीना भी छोड़ दिये, स्थाणु के ठूंठ के समान खड़े खड़े किसी को न देखते हुए भगवान शंकर का ध्यान करने लगे इस प्रकार बहुत काल तक वे तप करते रहे ॥ ६-७-८-९ ॥

श्लो

ततो वैकुण्ठ निलये विष्णोश्चक्रं सुदर्शनम्
स्मरकान्त समाहूय कार्यविद्यं च चाब्रवीत् ॥१०॥
सहस्रारस्तु प्रत्यक्षो मूर्तिमान प्रत्यदृश्यत
प्रणम्य देवं देवेशं बद्धाञ्जलिपुटः स्थितः ॥११॥
सनाह्यमान चरणलक्ष्मीः कमललोचनम्
सनकाद्यैः योगिनैः संस्तुतं सिद्धसेवितम् ॥१२॥
सेव्यमानं परं मूर्तैर्वेदैः सांगैः पृथक्क्रमैः
सुनन्दनन्दप्रमुखैः पार्षदैरभिपूजितम् ॥१३॥

भाषा

वैकुण्ठ में विष्णु चक्र सुदर्शन को श्री विष्णु भगवान ने बुलाया सहस्रार सुदर्शन चक्र भी मूर्तिमान होकर

३६

प्रकट होगया ; सामने हाथजोड़कर खड़ा होगया, लक्ष्मी माताजी विष्णु भगवान के चरण दबा रहीं थीं। सनकादि सिद्ध योगी लोग स्तवन कर रहे थे ; चारों वेद अपने अपने अंगों के साथ स्तवन कर रहे थे ; सुनन्द नन्द आदि गण लोग पूजा कर रहे थे ॥ १०-११-१२-१३

संस्कृत

सुदर्शनस्तु प्राह पूज्य देवेश भुवनी हृच;
स्मृतः किमर्थं देवेश कस्य घातं करोम्यहम् ॥१४॥
त्वदाज्ञा भंग कर्तारं दुष्टं धर्मविरोधिनम्
परोपतापिनं पापं अहं न जानामि यमालयम् ॥१५॥
नदी पर्वत दुर्गेषु स्वर्ग पातालं भूमिषु
समुद्र काशमार्गेषु कुण्ठतानगतिर्मम ॥१६
महावीर मयायुद्धं एक पति न निर्जितम्
मन संतोष करं युद्धं न जातं केशवक्वचित् ॥१७॥
तदिच्छामि रमाकान्त देहि मे युद्धमुत्तमम्
भूयो द्विरिक नाचेदं श्रुत्वा वाक्यं जनार्दनः ॥१८॥

भाषा

सुदर्शन चक्र ने भी भगवान विष्णु की पूजा की और कहा प्रभो! दास को क्यों स्मरण किये, मैं किसे मारूं, आप की आज्ञा भंग करने वाले दुष्ट, धर्मविरोधी, दूसरों को दुःख देने वाले जिस जिस को मारकर यमपुरी भेजूं। नदी पर्वत किला स्वर्ग पाताल भूमि समुद्र आकाशादि में हमारी सर्वत्र अव्याहत गति है। बहुत युद्ध किया है — लेकिन भगवन्! किसी भी युद्ध में संतोषप्रद युद्ध नहीं हुआ मैं आपसे ही युद्ध करना चाहता हूं। इस बात को दो तीन बार कहा विष्णु भगवान से १४-१५-१६-१७-१८

संस्कृत

विश्वकर्ता विश्वसाक्षी सर्वज्ञ स्तमुवाच ह
समायुध वरप्राज्ञ युद्धं दास्यति कस्तव ॥१९॥

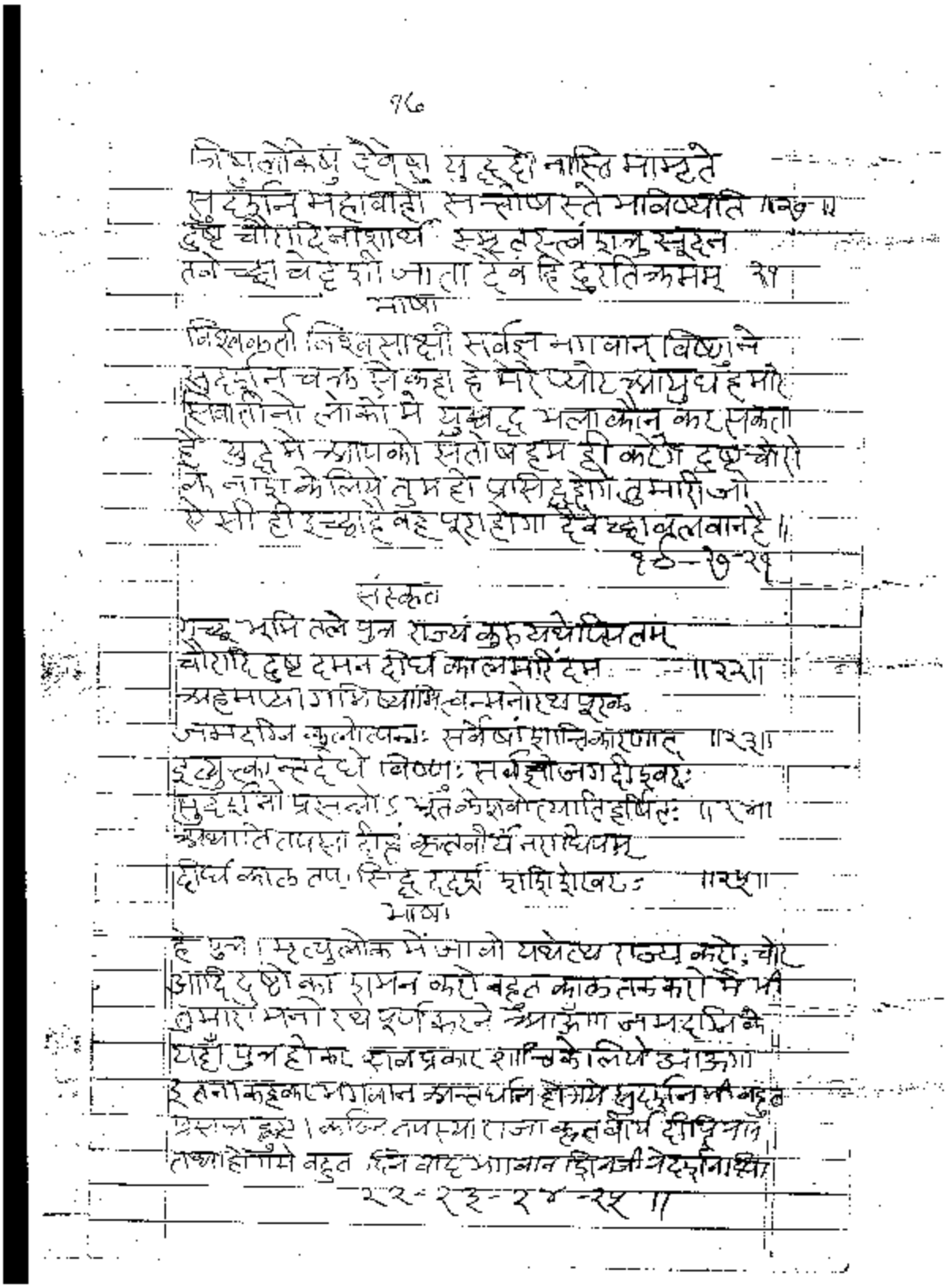

76

त्रिषुलोकेषु देवेषु युद्धो नास्ति मामृते
सुदर्शनि महाबाहो सन्तोषस्ते भविष्यति ॥२०॥
दुष्ट चौरादिनाशार्थं स्मृतस्त्वं शत्रुसूदन
तवेच्छा चेदृशी जाता दैवं हि दुरतिक्रमम् ॥२१॥

भाषा

निखिलकर्ता निखिलसाक्षी सर्वज्ञ भगवान विष्णु ने
सुदर्शन चक्र से कहा हे मेरे प्यारे आयुध हमारे
तिनो लोको मे युद्ध भला कौन कर सकता
है युद्ध मे आपको संतोष हम ही करेंगे दुष्ट चोरो
के नाश के लिये तुम ही प्रसिद्ध होगे तुम्हारी जो
ऐसी ही इच्छा है वह पूरा होगा दैव इच्छा बलवान है ॥
१८-१९-२१

संस्कृत

गच्छ भूमि तले पुन राज्यं कुरु यथेप्सितम्
चौरादि दुष्ट दमन दीर्घ कालमरिंदम ॥२२॥
अहमप्यागमिष्यामि तन्मनोरथ पूरक
जमदग्नि कुलोत्पन्नः सर्वेषां शान्तिकारणात् ॥२३॥
इत्युक्त्वान्तर्दधे विष्णुः सर्वज्ञो जगदीश्वरः
सुदर्शनो प्रसन्नोऽभूत केशवेऽत्यातिहर्षितः ॥२४॥
अथाति तपसा दीप्तं कृतवीर्यं नराधिपम्
दीर्घ काल तपः सिद्ध ददर्श शशिशेखरः ॥२५॥

भाषा

हे पुत्र मृत्युलोक में जाओ यथेच्छ राज्य करो; चोर
आदि दुष्टो का दमन करो बहुत काल तक करो मै भी
तुम्हारे मनोरथ पूर्ण करने आऊँगा जमदग्नि के
यहाँ पुत्र होकर शान्ति के लिये आऊँगा
इतना कहकर भगवान अन्तर्धान हो गये सुदर्शन भी बहुत
प्रसन्न हुए। कृतवीर्य राजा तपस्या से दीप्तिमान
तथा दीर्घ काल से बहुत दिन बाद भगवान शिवजी ने दर्शन दिया।
२२-२३-२४-२५ ॥

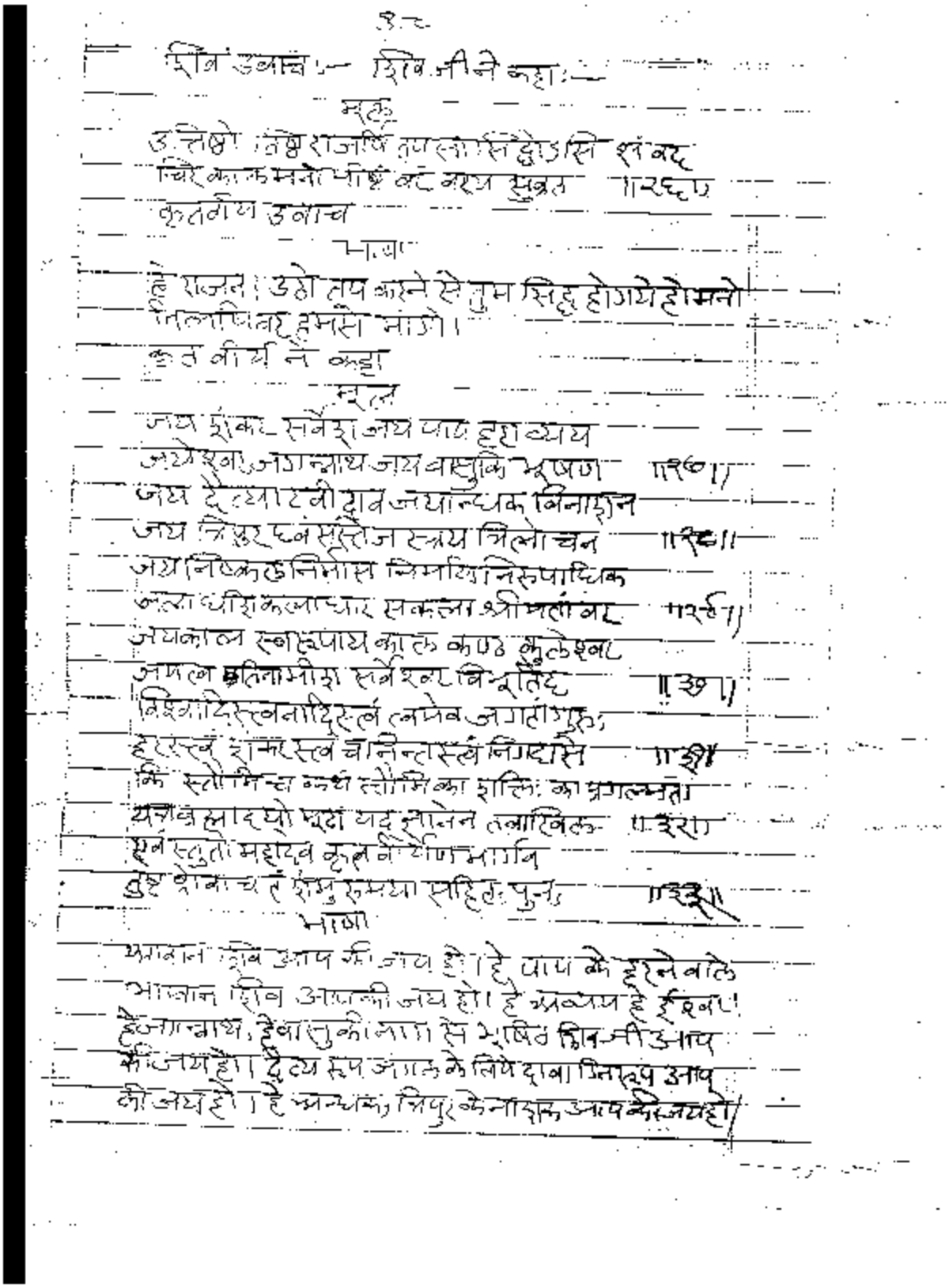

शिव उवाच — शिव जी ने कहा:—

मूल

उत्तिष्ठो उत्तिष्ठ राजर्षि तपसा सिद्धोऽसि शंकर
चिरं कालं मनो भीष्ट वरं वरय सुव्रत ॥२६॥

कृतवीर्य उवाच

भाषा

हे राजन! उठो तप करने से तुम सिद्ध होगये हो मनो
वांछित वर हमसे मांगो।

कृतवीर्य ने कहा

मूल

जय शंकर सर्वेश जय पाप हृद्व्यय
जयेश्वर जगन्नाथ जय वासुकि भूषण ॥२७॥
जय दैत्याटवी दाव जयान्धक विनाशन
जय त्रिपुर घ्न सर्वेज्ञ त्र्यय त्रिलोचन ॥२८॥
जय निष्कल निर्मोह निर्मायि निरुपाधिक
जय धीरि कलाधार सकला श्रीमतांवर ॥२९॥
जयकाल स्वरूपाय कालकण्ठ कुलेश्वर
जय लय कृतिनामीश सर्वेश्वर निवृतिद ॥३०॥
विश्वादिस्त्वनादिस्त्वं त्वमेव जगतां गुरु
हरस्त्वं शंकरस्त्वं चानन्तस्त्वं निगद्यसे ॥३१॥
किं स्तौमि च कथं स्तौमि का शक्तिः का प्रगल्भता
यत्रैव ह्लादयो घटा यद्वत्सानन तत्रविक ॥३२॥
एवं स्तुतो महादेव कृतवीर्येण भार्गवि
दुष्टं वरं च तं शम्भु रमया सहितः पुनः ॥३३॥

भाषा

भगवान शिव आप की जय हो। हे पाप के हरने वाले
भगवान शिव आपकी जय हो। हे अव्यय हे ईश्वर!
हे जगन्नाथ, हे वासुकी नाग से भूषित शिव जी आप
की जय हो। हे दैत्य रूप जंगल के लिये दावा अग्नि रूप आप
की जय हो। हे अन्धक, त्रिपुर के नाशक आप की जय हो।

१८

निष्कल निर्मल निरुपाधिक प्रभो आपकी जय हो
कलाधीश कलाधार संपूर्ण श्रीमानों में श्रेष्ठ प्रभो
आपकी जय होवे ॥ काल स्वरूप महाकाल, काल
कण्ठ कुकेश्वर आपकी जय हो ॥ यति जनों के ईश
सर्वेश्वर ऐश्वर्यदाता, विश्व के आदि मध्य अन्त
में रहने वाले - पाप दुःखों के हरने वाले न्याय
करने वाले नित्य निरन्तर मैं आप की क्या और
कैसे स्तुति करूँ हमने आप की स्तुति करने में भला
क्या शक्ति है ? ब्रह्मादि देवगण आपकी स्तुति नहीं
कर सकते तो मैं भला क्या कर सकता हूँ इसप्रकार
प्रार्थना करने पर पार्वती मां के साथ शिवजी अत्यन्त
प्रसन्न होवे ॥२०-२२-२९-३०-३१-३२३३॥

श्लोक

वरं वृणि महाराज यत्ते मनसि वांछितम्
इति श्रुत्वा धराधीश उवाच जगदीश्वरम् ॥३४॥
सन्देहं जाहि नाथ देहि मे सुन्दरं सुतम्
धीमन्तं कीर्तिमन्तं च भूभुजां पतिमीश्वरम् ॥३५॥

भाषा

भगवान शंकर ने कहा कि हे राजन जो तुम्हारे मन में
हो वह वर मांगो। ऐसा सुनकर राजा कृतवीर्य ने कहा
हे प्रभो। हमें पुत्र दीजिये जो धैर्यवान कीर्तिमान
और राजाओं का राजा होवे ॥३४-३५॥

संस्कृत

सर्व सद्गुण संपन्नं साधुकर्मा लोकपूजितम्
सर्व शत्रु निहन्तारं दुष्ट दानवमर्दनम् ॥३६॥
इत्थं पुत्रं प्रयाचे कृपया दातुमर्हसि
महेश्वर उवाचेदं यथेष्टं ते भविष्यति ॥३७॥
अर्जुनः कृतवीर्यस्ते चक्रवर्ती हरेः कला
भविष्यति महासत्त्व चक्रवर्ती महायशाः ॥३८॥

२०

भाषा

सद्गुण संपन्न लोक पूज्य सर्व प्रकार के शत्रुओं
का नियंत्रण करनेवाले दुष्ट दानवों का दमन करनेवाले
इस प्रकार का पुत्र मैं चाहता हूँ कृपापूर्वक आप
हमें ऐसा ही पुत्र दीजिये ।। श्रीकृष्ण भगवान ने कहा कि
जैसा तुमने कहा वैसा ही पुत्र होगा ।। अर्जुन नामधारी
भगवान विष्णु का सुदर्शन चक्र महासत्त्व आपका
चक्रवर्ती सम्राट पुत्र होगा । ।। ३६-३७-३८ ।।

संस्कृत

दत्तमेवाद्य हेरंबगत्वा साधु योग महागुण,
न नूनं कार्तवीर्यस्य गतिं यास्यन्ति पार्थिवा : ।।३९।।
यज्ञ दान तपो योग श्रुत वीर्य जयादि भि:
पंचाशीति सहस्राण्य याहृत बला: सभा ।।४०।।
अनष्ट द्रव्य सम्रेण बुभुजी क्षाय्य तादुनस्
सहस्र स्त्रीष्वेक कोटी माहिष्मती भनिष्यति ।।४१।।
अष्टादश द्वीप पति: पुत्रस्ते भनिता धुनम्
महेश्वरो वरान्दत्त्वा राज्ञो भान्तर्दधे तत: ।।४२।।
कृतवीर्यो नरं प्राप्य देवं संपूज्य भक्तित:
तीर्थ भूमिं नमस्कृत्य जगामस्व निवेशनम् ।।४३।।
मनोरथ महारत्नं प्राप्य राजा विहर्षित:
राज्य चक्रा नगरे माहिष्मत्यां च वीर्यवान् ।।४४।।
इति श्री नारद पुराणे माहिष्मती माहात्म्ये तृतीयो
ऽध्याय: ।। ३ ।।

भाषा

श्री निर्विघ्न भगवान के जन्म का वृत्तान्त बताते हुए जी से
वरदान प्राप्त कर महान गुणों का शौर्य के समान कोई
राजा नहीं होगा यज्ञ दान तपस्या योग आदि गुणों
वाले विश्व विजयी पचासी हजार वर्षों तक राजा अन्य राजा
गण से कोष नष्ट पदार्थों को पुनः प्राप्त करने वाले हजारों
स्त्री समूहों को भोगने वाले अट्ठारह द्वीपों के स्वामी

२१

आपका पुत्र होगा इतना सब कहकर भगवान शिव
जी अदृश्य हो गये। कृतवीर्य भी भगवान से वर
पाकर अत्यन्त प्रसन्न हुए। भगवान शिव जी
की मूर्ति पूजा किये, माहिष्मती नगरी में यथेच्छ
राज करने लगे॥ इति ४४-४१-४२-४३-४४॥

इति श्री नागु महापुराण
के माहिष्मती माहात्म्य का
तीसरा अध्याय भाषा संपूर्ण
हुआ

शान्तिः।
शान्तिः॥
शान्तिः॥।

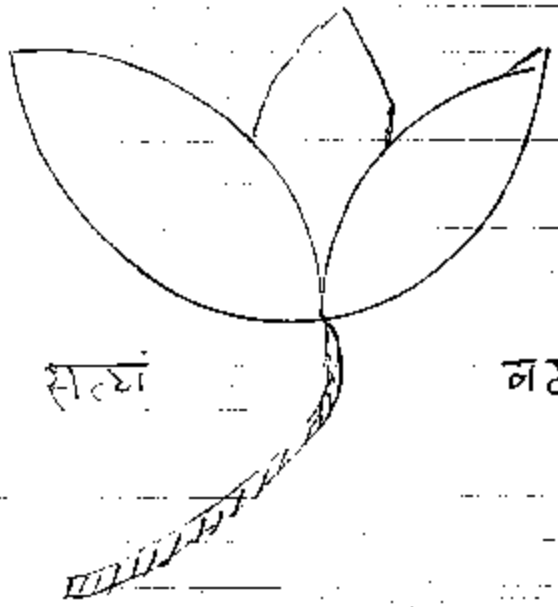

सत्यं नट

२२

अथ चतुर्थोऽध्यायः

सूत उवाच

सूत जी ने कहा

संस्कृत

ततः कतिपये काले कृतवीर्यस्य भूपतेः
महिषी गर्भमाधत्त रेणुका भगिनी हि सा ॥१॥
महिषीं पतिः प्रसन्नः स्मृत्वा दृष्ट्वा दोहदधारिणीम्
परमप्रीतो महिषीं भावं मनसाहरिमर्चयत् ॥२॥
अथ काल उपावृत्ते सर्वदेव सुपूजिते
प्रसन्नासु भूमि सलिला वायुर्निलयविदूरे ॥३॥
कार्तिकस्य सिते पक्षे सप्तम्यां भानुवासरे
अनादौ निशानाथे निशीथे च शुभे क्षणे ॥४॥
सुषुवे राजपत्नी सा कुमारं सूर्यसन्निभम्
सहस्रार्कप्रतीकाशं सुप्रभं सुमुखेक्षणम् ॥५॥

भाषा

कुछ दिनों के बाद राजमहिषी ने गर्भ धारण किया
जो कि रेणुका देवी श्री जमदग्नि ऋषि की पत्नी की
भगिनी थी। वह गर्भ काल में ही श्रीविष्णु भगवान
की भक्ति करती थी, प्रसव काल आने पर महारानी ने
दिव्य सुपूजित प्रसन्न भूमि, प्रसन्न वातावरण में
कार्तिक महीने के शुक्ल पक्ष सप्तमी तिथी शुभ मुहूर्त
श्रवण नक्षत्र में राजकुमार को जन्म दिया। वह बालक
सूर्य समान तेजस्वी ओजस्वी और दिव्य प्रभायुक्त
और सुन्दर था ॥ १-४ ॥

संस्कृत

महेषो हृष्टः सहस्रं पुत्रं श्रुत्वा महीपतिः
वाजिहस्तिरथं दत्त्वा तुतोष परया मुदा ॥६॥
मन्त्रिणश्च समाहूय मन्त्रार्थं निपुणाञ्जयान्
पौरोहितं यथामन्त्रं कारयामास जातकम् ॥७॥

२३

भाषा

भगवान दिनजी के कथनानुसार ही पैदा हुए पुत्र को
सुन कर महाराज कृतवीर्य जी बहुत प्रसन्न हुए।
समाचार देने वालों को बहुत पुरस्कार देकर इनाम
दिये, मंत्रीजी को बुलवाकर परामर्श तथा पुरस्कार
दिये, पुरोहितजी को बुलवाकर नान्दी मुख आदि
श्राद्ध कर्म किये। ६-७

संस्कृत

पुत्रजन्म वार्ता श्रुत्वा चागताः महर्षि सत्तमाः
तीर्थ यात्रा प्रसंगेन पराशर पुरोगमाः ॥८॥
मन्वत्रि विष्णु हारीत याज्ञवल्क्यो शनो गिरा
गर्ग शौनक बृहद् विष्णु पुलस्त्यो सित देवलौ ॥९॥
मरीचि क्रतु कण्वौ च वसिष्ठ भृगु गौतमाः
धमाप स्तम्ब संवर्त काट्यायन बृहस्पतिः ॥१०॥
एवमादि सहस्राश्च मातंग कपिलादयः
सशिष्याश्च महाभागा रेवा तीर मुपागताः ॥११॥
पूजयामास विधिना दान सर्वान् राजसत्तमः
पप्रच्छ जातकं सूनोः नामस्कन्धाद्यर्थतः ॥१२॥

भाषा

पुत्रजन्म का समाचार सुनकर यात्रा प्रसंग में बहुत से
महर्षि लोग आगये - पराशर, मनु - अत्रि - विष्णु,
हारीत - याज्ञवल्क्य - शुक्राचार्य - अंगीरा - यम -
आपस्तम्ब - संवर्त - कात्यायन - बृहस्पति - गर्ग
शौनक - बृहद्विष्णु - पुलस्त्य - असित - देवल - मरीचि -
क्रतु - कण्व - वशिष्ठ - भृगु - गौतम - मातंग ऋषि - कपिल
देव ऋषि इत्यादि सैकड़ों महात्मा गण अपने शिष्यों के साथ
नर्मदा तट पर स्थित माहिष्मती पुरी में आगये। सभी
ऋषि मुनि गणों को महाराज कृतवीर्य ने विधि पूर्वक
सत्कार दान दक्षिणादि इत्यादि दिया, बच्चे की जन्मपत्री
पूछी। ८-९-१०-११-१२

ऋषियोंने कहा

संस्कृत

शृणुष्व राजशार्दूल यथाते भाविनः सुतः
अस्मत्तो चक्र हस्तोऽयं दुत्पन्नो हैहयान्वये ॥१३॥
आज्ञया देवदेवस्य सर्व दुष्ट प्रशान्तये
यस्मिन् गच्छति दैत्येन्द्र स्त्रीणां गर्भान्तकृद्भयम् ॥
प्रच्यवेत स चक्रास्त्रो हरिरुत्पादितस्त्रिधा स्वयम्
कृतवीर्यस्य भार्यायां माहिष्मत्यां पुरोत्तमे ॥१५॥
रेवा तीरे समुत्पन्नो नाम्नाचार्जुन ईरितः
राजराजो महातेजा सहस्र किरणोपमः ॥१६॥

भाषा

हे राजन्! हमसे अपने पुत्र का भविष्य सुनिये, यह बालक सुदर्शन चक्र का अवतार है, जो कि श्रीविष्णु भगवान की आज्ञा से आप के वंश में पैदा हुआ है, उन महान दैत्यों के शमन के लिये जिनके चलने से स्त्रियों को गर्भपात हो जाया करता था, वही चक्र रूपी प्रभु आप की महारानी जी के गर्भ से सूर्य के समान तेजस्वी अर्जुन नाम वाले पैदा हुए हैं।

संस्कृत

सहस्र बाहु भजेर्मे च स विष्णोरंश संभवः
इतिहास श्रुतौ सहावीर्यः सर्व दुष्टान्तक प्रभुः ॥१७॥
सदा सर्व दुष्टघ्नः पुरस्थो बहुरूपवान्
सप्तद्वीपवतीं भूमिं विजित्य स्व बाहुभिः ॥१८॥
दुष्टान् सर्व दुष्टान् यो रक्षन् साधूंश्च स्वयम्
दत्तात्रेयात् वरं प्राप्य निधा सत प्रियो ब्राह्मण प्रियः ॥१९॥
पंचाशीति सहस्राणि राजा राज्यं करिष्यति
इति मंत्रानुसारेण जामदग्न्यो हरिः स्वयम् ॥२०॥
अवतारं गृहीत्वा यो कृत्वा युद्धं सुदारुणम्
संतोषं जनयामास स्वायुधाय यथाबलम् ॥२१॥

२८ २५

भाषा

यह पुत्र सहस्र बाहु अजेय विष्णु भगवान के अंश से हुआ है। शीघ्रगामी, महावीर्य, सब दुष्टों को नाश करने वाला शूरवीर तथा सर्व दुष्टों का दमन करने वाला सप्तद्वीप पृथ्वी का पति अपने पराक्रम से जीतकर होगा। सब प्रकार के दुष्ट दमन भगवान स्वयं सहायक रहेंगे। भगवान दत्त की आराधना से सिद्धि प्राप्त कर सज्जनों तथा ब्राह्मणों का प्रिय होगा॥ पचासी हजार वर्षों तक राज्य करेगा पूर्व मंत्रणा के अनुसार भगवान विष्णु जमदग्नि ऋषि पुत्र होंगे फिर स्वयं कार्तवीर्य बनकर इसकी युद्ध इच्छा को पूरा करेंगे॥ १८-१९-२०-२१

संस्कृत

अन्योन्यं निश्चयं कृत्वा क्षेत्र वास समीयतु
आगमोक्त विधानेन जगत पूज्यो भविष्यति ॥२२
एवं तेऽकथयः सर्वे संक्षेपाज्जोर कर्मकम्
निवेदयन्ता सत्कारं जग्मुर्भूपा तमस्तु ॥२३॥
राजानं च समामंत्र्य जग्मुस्ते यथा गतम्
सुवन्तं राजपुत्रं तं दृष्ट्वा चक्रांशु संभवम् ॥२४॥
ततो राजा ददौ दानं दीनान्धेभ्यो यथाहतः
सूत मागध बन्दीभ्यो याचकेभ्यो निरन्तरम् ॥२५

भाषा

परस्पर निश्चय करके माहिष्मती क्षेत्रवास के आगे है आगमोक्त विधान से जगत पूज्य होगा। इस प्रकार संक्षेप में नक्षत्र का जन्म कुण्डली बनाकर सत्कार पूर्वक किये राजाओं को सब कुछ कहने बाद अपने अपने आश्रमों को चले गये राजपुत्र की बड़ाई करते हुए पश्चात् महाराज कृतवीर्य ने दीनों को अन्धों को सूत मागध बन्दी गण याचकों को विशेष दान दक्षिणा दिये २२-२३-२४-२५

संस्कृत

रथ्यानाम युतं चैव राजानां च सहस्रकम्

२६

अश्वानां शत सहस्रं धेनूनामयुतानि षट् ॥२६॥
स्वर्णभूषणहाराणामन्न पानीय वासस्साम्
यथेच्छं दीयमानानां संख्या कर्तुं न शक्यते ॥२७॥
पुत्र जन्म महोत्सवेण दत्तानि दानान्यनेकशः ।
कृतवीर्यो नृपश्रेष्ठो तस्थौ शीघ्र मनुस्मरन् ॥२८॥
कुमारः स्वल्पकालेन ववृधे ऽसौ यथा शशी
संस्कारैः संस्कृतो वेदमभ्यसत् गुरुतो ऽनिशम् ॥२९॥

भाषा

महाराज कृतवीर्य ने पुत्र जन्मोत्सव के उपलक्ष में दश हजार रुपये, एक हजार हाथी, सौ हजार घोड़े, साठ हजार गौ, स्वर्ण के आभूषण हार कंकड़ आदि अन्न दान, पेयदान, तथा वस्त्र दान दिये, इतना अधिक दान दिये कि जिसका गिनती करना कठिन है। दान देने के बाद महाराज स्वयं बैठ कर शंकर भगवान की पूजा करने लगे। कुमार थोड़े काल में ही चन्द्रमा के समान बढ़ने लगा। संस्कारों से सुसंस्कृत बच्चा गुरु जी के पास दिनरात पढ़ाई (वेदों को वेदांगों को) करने लगा। २६-२७-२८-२९

संस्कृत

राजा सुमुदितो दृष्ट्वा पुत्रं धुरंधरम्
रूपौदार्य गुणोपेतं सहस्राक्षेन शोभितम् ॥३०॥
सर्व शास्त्रार्थ कुशलः चक्रांकित कलेवरम्
कुमारं देव गर्भाभं वर्द्धमानं दिने दिने ॥३१॥
सिंह व्याघ्र वराहैश्च महिषैश्च गजैस्तथा
वलान्धो वृक्षे वलवान् ब्राह्मणस्य समीपतः ॥३२॥
आरोहद्भयं श्चैव क्रीडद्भिर्परिधावति
विक्रमेणाजसा चैव बलेन च समन्वितः ॥३३॥
तं कुमारं नृपो दृष्ट्वा कर्म चास्याति मानुषम्
समयो यौवराज्याय चाह्वयीत पुरोहितम् ॥३४॥
अमात्यं कुल वृद्धाश्च तथा जनपदान्नरान्
सर्व काल महं मन्ये अवादनं भो नीतमाः ॥३५॥

इस प्रकार से योग्य (सुन्दर) पुत्र को देखकर सब प्रसन्न
होगई। रूपवान, गुणवान, सूर्य के समान तेजस्वी, सब शास्त्रों
के उद्भट विद्वान; हाथों में चक्र निशान की रेखा, देवपुत्र
के समान दिन दूना रात चौगुना बढ़ोतरी वाले, सिंह-व्याघ्र
जंगली शूकर, जंगली भैंसा आदि भयंकर पशुओं को मार
कर आश्रम (गुरुकुल के) लाते, उनसे खेलते और कभी उन
जानवरों की पीठ पर बैठकर सवारी करते, निडर तथा तेजस्वी
देखकर (आनन्दमग्न होकर) देव समान कर युवराज पद
देने के लिये पुरोहित जी से कहे, तथा वृद्ध जनों को बुला
कर वृद्ध राजा कृतवीर्य जी ने कहा कि, सज्जनो! मैं समझता
हूँ कि ३०-३१-३२-३३-३४-३५

संस्कृत

तनयो मे महाप्राज्ञ श्रुतो दृष्टो पराक्रमः
अनुरक्तः प्रजो नित्यं चक्रवर्तीव संमतः ॥३६
राज्यं दद्यामहं तस्मै मनो दिष्टमनुमन्यताम्
तन्मतेन ददौ राज्यं स्वस्ति वाचन पूर्वकम् ॥३७॥
अब्दौ संतोष्य भूदेवान् आन्यांश्च विनिवेद्य वै,
अर्जुनं स्वस्य धुर्यस्थं सुतं तस्मै नराधिपः ॥३८
आत्मानं च प्रव्रज्य सत्या कल्पस्य निर्गमति;
वनं निरस्त प्रातिष्ठ द्विषट्सा न्यात्मनो गतिः ॥३९॥

भाषा

महाराज ने कहा कि मेरा बेटा बुद्धिमान और पराक्रमी है
ऐसा देखने सुनने में आया है। प्रजाजनों से प्रेम है, मैं उसे
अब राज्यभार (राजगद्दी) देना चाहता हूँ। आप सब
लोग इसी कृति देने सब के मत के अनुसार राजा ने युवराज
अर्जुन को स्वस्ति वाचन पूर्वक राज्याभिषेक कर दिया
अपने को मन से प्रव्रज्या ग्रहण कर निरस्त होकर ईश्वर
आराधन करने लगे ॥ ३६-३७-३८-३९

श्री वायु पुराणे माहिष्मती माहात्म्ये चतुर्थोऽध्यायः समाप्तः ॥

श्री वायु पुराण के माहिष्मती माहात्म्य में चौथा अध्याय समाप्त ॥

२८

अथ पञ्चमोऽध्यायः

सूत उवाच : सूतजी ने कहा

संस्कृत

पितृतः तु भुवो राज्यं प्रतिपद्य ततोऽर्जुनः
पितृवत् पालयामास प्रजाः सर्वगुणाधिकः ॥१॥
यस्तु बाहुसहस्रेण सप्तद्वीपेश्वरोऽभवत्
जिगाय पृथिवीं भीमां रथेनादित्यवर्चसा ॥२॥
सहिवर्षायुतं तस्य तपः परमदुश्चरम्
दत्तात्रेयाराधयामास कार्तवीर्योऽग्निसंभवम् ॥३॥
तस्मै दत्तो वरान् दत्तो वह्निं कृपयान्वितः
पूर्वं बाहुसहस्रं तु युद्धे चैवाजितम् ॥४॥
अधर्मं चक्रयामास यस्यास्त्र्यं निगृणम्
संग्रामान् सुबहून् जित्वा हत्वा वीरान् सहस्रशः ॥५॥

भाषा

पूज्य पिताजी से प्राप्त राज्य को अर्जुन ने पितावत प्रजा का पालन किया। अपनी हजार भुजाओं से सात्तो महाद्वीपों के स्वामी होगये। संपूर्ण पृथिवी को सूर्य समान तेजस्वी रथपर सवार होकर विजयी हुए। दश हजार वर्षों तक घोर तप करके श्रीदत्तात्रेय भगवान को प्रसन्न कर अनेक वर प्राप्त किये। युद्ध में हजार भुजाओं का होना, शत्रु से विजयी होना अधर्म लिप्त पापियों का नाश करना हजारों हजार वीरों को जीत लिये। १-२-३-४-५

संस्कृत

संग्रामे वर्तमानस्य कथं चाप्यधिकात् भवेत्
तस्य बाहुसहस्रं तु युध्यतः किल मार्गवः ॥६॥
योगादौत्पेदुरे स्थेन प्रादुर्भवति मायया
जित्वेयं पृथिवीं सर्वां सप्तद्वीपां ससागराम् ॥७॥
स समुद्रां सनगरां सग्रामां तपसा जिता
तेन सप्तसु द्वीपेषु सप्त यज्ञा आहृताः ॥८॥

८८

भाषा

युद्ध में हमसे अधिक बलवान सेही, हमारा वध होने॥
हमारी हजार भुजायें युद्ध में ही होवें। योगेश्वर गुरुदेव
दत्तात्रेय जी की माया से ही ऐसा होने॥ संपूर्ण पृथ्वी
सातद्वीपवाली नगर-ग्राम-समुद्र आदि सब कुछ
पराक्रम से ही प्राप्त करूँ; सब द्वीपों में सात सौ
महा यज्ञ किये॥ ८८-८८

संस्कृत

कृतानि विधिना राज्ञा तथा वै द्वीप केषु च
सर्वे यज्ञा महाभागा बहुदक्षिणा॥ ९६॥
सर्वे काञ्चन यूपाश्च सर्वे काञ्चन वेदयः
सर्वे देवोपदेवैश्च विमानैरलंकृता॥ ९७॥
गन्धर्वैरप्सरोभिश्च नित्य सेवो प शोभिता
यस्य यज्ञे जगौ गाथा गन्धर्वो नारदस्तथा॥ ९८॥

भाषा

विधि विधान पूर्वक सब द्वीपों में राजा अर्जुन जी ने यज्ञ
किया; सभी यज्ञ बहुत दक्षिणा वाले हुए। यज्ञ मंडप में सोने
के खम्भे और स्वर्ण की बनी हुई वेदियाँ थीं॥ देवता, उपदेवता,
छोटे बड़े सभी देवगण अपने अपने विमानों में बैठकर यज्ञ की
शोभा बढ़ा रहे थे॥ गन्धर्व, अप्सरायें नित्य ही उपस्थित
होकर नाच गान करते थे; जिस यज्ञ का वर्णन गन्धर्व राज
तथा नारद जी ने किया है।

नारद उवाच :- नारद जी ने कहा

संस्कृत

ननूनं कार्तवीर्यस्य गतिं यास्यन्ति पार्थिवाः
यज्ञे दाने तपोभिश्च विक्रमेण श्रुतेन च॥ ९९॥
सप्तद्वीपासु द्वीपेषु खण्डेषु वर्षेषु शतशः
एकी द्वीपा ननु नरेन्द्र योगी हो दृश्यते भुवि॥ १००॥
अनन्यद्रव्यता चैव न शोको न च विभ्रमः
प्रभावेन महाराज्ञ अर्जुनस्य रक्षतः॥ १०१॥

३०

स सर्वरत्नानि समाहृत्य चक्रवर्ती बभूव ह
स एव यक्षपालोऽभूत् क्षेत्रपालस्स एव च ।१५।
स एव नृष्टयापर्यन्तो योगिनाद्रुजुनोऽभवत्
जगत् संपालयामास स्थावरं जंगमं सदा ।।१६।।
सर्वे बाहुसहस्रेण ज्याघातं कठिनं तथा
भाति रश्मिसहस्रेण शारदीव दिवाकरः ।।१७

भाषा

निश्चय ही कार्तवीर्य के समान नागरी दसों राजा कोई नहीं कर सकते हैं यज्ञ, दान, पराक्रम और पांडित्य में। सप्तद्वीपों में ढाल-तलवार-रथ आदि के साथ घूमते थे उनके राज्य में चोरी नहीं होती थी न शोक किसी प्राणी होता था न ही विभ्रम होता था। अपने प्रभाव से प्रजा की रक्षा करते थे खजाने में सर्व प्रकार के अलभ्य रत्न थे चक्रवर्ती सम्राट थे स्वयं यज्ञपाल क्षेत्रपाल थे योगी होने के कारण बाहुल्य नमस्कार नहीं करते थे स्थावर-जंगम की रक्षा करते थे हजार भुजाओं से धनुष टंकार की घात से शरत्काल में सूर्य के समान प्रकाशमान थे १२-१३-१४-१५-१६-१७ ।।

संस्कृत

स हि नागान् मनुष्येषु मार्हिष्मत्यां महाद्युतिः
कर्कोटकसुतानिजित्वा तस्यां पुर्यां न्यवेशयत् ।।१८।।
सर्वे नेत्रा समुद्रस्य प्रावृट्काले च तेक्षणः
क्रीडन्येन भुजाद्रुभ्यां प्रतिस्रोतः स्मरन्नदः ।।१९।।
लुठिता ताडिता तेन केन स्त्रीसहस्रमानिनी
चलद्भिः सहस्रेण शंकिता ऽभ्येति नर्मदा ।।२०।।
तस्य बाहुसहस्रेण क्षुभ्यमाणे महोदधौ
भयाभिभूतैर्नागेन्द्रैः पातालस्थैः महासुरैः ।।२१।।
सहस्रोत्पतितान्भीतान्भीमं दृष्ट्वा नृपोत्तमम्
नत निश्चलमूर्धानो बभूवुस्ते महोरगाः ।।२२।।

भाषा ३१

महापराक्रमी सहस्रबाहु ने कर्कोटक नाग के पुत्र
दिक्कों के पकड़कर माहिष्मती में लादिया। कमल
सदृश नेत्र वाले महाराज कार्तवीर्यार्जुन अत्यन्त वेग से
समुद्र में खेलते हुए समुद्र लहरों को उल्टी दिशा में
करदेते थे उलटती हुई माला के समान दिखती थी
हजारों भुजाओं से चोटी हुई लहरों से नर्मदा नदी शंकित
होती थी समुद्र क्षुब्ध हो जाता था पाताल में भय से
डरे हुए सर्प गण निश्चेष्ट हो जाते थे। १२-१९-२-२१२२

संस्कृत

साघातैः कदली खण्डं कम्पते रस्य वायुना
स्वनै र्वध्य धनुर्ज्याभि र्मारुतं पंचभिः शरैः ॥२३॥
लंकेशो मोहयित्वा तु स सैन्यः रावणं बलात्
निर्जित्यैव समानीय माहिष्मत्यां नबन्धह ॥२४॥
श्रुत्वा तु नहु षौलस्त्यं रावणं रक्षसेश्वरम्
आगत्य पुत्र स्वस्तुराजानं दद्दौ स्वयम् ॥२५॥
मुमोच रक्षः पौलस्त्यं पुलस्त्येनानुयाचितः
यस्य बाहु सहस्रस्य बभूव ज्या तलस्वनः ॥२६॥
युगान्ते वाम्बुदस्येव स्फुरतो ह्यशनेरिव
तृषितेन कथाचित स भिक्षित चित्रभानुना ॥२७॥

भाषा

साथ मारने से वायु उस के भय से केले के पत्ते के समान
कांपता है। उसके धनुष की टंकार पांचों बाण वायु उत्पन्न
होते हैं। लंकेश रावण विजय की अभिप्राय से सहित
माहिष्मती पर हमला कर दिया लेकिन बल पूर्वक रावण
को जीत कर माहिष्मती में बंद कर लिया इस बात को
जानकर स्वयं पुलस्त्य जी महाराज आकर रावण को राजा
से छुड़ाये। सहस्र भुजाओं द्वारा धनुष पुष्ट कर खींचने की
आवाज युगान्त में बज्र के समान कड़ कड़ा ऐसा प्रतीत हुआ
वह रावण प्यासा है वह आदिदेव हैं। २३-२४-२५-२६
२७।।

३२

संस्कृत

सप्तद्वीपान् निधानसो।
पुराणि ग्राम घोषांश्च निषयांश्चैव सर्वदा ॥२८
जज्वाल तस्य सर्वाणि चित्रभानुर्दिव्य क्षयो ॥२९
तस्य पुरुषेन्द्रस्य प्रभावेन महात्मना ॥२९
ददाह कार्तवीर्यस्य शैलाश्चैव वनानि च
सैन्यमाश्रम रम्यं वरुणस्यात्मजस्य वै ॥३०॥
ददाह वलवद्भीत श्चित्रः सहैहयः
यं ते भेवरुणः पुत्र पुरा प्राप्तो-वाक्तमम् ॥३१॥

भाषा

महाराज सहस्रबाहु ने अग्निदेव को सप्तद्वीप पृथ्वीमंडल के पुरवा-ग्राम-नगर सहित भिक्षा रूप में दे दिया अग्निदेव ने सब को जला दिया उस पुरुषेन्द्र वीर महाराज के प्रभाव से पहाड़ जंगल इत्यादि सब कुछ जल गया। वशिष्ठ ऋषि जी का आश्रम भी जलकर राख हो गया वरुण पुत्र के नाम से जाने जाते हैं ॥ २८-२९-३०-३१

संस्कृत

वशिष्ठ नाम सपुनिरख्यात श्चायवइत्युत
वशिष्ठेन श्रुतं कोपाद्धूमवान जुचं निभुः ॥३२॥
पस्मान्न नाजि त निहवन ते भाग हैहयः
तस्मात्तदुष्करं कर्म नूनमन्यं करिष्यति ॥३३॥
रामनाम महाबाहुर्जामदग्न्यप्रतापवान्
हिल्ला नाह सहस्रं ते प्रमथ्य सहलानली. ॥३४॥
तपस्वी ब्राह्मणः श्रेष्ठो बाधिष्यति स भार्गवः
आनष्ट दुष्यतो तस्य नष्टस्यागमनं पुनः ॥३५॥
प्रजानेमनरेन्द्रस्य प्रजाधर्मेण रक्षतः
बाहुश्चैव हि कुर्याणा स्वयमेव कृतः पुरा ॥३६॥
स्वं निर्जित्य पृथिवीं सप्तद्वीपवतीं पुरा
आजगामो महाराज पुरीं माहिष्मतीं शिनाम् ॥३६॥

३३

भाषा

जमदग्नि नामक मुनि आपव के नाम से विख्यात हैं
जब उन्होंने (जमदग्नि जी ने) सुना तो क्रोध से महाराज
अर्जुन को शाप दे दिया तूने इनके स्थान को भी जला
दिया स्मरण नाश किया (आप नाम वाले) श्री जमदग्नि
के लड़के तुम्हारी हजारों भुजाओं को काट कर तुम्हारा
वध करेंगे। अर्जुन के राज्य में चोरी
नहीं होती थी अपने प्रभाव से प्रजा जनों को धर्मपूर्वक
पालन करते थे वह कल्याण कारी वर भगवान विष्णु
से पहले ही प्राप्त किया था इस प्रकार सप्तद्वीपवाली
पृथ्वी को जीत कर अपनी राजधानी माहिष्मती पुरी
में आये ॥३२-३३-३४-३५-३६-३७

संस्कृत

प्राकारो नगरे: परिखैस्तोरणैश्च शोभिते।
स्वर्ण रौप्यामयैश्चैव: संकुलम सानलो गृहे: ॥३८॥
नील स्फटिक वैडूर्य मुक्ता मरकतोरणे:
कान्त हर्म्य स्थलीं दीप्तां प्रियां भोगवतीं मिव ॥३९॥
सिंह चामर रथ्याभि राकीर्ण पत्तनोपमे
चैलध्वज पताका भिर्युक्तां विद्युत्वतीमिव ॥४०॥
पुष्पाकुलाहयोपवने दिव्य द्रुम लता कुले
नदद्विहग संकुल कोलम्ब हंस जलाशये ॥४१॥

भाषा

चहार दीवारी, गोचा, खाई, तोरण, माला से सुशोभित
स्वर्ण चाँदी पीतल इत्यादि धातुओं से भरे पूरे घर, नीलम
मणि स्फटिक वैडूर्य मणि मोती मरकत से युक्त बन्दनवार
बड़े बड़े महलों से भरपूर भोगवती नगरी के समान सभा
गृह चौल ध्वजा पताका से सुशोभित पुरी की तरह बहुतों
से भरपूर उपवन दिव्य लता वाले से युक्त नदी के पक्षि
यों से कोलाहल युक्त जलाशय थे ॥३८-३९-४०-४१

× × ×

३४

संस्कृत

हिम निर्झर विप्रुष्यत कुसुमाकर वायुना।
चलत प्रवाल विटप नलिन्यतट संवृति ॥४२॥
तत्र तत्रोप संकृष्टै महाराज पथ गृहे
संवृत्तै: कदली स्तम्भै: पूगाग्रयै रुचा तद्विधै: ॥४३
चूत पल्लव वास सिक्त मुक्ता दाम विलंबिभि:
उप स्कृत प्रति द्वार जलकुम्भै: सदीपकै: ॥४४॥
प्राकारै: गोपुरागारै: शात कुम्भ परिच्छदै
सर्वतोऽलंकृतं श्री मद्विमान हरिवाद्युभि: ॥४५

भाषा

बरफ के समान फलों की गन्ध से सुगन्धित वायु प्रवाहित होती। प्रवाल वृक्षों से छादित मार्ग जल से सींचे हुए मार्ग घर घर के सामने होते थे। केला सुपारी वृक्ष के खंभों से तथा आम वृक्ष के पल्लवों से सिंचित जलकण मोती के समान चमकते थे। प्रत्येक घर के द्वार पर जल पूरित कलश दीपक जलते हुए शोभित होते थे बड़े बड़े फाटकों पर जल के घड़े शोभित होते तथा स्वर्ण प्रभा से सुशोभित विमान दिखाई देते। वाल्मीकि माहिष्मती नगरी था ॥४२-४३-४४-४५

संस्कृत

कृष्ण चन्दन रश्मि दिग्धा चन्दन चर्चितम्
लाजा धूपै: पुष्पफलै स्तंदुलै र्बलि भिर्युतम् ॥४६॥
कार वीर्य महाराज तत्र तत्र पुरस्त्रिय:
सिद्धाद्य स्तद्दध्यन्नु दूर्वा पुष्प फलानि च ॥४७॥
उपजह्रु: प्रकुंजानि वाटिकाद्या: शिवस्तती
मृष्टन तद्वल्लु शीतानि प्राणि शाद भवन स्वनम् ॥
महामणि वातमये सतस्मिन भवनोत्तमे
लालितो तितारङ्गै र्न्यवसद्दिव विनिर्देवत ॥४८

३५

भाषा

आठों दिशाओं तथा चारों दिशाओं के जाने वाले मार्गों पर चन्दन मिश्रित जल से छिड़काव होता, लावा अक्षत फल फूल आदि दी जाती थी। महाराज जाते थे या अपनी रानियों के साथ अपने निकलते तो अक्षत दही पानी दूर्वा फल फूल से स्वागत शहर की सती स्त्रियाँ आशीर्वाद मंगल गान के साथ देती जिसे देखते सुनते महाराज अपने महल में प्रवेश करते दीपकों के द्वारा अत्यन्त समय अत्यन्त लज्जित होते निवास करते

४५-४६-४८-४७

संस्कृत

पय: फेन निभा शय्या दान्ता हर्म्य परिच्छदा
आसनानि महार्हाणि यत्र रौक्मकपस्कराः ५०
यत्र स्फटिक कुड्येषु महा मरकतेषु च
मणि प्रदीपा भ्राजन्ति ललनारत्न संयुता ॥५१॥
उद्यानानि च रम्याणि विचित्रैः पादपैः
कूजद्विहंग मिथुनै गायन्मत्त मधुव्रतैः ॥५२॥
नाप्यो नैर्मल्य सोपान पद्मो फुल्लत्व कुमुद्वती
हंस कारण्डव कुले ॥५३॥
अन्तःपुरगतो राजा सानेन्दु सम प्रभाः
एवं यदा यदा याति, उत्सवोऽभूत्तदा तदा ॥५४॥
माहिष्मती पते राज्यशोभां यः शृणुयान्नरः
धनं धान्यं यशो मानं दीर्घायुत्वमवाप्नुयात् ॥५५
इति श्री माहिष्मती माहात्म्ये पञ्चमोऽध्यायः ॥५

भाषा

दूध के फेन के समान स्वच्छ मुलायम शय्या जिसके पायदान सोने के मणि जड़ित थे बेशकीमती झालर में मोती लगे हुए थे। स्फटिक मणि के कुण्डों में मरकत मणि लगे हुए दीपक जलते थे उनके

३५

प्रकाश स्त्रीगणों के समूह रहते थे। रमणीक
विविध पुष्प युक्त फुलवारियों में कल्पवृक्ष
लगे हुए थे जहाँ पर अनेक प्रकार के पक्षियों के
झुंड किलोल करते थे। चोरनों में वैडूर्य मणि रचित
सीढ़ियाँ थीं जहां पर हंसादि अनेक पक्षिगण
किलोल करते थे अन्तःपुर में राजा इन्द्र के समान
रहते थे नये नये उत्सव हुआ करते थे। इस प्रकार
माहिष्मती नगरी धनधान्य विविध प्रकार के रत्नों
से संपूर्ण थी ॥५०-५१, ५२-५३, ५४
इति श्री माहिष्मती माहात्म्य का पांचवा अध्याय
पूरा हुआ ॥ ५ ॥

ॐ

ॐ

शान्ति:

शान्ति:

३७

अथ षष्ठोऽध्यायः

श्री शौनक उवाच

सूत सूतमहाप्राज्ञ वद लङ्कापतेः कथाम्
रावणोऽति बलो रक्षः कथं बन्धत्वमागतः ॥१॥
कार्तवीर्येण भूपेन कथं प्राप्तोऽस्य आगमः
पुलस्त्यो मोचयामास कथं तं वद सांप्रतम् ॥२॥

सूत उवाच :—

शृणु शौनक वक्ष्यामि पुराद्याख्यायिकीं
दिग्विजये रावणकृते शुश्राव ससुहृद्गणः ॥३॥
बहुधा जयसंयुक्तमगस्त्येन निवेदितम्
दिवि भूयो रसायां च दिक्षु विदिक्षु च ॥४॥
ततो रामो महातेजा विस्मयोत्फुल्लनेत्रः
उवाच प्रणतो वाक्यं अगस्त्यमृषिसत्तमम् ॥५॥

भाषा

श्री शौनक जी ने कहा

हे महाबुद्धिमान सूत जी महाराज लङ्कापति राक्षस राज रावण की कथा को कहिये। किस प्रकार राक्षस पति रावण श्री कार्तवीर्य राजा के द्वारा बन्धन में आया ३॥ जिस तरह कि महर्षि पुलस्त्य जी ने बन्धन से मुक्त किया। उस वृत्तान्त को कृपा करके कहिये ।२

सूत जी ने कहा :—

हे शौनक जी ध्यान से सुनिये मैं बताता हूँ प्राचीन काल में महाराज दशरथ जी के पुत्र भगवान रामचन्द्र जी ने लंकापति रावण को सकुटुम्ब युद्ध में जीत की कथा अगस्त्य जी ने कही दिशाओं में स्वर्ग आकाश दिशा विदिशाओं में कथा फैल गई। भगवान राम ने पुनः अगस्त्य जी प्रसन्नतापूर्वक पुनः कहने को कहा १-२-३-४-५

संस्कृत

भगवन् राक्षसः क्रूरो यदा प्रभृति मे दिनेशि
पर्यटन् किं तदा लोका शून्या आसन् द्विजोत्तम ॥६॥

२८

राजा वा राजपुत्रो वा किं तदा मात्र कश्चन
धर्षणं यज्जनः प्राप्तो प्राणैः राक्षसेश्वरः ॥१६॥
उत्साहो हीनसत्वा स्ते बभूवुः पृथिवीक्षितः
बहिर्भूता पराक्रमेण बहवो निर्जिता नृपाः ॥१७॥

भाषा

वह दुष्ट राक्षस जबसे पृथिवी पर घूमता रहा संसार
मनुष्यों से शून्य होगया। राजा या राजपुत्र कोई भी
उसके सामने युद्ध में नहीं बचा संपूर्ण पृथिवी
पृथिवीपति राजाओं से शून्य होगई उसके शस्त्रों की
मार से कोई भी राजा नहीं बचा ॥ ६-७

संस्कृत

सूत उवाच :— सूतजीने कहा
राघवस्य वचः श्रुत्वा अगस्त्यो भगवानृषिः
उवाच रामं प्रहसन् पिता मे इव राघवः ॥१८॥
इत्येवं वध्यमानस्तु पार्थिवान् पार्थिवर्षभ
चचार रावणो नाम पृथिव्यां पृथिवीपतिः ॥१९॥
ततो माहिष्मती नाम पुरी स्वर्गपुरी प्रभा
संप्राप्तो यत्र सानिध्यं तस्यासीद्दुरितस्य ॥२०॥
अर्जुनो नाम यत्राभिशरकुण्डे रथं स्तदा
समेन दिवसे सेव्य हैहयाधिपतिर्बली ॥२१॥
अर्जुनो नर्मदां रन्तुं गतस्तोयमिव महेश्वरः
समेन दिवसे सोऽथ रावणस्तत्र आगतः ॥१३

भाषा

राघवेन्द्र भगवान राम की वाणी सुनकर हँसते हुए
महर्षि अगस्त्यजी पिता ब्रह्मा जी समान कहे हे राजन
ऐसा ही है इस प्रकार विजयी बनते हुए राजन संसार
में घूम रहा था उसी समय माहिष्मती नामक पुरी में
जो कि अमरावती के समान वैभव शाली थी चक्रावतार
अर्जुन नाम का है शरकुण्ड में नर्मदा के समान बड़े सीहित
रावण माहिष्मती विजयेच्छा से आया उस समय

३६

महाराज अर्जुन अपनी स्त्रियों के साथ नर्मदा स्नान
करने गये हुए थे नहीं पर रावण आया
६-२०-९२-१२-१३

संस्कृत

रावणो राक्षसेन्द्रस्तु तस्यामात्यानपृच्छत
कार्तवीर्यो नृपतिः शीघ्रं सम्यगाख्यातुमर्हथ ॥१४॥
रावणोऽहं समुप्राप्तो युद्धेप्सु नृवरेण हि
मदागमनमव्यग्रे युष्माभिस्तन निवेद्यताम् ॥१५॥
इत्येवं रावणेनोक्तास्ते मात्या सुविपश्चितः
आब्रुवन् राक्षसपतिं मृषा निर्ध्यं महीपते ॥१६
श्रुत्वा विश्रवसः पुत्रं पौराणामर्जुनं गतम्
आपस्तृत्य गतो विन्ध्यं हिमवत्सानुमंगिरिम् ॥१७

भाषा

राक्षसपति रावण महाराज अर्जुन के अमात्यों से पूछा
कि महाराज अर्जुन कहाँ पर हैं? उन्हें जाकर शीघ्र कहो कि
मैं राक्षस राज रावण युद्ध करने की इच्छा से आया हूँ
हमारे आने का कारण आप को महाराज से कहना चाहिये
ऐसा रावण के कहने पर बुद्धिमान मंत्री ने राजा से कहा
महर्षि विश्रवस का नेता रावण हिमवान पर्वत के समान
विन्ध्य पर्वत को लांघ कर आया है ..१४-१५-१६-१७

संस्कृत

सालमभ्रमिव विष्टं मुदभ्रान्त मिव मेदिनीम
अपश्यद्रावणो विन्ध्यमालिखन्त मिवाक्षरम् ॥१८॥
सहस्र शिखरोपेतं सिंहाध्युषितकन्दरम्
प्रपात पतितैः शीतैः साट्टहास मिवाम्बुभिः ॥१९॥
देव दानव गन्धर्वैः साप्सरोभिः सकिन्नरैः
स स्त्रीभिः श्रीमद्भिश्च स्वर्गभूत महोच्छ्रयम् ॥२०॥
नदीभिः स्यन्दमानाभिः रंगति प्रतिमण्डलम्
फणिभिश्चल जिह्वाभिर्वमन्त मिव निष्ठितम् ॥२१

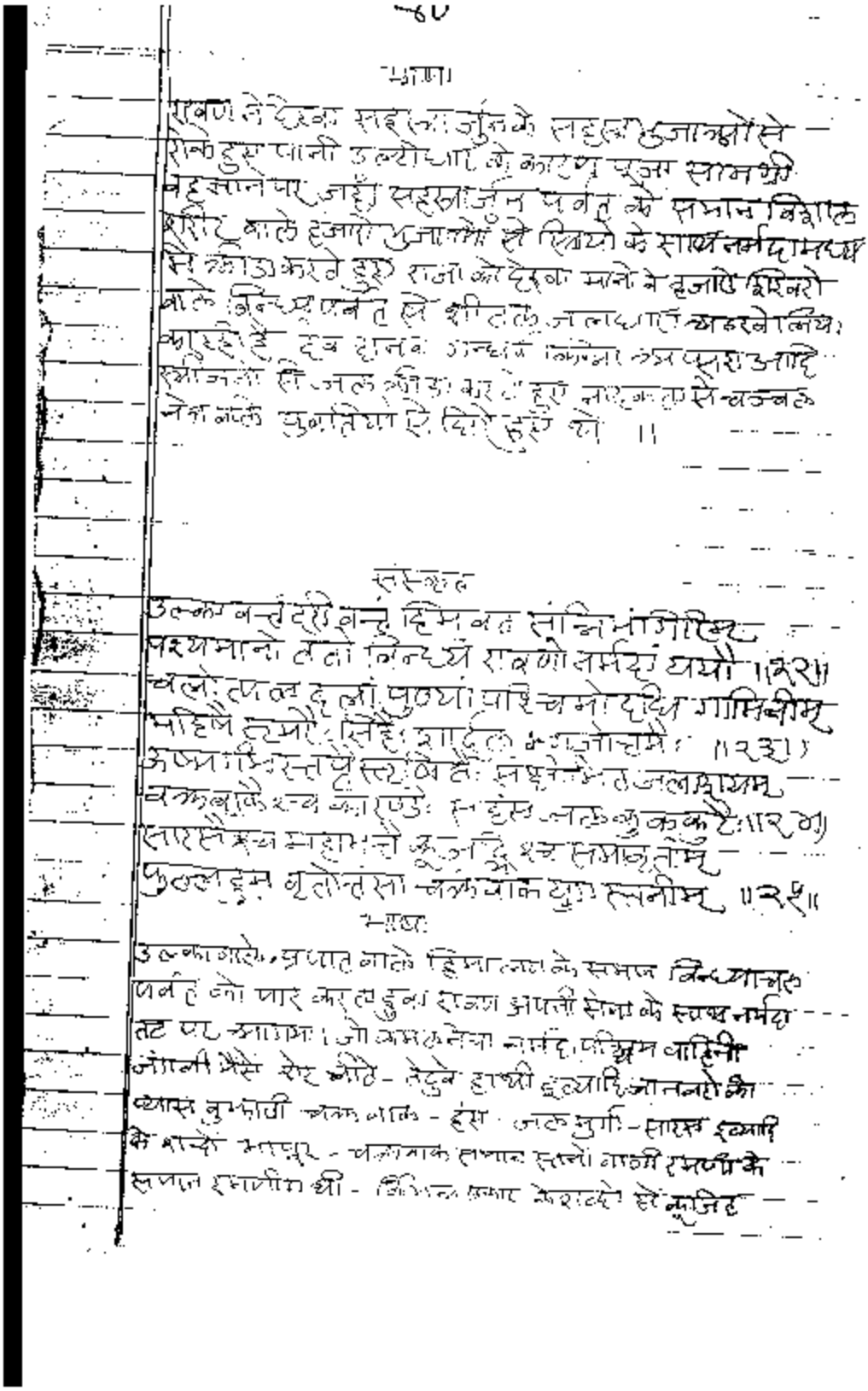

४१

हो रही थी।

संस्कृत

विस्तीर्ण पुलिन श्रोणी हंसावलि स मेखलाम्
पुष्प रेणु तनु रक्तांशु जल फेन मलां शुकाम् ॥२६॥
जलावगाह संस्पर्श शीतलोत्पल शुभेक्षणाम्
पुष्पकादव सन्यस्य नर्मदां सरितां वराम् ॥२७॥
दृष्ट्वा स्त्रिय मनोहारी भ्रातरं प्राह दशाननः
स तस्या पुलिने रम्ये नाना मुनि निषेविते ॥२८॥
उपोपविष्ट सचिवैः सार्द्धं राक्षस पुंगवः
आरभ्याय नर्मदां सोऽथ गङ्गेयमिति रावणः ॥२९॥
नर्मदा दर्शनं हृष्ट मनाः सर्वानि स दशाननः
उवाच सचिवांस्तत्र मालवो शुक सारणौ ॥३०॥

भाषा

लम्बे चौड़े पुलिन वाले चूतड़ समान, हंसों की पंक्ति करधनी के समान, पुष्पों के पराग से रंजित केसर वाली साड़ी के समान, जल में तैरते हुए कमल नेत्र के समान, नदियों में श्रेष्ठ नर्मदा के किनारे पुष्पक विमान से उतरकर, श्रेष्ठ नारी के के समान नर्मदा जी को देखना, जहां पर मुनियों महात्माओं को तप पूजा आदि करते देख राक्षसपति रावण ने नर्मदा जी को दूसरी गंगा समझ कर बहुत प्रसन्न हुआ, शुक सारण को बुलाकर कहा ॥ २५-२६-२७-२८-३०

संस्कृत

एष रश्मि सहस्रेण भाति कृत्वेव निर्मलम्
तीक्ष्ण तापकर सूर्यो नभ सो मध्य मास्थितः ॥३१॥
प्रभासीनं निरीक्ष्यैव चन्द्रो याति दिनाकरः
नर्मदा जल शीतेन सुखोऽयं क्रियतामिति ॥३२॥

× × ×

४२

अपनी सहस्र किरणों से सूर्य से पूर्ण जगत को प्रकाश
करता हुआ तेज धूप से मध्याह्न काल में आगया है।
इसे बैठा हुआ जानकर सूर्य चन्द्रमा के समान शीतल होगया
है; नर्मदा नदी का जल शीतल है। श्रम को दूर करने
वाला है ॥ ३१-३२

संस्कृत

मद्यपादनलोपेष वारमसौ सुसमाहिता
दृश्यं चापि सरिच्छ्रेष्ठा नर्मदा भूमि वाहिनी ॥ ३३
नक्र मीन जिह्वोर्मि सभवे वांगना स्थिता
तद् भगन्त: क्षमा वाहै नृपै रिन्द्र सपै मुदिव ॥ ३४ ॥
चन्दनस्य रसे सैव शोधिहेय सम्पुस्थिता
ते पूत मनगाह्यश्च वर्मदां शर्मदां शुभाम् ॥ ३५ ॥
सार्व भौम सुरजा मान्ता गङ्गामिन महागजा;
अस्यां स्नात्वा महानद्यां वाजपेयानो विप्र मोक्षय. ॥ ३६ ॥
अहमध्यया पुष्पैर्ने शारदिन्दु सम प्रभे
पुष्पोपहारं दानैश्च लरि ष्यामि कवदिन्द ॥ ३७

भाषा

मेरे भय से हवा भी धीरे बह रही है। यह श्रेष्ठ नदी नर्मदा
शान्ति देने वाली है; मक्र, घड़ियाल से युक्त स्त्री के समान
स्थित है; आप लोग क्षमा रूपी शस्त्र से युक्त चन्दन रस
से मिले हुए, लाल रंग के रुधिर के समान भाव रखने वाली
शर्म (कल्याण) दायी नर्मदा में उतर कर गंगा जी में
बड़े बड़े हाथियों के समान स्नान करने में चित्त लगाये हैं
अभी नर्मदा जी में उतरकर स्नान के बाद पुष्पोपहार से
भगवान शिव जी का पूजन करूँ। ३३-३४-३५-३६-३७

संस्कृत

शिवेरैव मुक्ता एतु ग्रहस्त सुक सारजो
समुद्रोद्भव धूमाक्ष नर्मदा मुप गाहिते ॥ ३८
राक्षसेन्द्र गजेन्द्रस्तु दोषिता नर्मदा जले
वामनाजन पद्माक्षै गंगेव सु महानदी ॥ ३९ ॥

४३

ततस्ते राक्षसाः स्नात्वा नर्मदायां महाबलाः
उत्तीर्य पुष्पाण्यादाय बलयश्च राजयस्तथा ॥४२०॥
नर्मदा पुलिने रम्ये शुभ्रे सदृशप्रभे
राक्षसैस्तु मुहूर्तेन कृतं पुष्पमयं गिरिः ॥४२१॥
पुष्पैः ध्वजपताकाभिश्चैव रावणो राक्षसेश्वरः
अवतीर्य नदीं रेवां तुंगामिव महागजः ॥४२२॥

भाषा

रावण के इस प्रकार कहनेपर प्रहस्त- शुकसारण- महोदर
और धूम्राक्ष नर्मदा मे नहाने के लिये इसप्रकार उतरे जैसे
काले रंग वाला महागज गंगाके समान नर्मदा नदी मे उतरे हों।
वे राक्षस लोग स्नान करके पुष्प हारादि रावणके लिये लाये
चलते हुये सबों ने एक घड़ी में ही फूल लोंका ढेर पहाड़
बनादिया। राजसे राज रावण बहुत बड़े गजराज के समान
नर्मदा जलमे नहाने के लिये उतरा
३८-३९-४०-४१-४२

संस्कृत

ततः स्नात्वा चानीयनत् जपा जाप्यमनुत्तमम्
नर्मदा सलिलात्तस्मादुत्तीर्य स रावणः ॥४३॥
ततः क्लिन्नाम्बरं त्यक्त्वा शुक्लवस्त्रं समावृतः
रावणं प्राञ्जलिं यान्तमन्वयुः सर्वराक्षसाः ॥४४॥
ततः कर्मवशापन्नो मूर्तिमन्तमिवाचलम्
यत्र यत्र स याति स्म रावणो राक्षसेश्वरः ॥४५॥
जानानः सर्वलिङ्गं तत्तत्तत्र स पूजयन्
वालुकावेदिमध्ये तु तल्लिङ्गं स्थापयद्रावणः ॥४६॥
ततः सतामातिहरं परं वरं
वरप्रदं चन्द्रमयूखभूषणम्
समर्चयित्वा स निशाचरोऽसौ
परस्परं हस्तगतं प्रणम्य चाशु तम् ॥४७

॥इति श्रीमाहेष्मती माहात्म्ये अष्टादशोऽध्यायः ॥१८॥

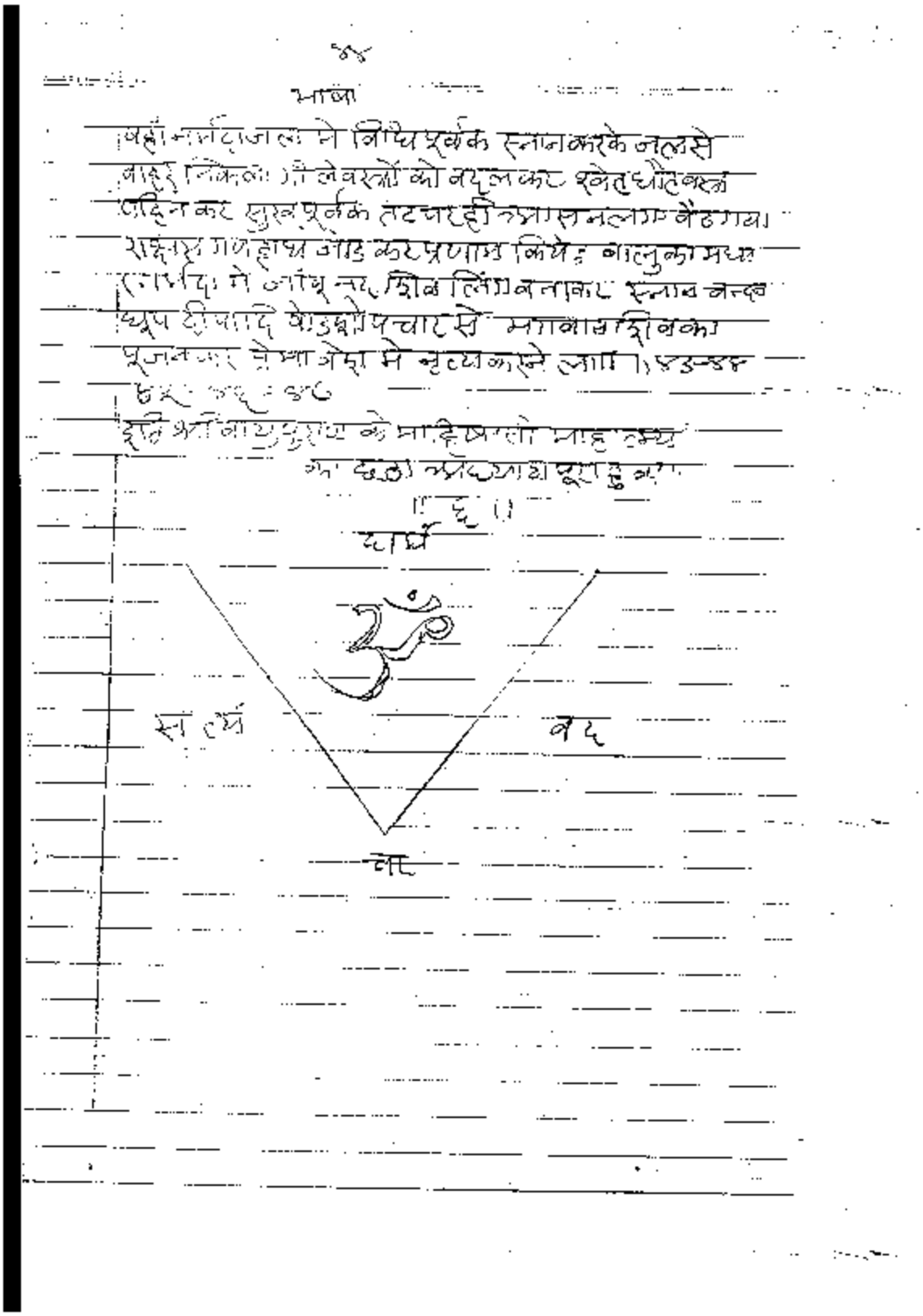

४५

अथ सप्तमोऽध्यायः

सूत उवाच :— सूत जी ने कहा

नृत्यन्तं रावणं श्रुत्वा कौतुकं द्रष्टुमागताः ॥१॥
देवा स वासवाः स्वर्गादागता खे समंगताः ॥१॥
सिद्ध किन्नर गन्धर्वाः विद्याधर महोरगाः
नद्यो नदा सती श्चैव मिलिता भूतिभाजिनः ॥२५
तथा मुनि गणाः सर्वे तपोनिष्ठा समागताः
दिव्यैर्विमानवलिभिर्व्याप्तं माकाशमण्डलम् ॥३॥
घनान्तरं सन्न सायं कनि ल्लीनाभयानह
रेवा तीरे हरस्याग्रे नृत्यन्तं राक्षसाधिपम् ॥४॥
ददृशुश्चकिता नृत्य दृष्टिं पुण्य कारकम्
देवो रसनादिकं यत्र गंतव्यं तत्र वै ध्रुवम् ॥५॥

भाषा

नृत्य करते हुए रावण को देखने के लिये स्वर्ग से इन्द्र सहित देवगण आये सिद्ध लोग किन्नरगण गन्धर्वगण सर्पगण नदियां नद सतीर्थ महर्षिगण तपस्वी लोग सभी लोग अपने अपने दिव्य विमानों पर चढ़कर आये आकाश मण्डल इन लोगों से खचाखच भर गया रेवा के किनारे पर इकट्ठे हो सामने राक्षस राज को नृत्य करते देखकर पुण्य दायक इस देखने से अवश्य जाना चाहिये

१-२-३-४-५

संस्कृत

महतां मिलनं यत्र तत्र गच्छेदिति श्रुतिः
निनाप्यामंत्रणं धर्मः श्रोतव्य इत्युदीरितः ॥६॥
यद्वा देव प्रतिष्ठायां पुराणे हरि कीर्तनम्
द्रष्टव्यो धर्मेति च पुराप्रोक्त मनीषिभिः ॥७॥
धर्म श्रुतोऽथ दृष्टो वा [illegible] तः कारितोऽपि वा
तथानुमोदितो वापि पु[illegible] सप्तमं कुलम् ॥८॥
एवं [illegible] निस्मय मागताः
[illegible] ददृशुः सर्वे ब्राह्मणा [illegible] ॥९॥

भाषा

जहां पर बड़ो बड़ो का संमेल हो वहां अवश्य
बिना बुलाये जाना चाहिये ऐसा वेदों में कहा हुआ है
जहां यज्ञ हो देव प्रतिष्ठा होवे पुराणों का पाठ हो
हरिकीर्तन हो धर्म व्याख्या प्रवचन इत्यादि हो
विद्वानों की सभा हो ऐसे स्थानों पर जाने से सात
पीढ़ी के पितरगण तर जाते हैं। इस प्रकार रावण का
नृत्योत्सव देखने के लिये सभी लोग वहां आगये

६-६-२-६

संस्कृत

यूपान्बिल्वामाकल्पाद्यास्तीरे सौम्ये सुशोभिते
वेशश्च निर्मितास्तत्र मुनयः सिद्धतापसैः ॥१२०॥
अरणयो वेदशास्त्राद्य कारणं पर्यपृच्छत
विधाद्विष्ण पदीं पुण्यां जाह्नवीं सुरसोनिताम् ॥१२१॥
विहाय यज्ञं निष्पन्तिमिह कर्तुमसौ गरः
अरणयः कारणं किं तत् विचारं किमतामिह ॥१२२॥
ज्ञानिनोऽपि महाभागा न दद्युः किंचिदुत्तरम्
नदीतटाद्वयामासु गंगाद्या प्रश्न कारणात् ॥१२३॥
पप्रच्छुः पाप नाशाय सामर्थ्यं तीर्थजं किमत
ऊचुस्ते क्रमशः सर्वे कारणाण्यासि कादिकम् ॥१२४॥

भाषा

नर्मदा नदी के किनारे रेत में उत्तम मण्डप बनाकर
सुन्दर पुष्प मण्डपादि सजा कर नृत्य रावण का देखकर
देवगण आश्चर्य में पड़ गये मुनिगण सिद्ध गण तपस्वी
गण ऋषि गण शास्त्री लोग कारण जानने को कि
पुण्य गंगाजी के किनारा यज्ञ अग्नि को छोड़कर गया
के समान ही नर्मदा तट ऐसा क्यों हो रहा है ज्ञानी विद्वान
लोग भी ठीक उत्तर न दे सके क्रमशः कहे कि इसहीने का
यह उत्सव होगा

४६

संस्कृत

अन्यासमुद्रगामिन्यस्तु तीर्थे निरहितास्तथा
त्रयः सद्यः कृतस्नानात्त्रिरात्रं फलदा स्मृता ॥१५॥
सतीर्थी मासफलदा या च नित्यं समुद्रगाः
तत्समानफलं दत्ते समुद्रेऽपितथा त्रिधाः ॥१६॥
षण्मासफलदा गोदा गोमती च तथा त्रिधा
संवत्सरफलं दत्ते स्नानेनैव न जाह्नवी ॥१७॥
दश मासफलं दत्ते देवी पुण्या सरस्वती
तापी तीर्थे सकृत स्नात्वा मासाष्टकफलप्रदा ॥१८॥
सप्त मास फलं दत्ते सरयू सेविता सकृत
नव मासं कृतं पुण्यं दत्ते स्नात्वा नर्मदा ॥१९॥
क्षिप्रा चर्मण्वती वेत्रा पंच मास कृत फलम्
गण्डकी तमपर्णी च कावेरी च पयस्विनी ॥२०॥

भाषा

जो समुद्रगामिनी नहीं है अन्य तीर्थों से रहित है ऐसे
नदी में स्नान करने से तीन रात्रि फल देती है।
यदि तीर्थ युक्त है तो एक मास फलदायी होता है
उसके हिसाब फल समुद्र स्नान से होता है।
गोदावरी और छमास फल देने वाली है एक वर्ष तक फल
गंगा देती है॥ पुण्या सरस्वती नदी दश मास फल देती है।
तापी एकबार स्नान में आठ मास फलदायी है। सरयू नदी
सात मास फलदायी है यमुना नदी नव मास फल देती है
क्षिप्रा- चर्मण्वती पांच मास फल देती है गण्डकी ताम्र
पर्णी कावेरी पयस्विनी काफी समय फल है
१५-१६-१७-१८-१९-२०

संस्कृत

अतिपुण्य सप्त मासोत्थ सकृत स्नाता सदैव हि
इत्येन मादिनद्धा जन्मिपत रोमिरादरात् ॥२१॥
न कूते नर्मदा देवी मार्कण्डयोऽब्रवीत्तदा
त्रिभिः सारस्वतं तीर्थं सप्ताहेन च जाह्नवम् ॥२२॥

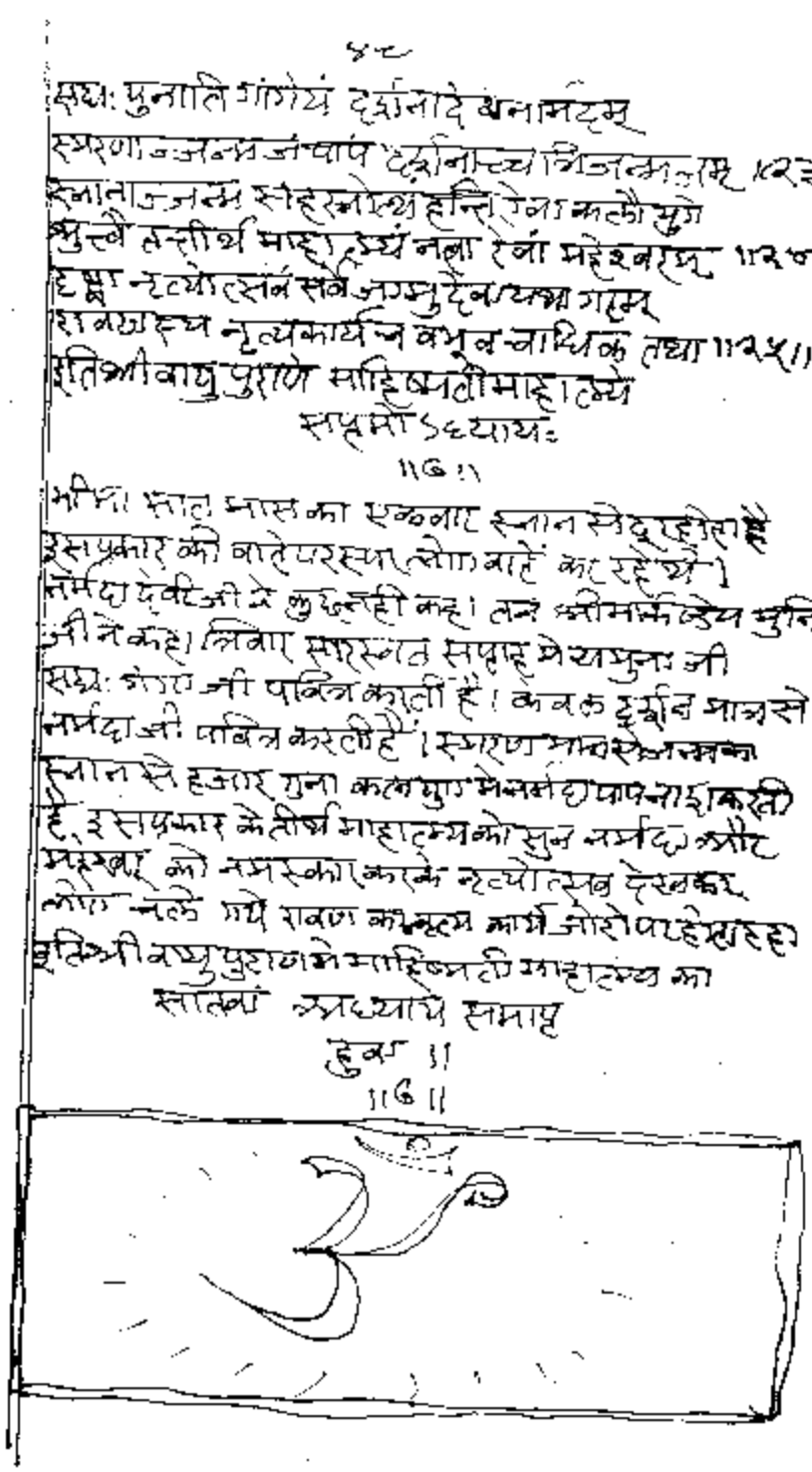

५८

सद्यः पुनाति गांगेयं दर्शनादेव नर्मदम्
स्मरणाज्जन्मजं पापं दर्शनात्त्रिजन्मजम् ॥२३॥
स्नानाज्जन्म सहस्रोत्थं हन्ति रेवा कलौ युगे
मुक्त्वा तत्तीर्थ माहात्म्यं नत्वा रेवां महेश्वरम् ॥२४॥
दृष्ट्वा नृत्योत्सवं सर्वे जग्मुर्देवपुरं गतम्
रावणश्च नृत्यकार्यं च बभूव चाधिकं तथा ॥२५॥
इति श्री वायुपुराणे माहिष्मतीमाहात्म्ये
सप्तमोऽध्यायः
॥७॥

भीष्म। सात मास का एकबार स्नान से दूर होता है
इसप्रकार की बातें परस्पर लोग बातें कर रहे थे।
नर्मदा देवीजी ने कुछ नहीं कहा। तब श्रीमार्कण्डेय मुनि
जी ने कहा। बिना सरस्वती सप्ताह में यमुना जी
सद्यः गंगा जी पवित्र करती हैं। केवल दर्शन मात्र से
नर्मदा जी पवित्र करती हैं। स्मरण मात्र से जन्म का
स्नान से हजार गुना कलयुग में नर्मदा पाप नाश करती
है, इसप्रकार के तीर्थ माहात्म्य को सुन नर्मदा और
महेश्वर को नमस्कार करके नृत्योत्सव देखकर
लोग चले गये रावण का नृत्य कार्य और भी अधिक हुआ
इति श्री वायुपुराण में माहिष्मती माहात्म्य का
सातवां अध्याय समाप्त
हुआ ॥
॥७॥

४८

अथाष्टमोऽध्यायः

सं. नर्मदापुलिने यत्र राक्षसेन्द्रः सहारुणः
पुष्पोपहारं कुरुते तस्माद्दूरादवस्थितः ॥१॥
अर्जुनो जयतां श्रेष्ठो माहिष्मत्यां पतिः प्रभुः
निर्गतो स्सह नारीभिर्नर्मदां तीर्थमाश्रितः ॥२॥
तासां मध्ये गतो राजा राज्ञ्यस्तदार्जुनः
करेणूनां सहस्रेषु मध्यस्थ इव कुञ्जरैः ॥३॥
जिह्मास्रुः स तु बाहूनां सहस्रस्योत्तमं बलम्
रोधयन्नर्मदावेगं बाहुभिः सतदार्जुनः ॥४॥
कार्तवीर्यभुजास्तत्र जलं प्राप्य सुनिर्मलम्
क्रीडोपहारं कुर्वन्ति प्रतिस्रोतः प्रधावति ॥५॥

भाषा

नर्मदानदी के किनारे पर जहां भयंकर राक्षसराज रावण पुष्पोपहार से भगवान शिव की पूजा कर रहा था उससे थोड़ी दूर सहस्रधारा स्थल पर साहिष्मती के निवासी कार्तवीर्य सहस्रार्जुन तीन सौ स्त्रियों के साथ नर्मदा जल में स्नान कर रहे थे मानो हथिनियों के साथ मस्त कुञ्जर क्रीड़ा कर रहा हो। हजारों भुजाओं से बलवान राजा ने नर्मदा जल को रोक लिया नर्मदा का वेग रुक गया वेग रुकने से जल धारा उलटी पश्चिम से पूरब को बहने लगी १-२-३-४-५

संस्कृत

समीप नक्रमकरः सपुष्प कुशसंभृतः
सनर्मदाम्भसां वेगः प्रावृट्काल इवाभवत् ॥६॥
सवेगः कार्तवीर्येण संप्रोक्षित इवाम्भसः
पुष्पोपहारं सकलं रावणस्य जहार सः ॥७॥
रावणोऽपि समाप्तं तमुत्सृज्य समंततः
नर्मदां पश्यतः कान्तां प्रतिकूलां यथा प्रियाम् ॥८॥
परिवर्तमानं तु तं दृष्ट्वा सागरोदगारसन्निभम्
बहूनन्तम्भसोनेगा प्रतिभाष्य प्रतिश्रुति ॥९॥

४९

भाषा

मछली मगर सूँस फूल कुशादि से युक्त नर्मदा जी
को जाल के काल के समान होगया वह नेगा श्री कार्तवीर्यार्जुन
के द्वारा प्रेषित रावण द्वारा भगवान शंकर के चढ़ाये हुए को
बहाते गया रावण आदी पूजा छोड़ कर चारो तरफ नर्मदा
को प्रतिकूल स्त्री के समान देख रहा है पश्चिम तरफ के बहाव
को सागर के तूफान के समान बढ़ता हुआ नेगा पूर्व को जा रहा
है अतएव पश्चिम को जाना चाहिये / ६-७-८-९

संस्कृत

ततो बुद्धभान्तशकुनो स्वभावे परमस्थितम्
निर्निकारा गता भाषा मपश्यद्रावणो नदीम् ॥१७॥
सव्येस्य कराङ्गुल्या हृदशब्दा दशानन
वेगप्रभावमन्वेष्टुं सोऽदिशच्छुकसारणौ ॥१२॥
तौ तु रावण संदिष्टौ भ्रातरौ शुकसारणौ
क्षोभान्तर गतौ वीरौ पश्यन्तौ पश्चिमां दिशाम् ॥१२॥
अर्धयोजन मात्रं तु गत्वा तौ न निवारणौ
पश्येतां पुरुषं तोये स्त्रीभिस्तां सह योषितः ॥१३॥
मदरक्तान्त नयनं मदव्याकुल चेतसम्
नर्मदां बाहुसहस्रेण रुधन्तमरिमर्दनम् ॥१४॥
गिरिपादसहस्रेणरुधन्तमिव मेदिनीम्
बालानां वर नारीणां सहस्रेण समावृतम् ॥१५॥

भाषा

उलटा प्रवाह होने से अपशकुन हो गया निर्विकार स्त्रीके
समान रावण ने नदी को देखा बाये हाथ की अंगुलीसे
हृदय शब्द को सुनते हुए वेग प्रभाव को उलटा जानने के
लिये शुक सारण दोनो भाइयों को आदेश दिया वे दोनो भाई
पश्चिम दिशा की ओर गये आधा योजन दूर जाने पर
देखते है एक बहुत विशाल काय पुरुष स्त्रियों के साथ
मद से लाल लाल हुई आखों वाला अपनी हजार
भुजाओं से नर्मदा को रोक लिया है। जैसे विशाल पर्वत

५७

के समान स्त्रियों से घिरा हुआ जल क्रीडा करता है।

७- ११-१२- १३- १४-१५

संस्कृत

स मदानां करेणूनां सहस्रेणेव कुञ्जरः
तमद्भुतं तमं दृष्ट्वा राक्षसौ शुक सारणौ ॥१६॥
सन्निवृत्यानुपागम्य रावणं तं च ऊचतुः
बृहत् शाल प्रतीकाशं कोप्यसौ राक्षसेश्वर ॥१७॥
नर्मदां शैल बद्धां क्रीडयति च योषितः
तेन बाहु सहस्रेण सानि रुद्धा महानदी ॥१८॥
सागरोद्गार संकाशान् उद्गारान् सृजते मुहुः
इत्येवं भाषमाणौ तौ निशम्य शुक सारणौ ॥१९॥
रावणोऽर्जुन इत्युक्त्वा ययौ युद्धाय लालसः
अर्जुनाभि मुखे तस्मिन् रावणोऽद्रिः साधिष्ठितः ॥२०॥

भाषा

मदमस्त हाथी के समान सहस्र हाथियों के समान विशाल
अद्भुत महाबली अर्जुन को देखकर शुक सारण दोनों
राक्षस लौट कर वापस आये और वोले बहुत विशाल
शाल अथवा पर्वत शिखर के समान नर्मदा को हजार
भुजाओं से रोक कर बहुत सी स्त्रियों के साथ जल क्रीडा
कर रहा है उसी ने ही नर्मदा जल को रोक कर उलटा प्रवाह कर दिया
है इस प्रकार शुक सारण से सुनकर वे बलवान अर्जुन है ?
युद्ध की प्रबल इच्छा से रावण उसके पास चल दिया

१६-१७-१८-१९-२०

संस्कृत

स्त्रीणां प्रमाथिबलः संग्राम सज्जस्तदा
स्पर्धेव कृतो रावः सहस्रं प्रेषितो दानो ॥२१॥
महाकः महापार्श्व धूम्राक्ष शुक सारणौ
संवृतो राक्षसेन्द्रस्तु तेनाराणां दानवोऽर्जुन ॥२२
स्त्रीणां सैन्य बलेन स तदा राक्षसो बली
तं नर्मदा हृतं भीमं जगामार्जुन प्रभः ॥२३॥

५१

स तत्र स्त्री परिवृतं वस्त्र जालाभि : संयुतम्
नरेन्द्रमवरुह्य द्रुजा राक्षसानां तदार्जुनम् ।। २४।।

भाषा

हवा तेजी से चलने लगी धूल उडने लगी प्रचण्ड वायु की आवाज के साथ लाल बादल उठने लगे महोदर महापार्श्व शुक सारण धूम्राक्षादि के साथ शीघ्र ही राक्षस थोडे समय में जहाँ महाबली कार्तवीर्य स्त्रियों के साथ जल क्रीडा कर रहे थे वहाँ नर्मदा के बाधक भुजाओं से महा काल यम के समान रावण पहुँच गया

२१- २२- २३ - २४

संस्कृत

स रोषाद्रक्तनयनो राक्षसेन्द्रो महाबलः
इत्येवमर्जुनं प्राह गम्भीरया गिरा ।।२५।।
अमात्य क्षिप्रमाख्यातं हैहयस्य नृपस्य वै
युद्धार्थं समनुप्राप्तो रावणोनाम नापरः ।।२६।।
रावणस्य वचः श्रुत्वा मंत्रिणश्चार्जुनस्य हे
उत्तस्थु सायुधा हे च रावणवाक्यमब्रुवन् ।।२७।।
युद्धस्य कालो निर्जातः साधु साधु रावण
यः स्त्रीभिः स्त्री गृहं चैव योद्धुमुत्सहते नृपम् ।।२८।।
ननिहा मध्यगं मत्तं दार्ढ्ये इव कुञ्जरम्
क्षिप्रमाद्य दशग्रीव उष्यतां रजनी त्वया ।।२९।।
युद्धश्रद्धा यदस्ति ते न स्यात् समोऽर्जुनः
यदि नापि त्वया तुभ्यं युद्धं तृष्णा सफलता ।।३०।।
निपात्य स्वान्तरे युद्धमर्जुनो नेष्यति
ततस्तो रावणामात्या मात्यस्ते नृपस्य तु ।।३१।।

भाषा

क्रोध लाल लाल आँखों वाले महाबलवान रावण से महावीर्य वान अर्जुन से गम्भीर वाणी में कहा हैहय राज को जल्दी कहो मैं युद्ध करने की लालसा से आया हूँ और कोई इच्छा नहीं है रावण की बात सुनकर अर्जुन के मंत्री (सेवक) साथ में हथियार युद्ध का समय जानकर हैहय के स्नान से शिथिल हो गया है

अमात्य

४२

किसप्रकार हाथियों के बीच शेर घबड़ा जाता है हे रावण जी
आप के लिये क्षमा कीजिये कल आपकी इच्छा पूरा करूँगा
हे प्रिय यदि युद्ध की ही इच्छा है तो कल अवश्य करूंगा
हम कल युद्ध में हरा या हम पीछे नहीं हटेंगे ।
२५-२५-२६-२८-२९-३०-३१

संस्कृत

तादृशश्चापि ते युद्धे भाषितं रुचं बुभुक्षितैः
ततः कोलाहलः शब्दो नर्मदा तीरजो महान् ॥३२॥
अर्जुनस्यानुयायिनां रावणस्य च मंत्रिणाम्
हेषाभिः हेषमाणैः दान्तैर्गजा कलभैश्च दारुणैः ॥३३॥
स रावणो नरैर्यन्तः सम्भ्रान्तस्समभिद्रुतः
हैहयाधिपयोद्धानां वेगमासीच्च दारुणः ॥३४॥
सिन्धुर्मीनमकरैः समुद्रस्येव निस्वनः
रावणस्यतु तेऽमात्या प्रहस्त शुक सारणाः ३५
कार्तवीर्यबलं क्रुद्धा निहन्ति स्म स तेजसा
अर्जुनाय च तत्कर्म रावणस्य च मंत्रिणः ॥३६॥

भाषा

भूखे शेर के समान तुम्हारे युद्ध की इच्छा है तो ऐसा होने
दो इसके बाद नर्मदा जी के किनारे हल्ला प्रारम्भ होगया
अर्जुन के अनुयायी गण रावण के साथ आये मंत्री लोग
परस्पर एक दूसरे पर चिल्लाते हुए आक्रमण का हल्ला
बोल दिये हैहय योद्धाओं का भयंकर वेग था
समुद्र में मगर मच्छ आदि के समान शब्द गूंज रहा था
रावण के मंत्री शुक सारण कार्तवीर्य के सैनिक परस्पर
तुमुल युद्ध हो रहा था ॥ ३२ - ३३ - ३४ - ३५ - ३६

मूल संस्कृत

और पलाश कथित युद्धे भयमिहुके
शुनान भेतव्यमिति स्त्रीजनं च तदार्जुन ॥३७॥
उत्तरार्द्ध कोलाहलमात प्राप्ता योधा दिवौ जनैः
क्रोधदूषित नेत्रस्तु स तदार्जुन पावक। ॥३८॥

४३

प्रज्वलाल महाघोरो युगान्त युग पावक:
सतूर्ण तरसाद्याय जरद्देपागदो गदाम् ॥३९॥
श्रीमे द्रनति रक्षांसि तमांसीव दिवाकर:
बाहु निक्षेपकरण समुद्यम्य महागदाम् ॥४०॥
गरुड रूप मास्थाय अपपातेव सोऽर्जुन:
तस्य मार्गे समासाद्य निन्द्योर्वस्येव पर्वत: ॥४१॥
स्थितो विन्द्य इवाकाम्य प्रहस्तो मुशलायुध
ततो ऽस्य मुशलं घोरं लोह वद्धं महोद्धृत: ॥४२॥

भाषा

क्रीड़ा करते हुए लोगों ने भयभीत होकर जय कहा
तब अर्जुनजी ने कहा उठिये नदी के जल से बाहर निकले
जिस प्रकार मस्त हाथी गंगा नदी में से बाहर निकलता है
क्रोध से लाल-लाल हुई आंखों से पावक (अग्नि) निकलने
लगा युगान्त अग्नि ज्वाला प्रकट होगई वे शीघ्रता से स्वर्ण
मंडित गदा को उठाकर दौड़े जैसे सूर्य अन्धेरे की ओर
दौड़ता है भुजाओं को घुमाते हुए गरुड के समान गद
ले, मार्ग में निन्द्याचल पर्वत के समान खड़े होगये
प्रहस्त ने लोहे का मुशल घुमाया मारने के लिये
३६-३८ ३९-४० ४१-४२

संस्कृत

प्रहस्त का मुक्तस्य कम्पन प्रदहनिव
आधावमान मुशलं कार्तनीर्य स्तदा जुन ॥४३
निपुणो वंचयामास गदया स महाबली
ततस्तमभिदुद्राव प्रहस्तं हैहयाधिप: ॥४४॥
भ्राम्य मानो गदा गुर्णी पंच बाहु शतोद्धृताम्
ततो हतो तिवेगेन प्रहस्तो घातितो महीम् ॥४५॥
निपपात स्थित: शैलो नजीवन्न हतो यथा
प्रहस्तं पातितं दृष्ट्वा मारीचं शुक सारणा: ॥४६॥
समहो दर धूम्राक्षा अपसृष्टा रणाजिरात्
अपक्रान्तेषु वानरा त्ये प्रहस्ते न निपातिते ॥४७॥

५०

रावणोऽथ द्रुतं तूर्णमर्जुनं नृप सत्तम
सहस्रबाहो सयुद्धं निशाचाहो च दारुणम् ॥५०॥
नृपराक्षसयोस्तत्र चारब्धं रोमहर्षणम्
सागरौ निव संक्षुब्धौ चक्रमूलविनाचलौ ॥५१॥

भाषा

प्रहस्त के हाथ से छूटा हुआ मुद्गर जलती हुई ज्वाला के समान दिखा उसको महाबली अर्जुन ने हटाकर अपनी दिव्य गदा से निरस्त कर दिया गदा। लेकर प्रहस्त के ऊपर दौड़े अपनी भारी गदा को पांचसौ हाथों से उठाकर घुमाते हुए प्रहस्त पर प्रहार कर दिया इन्द्र के समान प्रहस्त पर प्रहार कर दिया प्रहस्त गिरा उसका गिरा हुआ खून का मुख समान महाबाहु सहस्रबाहु ने हमला कर दिया रावण भी वेग से दौड़ पड़ा सहस्रबाहु की तरफ। सहस्रबाहु अपनी हजार भुजाओं से रावण अपनी बीस भुजाओं से परस्पर युद्ध करने लगे इस प्रकार राजा रावण और महाबली का युद्ध भयंकर प्रारम्भ हो गया दो समुद्रों के समान अथवा दो पर्वतों के समान भीषण युद्ध होने लगा

४३-४४-४५-४६-४७-४८-४९

संस्कृत

बलौ दृप्तौ यथा नागौ वासितार्थे यथा नृपौ
सिंहा निव निनिर्दन्तौ स्थितौ निर्वलौ कृतौ ॥५०॥
रुद्रकालान्तकौ तौ तदा राक्षसार्जुनौ
परस्परं गदां गृह्य ताडयामासतुर्भृशम् ॥५१॥
नर्जप्रहारान्चक्रान्यथाघोरान्निर्वैरैः
गदाप्रहारास्तौ तत्र सहेते नरराक्षसौ ॥५२॥
यथा ज्ञानिनरे भ्यस्तु ज्ञानं ते च प्रतिश्रुति
तथा तयोर्ज्ञानदाचारे दिशः सर्वाः प्रति श्रुता ॥५३॥
अर्जुनस्य गदा साहु पतयज्ञानां हितोरसि
कांचनांगं नभ २ चक्रे विद्युत्सौदामिनी यथा ॥५४॥

५५

दोनों महाबली उद्दण्ड नागों के समान अथवा मसीभूत
काले बादलों के समान अथवा कालाग्नि रुद्र के समान
काले काले मेघों के समान परस्पर लड़ते हुए वे राक्षस
राज अर्जुन (सहस्रबाहु) परस्पर भयंकर गदा लेकर के
ताकत से परस्पर मारने लगे। गदा प्रहार परस्पर एक दूसरे पर
करने लगे। अर्जुन ने भारी गदा लेकर उसे चारों तरफ घुमा
कर बिजली के समान चमकती हुई गदा से राक्षसराज
के छाती पर प्रहार किया।

५० - ५१ - ५२ - ५३ - ५४

संस्कृत

तथैव रावणेनापि पातयमान मुहुर्मुहुः
अर्जुनोरसि सा भाति गदोल्केव महाशिरौ ॥५५॥
नार्जुनः खेदमाप्नोति न राक्षसगणेश्वरः
समासीत्तयोर्युद्धं यथाग्नि बलिन्द्रयोः ॥५६॥
क्षौरिव वृषौ युद्धे दन्ताग्रैरिव कुञ्जरौ
परस्परं निघ्नन्तौ नरराक्षस सत्तमौ ॥५७॥
ततोऽर्जुनेन क्रुद्धेन सर्व प्राणेन सा गदा
स्तनयोरन्तरे मुक्ता रावणस्य महोरसि ॥५८॥
दुर्बलेव कीलाग्रद्विधा भूत्वा पतत्तदा
सा चार्जुन प्रयुक्तेन गदा घातेन रावणः ॥५९॥
व्यपसर्पत धनुर्भूत्वा निषण्णश्च निपतत
स विह्वलस्तदा लब्ध्वा दशग्रीवं ततोऽर्जुनः ॥६०॥
सहसोत्पत्य जग्राह गृहीत्वा च पन्नगम्
स बाहुसहस्रेण बलादारुह्य रावणम् ॥६१॥
बबन्ध बलवान राजा बलवान रावणं यथा
बध्यमाने दशग्रीवे सिद्धाश्चारण देवताः ॥६२॥

भाषा

उसी प्रकार रावण के द्वारा बार बार अर्जुन की छाती में
मारी जाती हुई गदा विशाल पर्वत पर गिरी बिजली के समान
प्रतीत होती थी। अर्जुन को उतना खेद नहीं होता था।

५६

जितना कि राक्षसराज को होता था। दोनों का युद्ध
बलि - इन्द्र के समान बराबर का था। अथवा बड़े विशाल
सींग वाले दो सांड़ों के बराबर था। अथवा दो बड़े
दांत वाले हाथियों के समान था। एक दूसरे पर प्रहार
करते हुए लड़ रहे थे तभी अर्जुन ने अपनी छरी नाम वाले
रावण की छाती के बीच लोहे की कील के धोंका वह दुर्बल
कील रावण की छाती से लगकर जमीन पर गिर गई
अर्जुन द्वारा चलाई हुई महागदा के घात से रावण बारहवां
पीड़ित हो कर बैठ कर गिर पड़ा। इतने में सहसा अर्जुन ने
रावण को निहत देखकर जैसे गरुड़ सांप को पकड़ता है
उस प्रकार रावण को पकड़ कर भुजाओं से बांध लिया
रावण के बन्दी हो जाने पर सिद्ध और देवताओं को आश्चर्य
हो गया। ५५-५६-५७-५८-५९-६०-६१-६२

संस्कृत

बबन्ध बलवान राजा बलिनं रावणो यथा
वध्यमानं दशग्रीवं सिद्धाश्चारणदेवताः ॥६३॥
साधु साध्विति चाब्रुवन् किरीट्यर्जुनमब्रुवन्
व्याघ्रो मृगमिवादाय सिंहो गोवृषभं यथा ॥६४॥
स रक्षसा हतो राजा हतान्यन्यानि बन्धुभिः
प्रहस्तं तु समासाद्य दृष्ट्वा बहु दशाननम् ॥६५॥
सहसा राक्षसः क्रुद्धो अभिदुद्राव हयम्
नर्दन्तं रावणं ते गरुत्मन्तमिवाशगाः ॥६६॥
उदक्षिपन् अलपाशाये समुद्राणामिवाम्बुदाः
मुंच मुंचेति भाषन्तः तिष्ठ तिष्ठेति चासकृत् ॥६७॥
मुद्गलानि च शूलानि निस्तनन्तो ऽस्त्राणि हे
अप्राप्य न्यपतन्याशु अस्त्रान्तरस्तदार्जुनः ॥६८॥
आयुधान्यमराणां जगृहे निसूदनः
तदस्ते रे न रक्षांसि दुद्रुवुः पुनरायुधैः ॥६९॥
इति भी माहिष्मती माहात्म्ये सप्तमोध्यायः ॥८०॥

५७

भाषा

महाबली कार्तवीर्यजी ने बलवान राक्षस राज रावण को बांध दिया; दशग्रीव के बांधे जाने पर सिद्ध चारण तथा देवगणों ने साधुवाद शाबाशी दी और अर्जुन महाराज के ऊपर फूलों की वर्षा की। जैसे बाघ हिरन को दबोचकर पकड़ता है उसी प्रकार महाराज अर्जुन के द्वारा रावण के पकड़े जाने पर; महाराज अर्जुन ने हर्षातिरेक से प्रसन्नता प्रकट की, सेनापति प्रहस्त ने इस प्रकार बंधे हुए रावण को देख सहसा सभी राक्षसगण क्रोधित होगये, और अर्जुन के ऊपर मारने के लिये दौड़े, रावण का बाग बंधे होने से कष्ट होगया - जल्दी छोड़ो! जल्दी छोड़ो!! रावण को छुड़ाने के लिये हथियारों से प्रहार करके लाओ, लेकिन महाराज अर्जुन रावण को बांधे हुए अपने नगर माहिष्मती में प्रवेश कर गये, मित्रों ने उनके ऊपर फूल बरसाये जिस प्रकार वलि के पकड़े जाने पर वामन भगवान के ऊपर बरसाये थे।।

श्री माहिष्मती माहात्म्य का आठवां ८ अध्याय

समाप्त

हुआ

॥-८॥

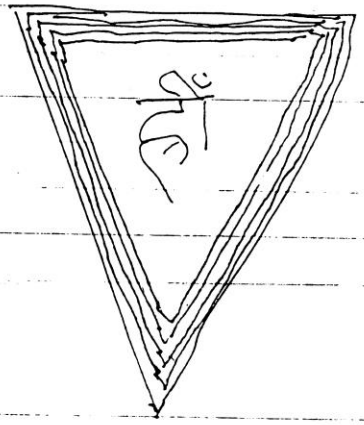

५८

अथ नवमोऽध्यायः

सूतउवाच :-- सूतजी ने कहा

एतस्मिन्नन्तरे योगी याज्ञवल्क्यः समागतः
तीर्थयात्राप्रसंगेन रेवामाहिष्मतीं प्रति ॥१॥
क्षेत्रयात्रा कृता तेन पुरीयात्रा तथा कृता
तीर्थलिंगान्समभ्यर्च्य स्थितं माहेश्वरान्तिकम् ॥२॥
राजा तमागतं श्रुत्वा सहसोत्थाय चार्घ्यवान्
पूजयामास विधिना नत्वा पृष्ट्वा स्थिरासनः ॥३॥
पप्रच्छ तं मुनिं राजा मोक्षो पायं सुरानहम्
कृहि किञ्चित् सुखोपायं कर्तव्यं मोक्षदं मम ॥४॥

योगी उवाच

भाषा

इसी बीच योगीराज श्री याज्ञवल्क्य जी तीर्थ यात्रा करते हुए महेश्वर दर्शनार्थ आये उन्होंने क्षेत्र यात्रा पुरी यात्रा करके तीर्थ लिंगों की विधिवत पूजा करके माहेश्वर किला के पास ठहर गये महाराज ने योगीराज याज्ञवल्क्य के आने का समाचार सुनकर चटपट खड़े होकर महर्षि के पास आकर उनकी पूजा किया विधान पूर्वक फिर अपने आसन के पास सिंहासन पर बैठे महर्षि जी से प्रश्न किये हे भगवन मोक्ष साधन का सरल उपाय क्या है हमें कुछ उपदेश दीजिये ?

योगिराजजी ने कहा

संस्कृत

साधु पृष्टं नृपश्रेष्ठ यदि ते बुद्धिरीदृशी
हे आशोऽदि सर्वज्ञ पृष्ट लोकोपकारकम् ॥५॥
सिद्धता मोक्षलता यत्र नर्मदा नृप राजते
यत्र कर्मादनी देहं परदा धूर्जटिः स्वयं ॥६॥
तत्र किं बन्धनं जन्तोर्यदि जानाति सेवितुम्
उपला नीलकण्ठं त्वां भजन्ते ये जलाशुता ॥७॥

५६

भाषा

हे सज्जन ऐसी सद्बुद्धि के लिये धन्यवाद है आप तो भगवान विष्णु के अंश स्वरूप सर्वज्ञ हैं जन हितकरने वाले हैं आप ने चार प्रकार की मोक्ष की लक्ष कल्याण करने वाली शिव पुत्री नर्मदा जी निश्चय मानते हैं जो कर्म बन्धन रूपी जंगल को काटने वाले परशु के समान है जिसके जल से पवित्र होकर पत्थर भी शिव शंकर बन जाते हैं।

५-६-७

संस्कृत

क्रियते किं न तदेव हि रेवा। वा मोक्षदा सुधी
यत्तीरे केशवभवो स्थितो मुक्तिप्रदो सदा ॥८॥
भवं भवानीं भवजां धुनीं हरिं
भजाम्यहं भव भीति चेत्;
तदा कनेष्ठ प्रणमाय चेतो
दुधस्व संत्यज्य षडूर्मि नेमान् ॥९॥
अथ पंचाक्षरीं विद्यां तप तीव्रं तपो ऽव्ययम्
क्षय रेवा तटे कार्यं जप शर्म सनातनम् ॥१०॥

भाषा

विद्वान लोग मोक्ष देने वाली नर्मदा मां की सेवा क्यों नहीं करते हैं जिसके किनारे पर आदि केशव भगवान महेश्वर भगवान सदा निवास करते हैं। भगवान शंकर भवजा नर्मदा केशव को भजन भव भय चिन्ता से पहले जप कीजिये धीरे धीरे कम मन की चंचलता मिट जायगी उसका ज्ञान हो जायेगा छः ऊर्मि काम - क्रोध - लोभ - मोह मद - अहंकार का धीरे धीरे शमन हो जायेगा पंचाक्षरी मंत्र "नमः शिवाय" का जप करो तीव्र तप करो रेवा तट पर निवास कर सनातन नित्य सनातन भगवान शिव का ध्यान करो

८-९-१०

भज शंभुं यज शानं कुरु सेवां जनैश्वर ॥
त्यज कामादिकान् ज्ञानं मुक्ति कान्तां परिष्वज ॥११॥
शिवं भज शिवं ध्यायेद् शिवं यज शिवं जप
शिवं स्तुहि शिवं बूहि शिवं पश्य निरंतरम् ॥१२॥
निरुपाधी तथा योगी च शिवध्यायी जितासनः
नैकस्थायी तथा मायी ध्रुवं मोक्षमवाप्स्यसि ॥१३॥
यानि स्थानानि वेदोक्तानि कर्म कुर्वन् शिवार्पितम्
सदन नाका स्तमित हितं जन्तोर्न याति ताम् ॥१४॥
निःसंगो निःसंगी दूरे शिवे परात्मनि
आनंदे काष्ठाटे मंत्रं ध्रुवं मोक्षमवाप्स्यसि ॥१५॥
इत्यादि वाक्यैः पूर्वं बोधयित्वा शिवभक्तिम्
जगाम पश्चिमामाशां नृप श्रेष्ठ गृहं ययौ ॥१६॥
श्री माहिष्मती माहात्म्ये नवमोऽध्यायः

भाषा

भगवान शिव जी का भजन यजन करो देव की सेवा करो
काम क्रोधादि शत्रुओं को त्याग करो मुक्ति रूपी कान्ता का
आलिंगन करो शिव को भजो शिव जी का ध्यान करो शिव
का यज्ञ करो शिव मंत्र का जप करो शिव जी का स्तवन करो
शिव शब्द मुख से निकालो शिव जी को देखो अर्थात शिव
मय संसार को देखो निरंतर स्नान करो तीर्थ यात्रा करो
शिवजी का ध्यान करो दृढ़ आसन रखो एक जगह नहीं रहो
माया का संग्रह नहीं करो निश्चय मोक्ष प्राप्त करोगे।
इन्द्रियों को वश में करके कर्म किये हुए कर्मों को शिवार्पण
करो सत्यवादी बनो सब जीवों पर दया करो निःसंगी
अकेला ही रहो परमात्मा में दृढ़ निश्चय होकर एकाक्षर
मंत्र "ॐ" का जप करो निश्चय ही मोक्ष प्राप्त करोगे इत्यादि
वाक्यों से महाराज अर्जुन को उपदेश देकर योगीराज
दत्तात्रेय जी महाराज पश्चिम दिशा को चले गये बाद में
महाराज कार्तवीर्यार्जुन जी भी अपने महल को आ गये ॥
११-१२-१३-१४-१५-१६

६१

इति श्री वायु पुराणे मार्कण्डेयी माहात्म्ये नवमो
अध्याय का टीका समाप्त ॥९॥

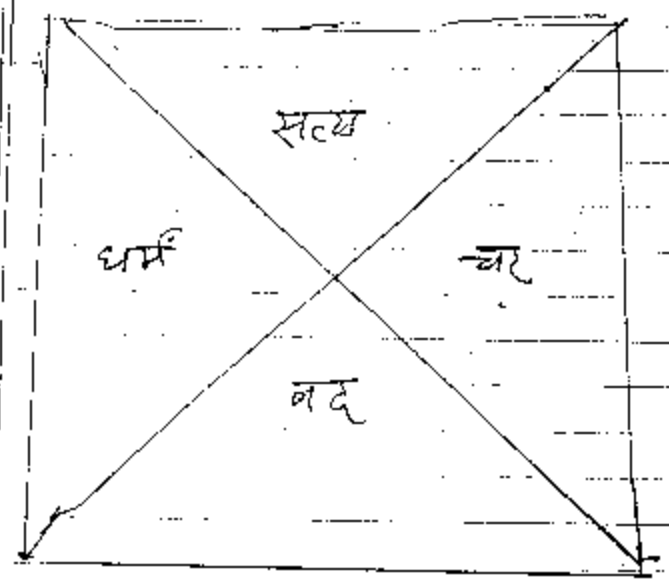

६३

अथ दशमोऽध्यायः

संस्कृत

रावण ग्रहणं तु वायु ग्रहण संनिभम्
ततः पुलस्त्यः शुश्राव कथितं दिवि दैवतैः ॥१॥
ततः पुत्र कृतस्नेहात् कथयानो महाद्युतिः
माहिष्मतीं पतिं द्रष्टुं माजगाम महानृषिः ॥२॥
स वायु मार्गमास्थाय वायु तुल्य गतिर्द्विजः
पुरीं माहिष्मतीं प्राप्तो मनः संपात निक्रमः ॥३॥

भाषा

रावण का पकड़ा जाना वायु पकड़ने के समान है। स्वर्ग में देवों द्वारा यह समाचार सुनकर पौत्र स्नेह से दुःखी चित्त से कंपित महर्षि पुलस्त्य जी माहिष्मती की ओर वायु मन वेग भरपट आ गये। १-२-३

संस्कृत

सोमरावति संकाशां हृष्ट पुष्ट जनाकुलाम्
प्रविवेश पुरीं ब्रह्म इन्द्रस्येव महावलीम् ॥४॥
पादचारी निरादित्यं निष्यन्दंतं सुदर्शनम्
दूतस्तेऽप्रत्यभिज्ञाय मार्जुनाय न्यवेदयत् ॥५॥
पुलस्त्य इति विज्ञाय वचनं हैहयाधिपः
हिरण्या उज्जहि माद्याय प्रत्युगाच्च तपस्विनम् ॥६॥
पुरोहितोऽस्य पूजार्थं मधुपर्कं तथैव च
उपस्तात प्रययौ राज्ञः शक्रस्येव बृहस्पतिः ॥७॥

भाषा

अमरावती के समान हृष्ट पुष्ट जनों से भरी पुरी माहिष्मती में महर्षि पुलस्त्यजी ने प्रवेश किया। अमरावती इन्द्र पुरी में जिस प्रकार ब्रह्मदेव प्रवेश करते हैं पैदल चलते हुए सूर्य के समान सैनिक दूत को अपने आने की सूचना महाराज अर्जुन को दिया पुलस्त्य महर्षि जी पधारे हैं ऐसा जान कर हाथ जोड़ कर महाराज प्रणाम किये पुरोहित जी के साथ अर्घ्य सामग्री मधुपर्कादि से इन्द्र बृहस्पति की पूजा करते हैं के समान पूजा किये ४-५-६

६३

संस्कृत

ततस्तं मुनिमायान्तं मुद्यन्तमिव भास्करम्
अर्जुनो दृश्य संभ्रान्तो ववन्द इन्द्रनेश्वरम् ॥८॥
स तस्य मधुपर्कं च पाद्यमर्घ्यं च दापयत्
पुलस्त्यमाह राजेन्द्रो हर्षगद्गदया गिरा ॥९॥
अद्यैव नो भगवत्या स्तुल्या माहिष्मती कृता
अद्याहं तु द्विजेन्द्र त्वां कस्यां पश्यामि दुर्दृशाम् ॥१०॥
अद्य मे कुशलं देव, अद्य मे कुशलं व्रतम्
अद्य मे सफलं जन्म, अद्य मे सफलं तपः ॥११॥
यत्ते देवगणैर्वन्द्यौ, वन्देऽहं चरणौ तव
इदं राज्यमिमे पुत्रा इमे दारादि मेव च ॥१२॥
ब्रह्मन् किं कुर्म किमाज्ञापयतु नो भवान्
तथा मेऽग्निषु पुत्रेषु दिवं पृष्ठ्वा च पार्थिवम् १३
पुलस्त्यो वाच राजानं हैहयानां तथार्जुनम्
नरेन्द्राम्बुज पत्राक्षं पूर्णचन्द्र निभानन १४

भाषा

उन महर्षि पुलस्त्यजी को सूर्य के समान प्रकाश मान सामने आते हुए देखकर झटपट प्रणाम करके चरण स्पर्श किया जिस प्रकार से देवराज इन्द्र देव गुरु बृहस्पति जी का चरण स्पर्श करते हैं। मधुपर्क पाद्य अर्घ्य से विधिवत पूजा करके हर्ष से गद्गद वाणी में कहे, भगवन्! आज हमारी माहिष्मती नगरी इन्द्रपुरी अमरावती के समान होगई। भगवन्! मेरा जन्म आज धन्य होगया। आज मेरा व्रत, पूजा, पाठ सभी कुछ सफल होगया॥ जो मैं आपके देवपूजित चरणकमलों का वन्दन किया। भगवन्! आपकी क्या आज्ञा है सुनाइये; दुःखी मत होइये। ७॥ पुलस्त्यो वाच ...

पुलस्त्यो वाच राजानं हैहयानां तथाऽर्जुनम्
नरेन्द्राम्बुज पत्राक्षं पूर्णचन्द्र निभानन ॥१४
अतुलं ते बलं येन दशग्रीव पराजितः
भयादस्यो पतिष्ठेत निष्पन्दौ सागरानलौ ॥१५

६४

मम वाक्यं प्रयच्छाशु न किंचन वचोऽर्जुन ॥१६

भाषा

महर्षि पुलस्त्यजीने हैहयाधिपति महाराज अर्जुन से कहा, कि हे महाराज! पूर्णचन्द्रमा के समान मुखवाले, कमलके समान नेत्रवाले, आप का बल पौरुष अपौरुषेय है तभी तो आपने मेरे प्रिय पौत्र रावणको जीत कर युद्ध में बन्दी बना लिया, जिसके भय से वायु और समुद्र शान्त होजाते थे। उसके यश को बन्दी बना कर पी लिया; मेरे वचन को मानते हुए बेटा! दशानन रावण को छोड़ दो। महर्षि पुलस्त्य की आज्ञा को स्वीकार कर महाराज अर्जुन जी कुछ नहीं बोले ९३-९४-९५-९६

संस्कृत

स तं प्रमुच्य त्रिदशारिमर्जुनः
प्रपूज्य दिव्यैरभरणैः स्रगाम्बरैः
अहिंसकं सख्यमुपेत्य सानिकम्
प्रणम्य तं ब्रह्मसुतं गृहं ययौ ॥९७

पुलस्त्येनाभिसंपृक्तो राक्षसेन्द्रो प्रतापवान्
जरिष्वस्तु कृतातिथ्यो लज्जमानो विनिर्गतः ॥९८

पितामहः सुतश्चापि पुलस्त्यो मुनिपुंगवः
मोचयित्वा दशग्रीवं ब्रह्मलोकं जगाम ह ॥९९

एवं स रावणः प्राप्तः कार्तवीर्येण धर्षणाम्
पुलस्त्यवचनाच्चापि पुनर्मुक्तो महाबलः ॥१००

सर्वबलिभ्यो बलिनः सन्ति राघवनन्दन
नावज्ञापि परे कार्या य इच्छेत्श्रेयमात्मनः ॥१०१

भाषा

वीरप्रवर महाराज अर्जुनने देवशत्रु महाहंकारी रावणको छोड़दिया। परस्पर आलिंगन करके दिव्य आभूषण माला और वस्त्र भेंट दिया। रावण लाजित होकर अपने घर चला

भाषा

६५

श्रीमहर्षि पुलस्त्यजीभी वहां से विष्णु लोक, ब्रह्म लोक को चले गये ॥ इसप्रकार राक्षस राज रावण और महाबली अर्जुन के द्वारा बन्दी होकर, श्री दादाजी महर्षि पुलस्त्य जी द्वारा कहने पर पुनः छूट गये। हे रघुनन्दन रामजी। बलियों से बली की कथा सुनने से आती है, अपना श्रेय चाहने वालेको दूसरोंका अपमान नहीं करना चाहिये ॥

संस्कृत

सूत उवाच :— सूत जी ने कहा

संस्कृत

इत्थं दिग्विजयी राजा कार्तवीर्यो महाबलो
सप्तद्वीपां वसुमतीं बुभुजे होकराट स्वयम् ॥२२५॥
इति श्री वायु पुराणे माहिष्मती माहात्म्ये दशमोऽध्यायः

भाषा

इसप्रकार सार्वभौम महाराज कार्तवीर्यार्जुन जी सप्तद्वीप वसुन्धरा का एकछत्र राट होकर स्वयं भोगों भोगने की वर्षों तक पचासी हजार वर्ष तक राज किये। देवी भागवत, स्कन्द-पद्म इत्यादि सभी पुराणों में वर्णित है
श्री वायु पुराण के माहिष्मती माहात्म्य का भाषा टीका का दशवां अध्याय
समाप्त हुआ।
ॐ

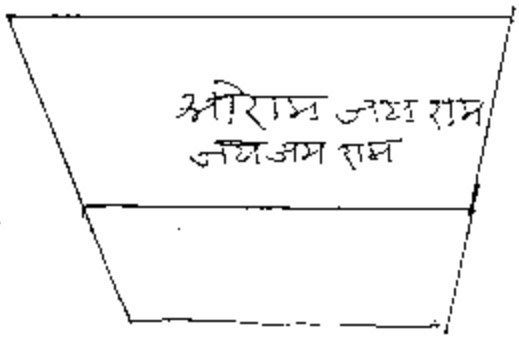

अथैकादशोऽध्यायः

शिव लिङ्गं प्रतिष्ठाप्य स्वनाम्ना राक्षसाधिपः
सिद्धेश्वरान्तिकं रत्नद्वीपे लङ्कां समाययौ ॥१॥

भाषा

राक्षसराज रावणने अपने नाम का शिवलिङ्ग स्था
पनकर रत्नद्वीप मे सिद्धेश्वर के पास करके अपनी
राजधानी लङ्का को चले गये ॥

सूत उवाच

सूत जी ने कहा

कार्तवीर्यो विधर्मात्मा बहु संवत्सरं द्विज
राज्यं चकार मेधावी पुत्र पौत्र समन्वितः ॥२॥
कदाचिन्मृगयाकांक्षी गृहीत्वा चतुरंगिणीम्
भविष्य प्रेर्यमाणोऽसौ जगाम गहनं वनम् ॥३॥
भगवानपि विश्वात्मा सत्यं कर्तुं वचो मुनि
जमदग्नेः समुत्पन्नो रेणुकायां महामनः ॥४॥
भार्गवो भृगुवंशात्तु लाङ्गलेनाद्रामेत्यपि
ख्यातिं जगाम भगवान् सुमहत् कार्य साधकः ॥५॥

भाषा

धर्मात्मा महाराज कार्तवीर्यभी बहुत काल तक पुत्र
पौत्रों के साथ मे राज पृथिवीमण्डल का किये
[नोट – पचासी हजार वर्ष तक राज्य किये भागवत
हि दूसरे पुराण ग्रन्थों मे है] भावी भवितव्यता
के वशीभूत एक बार महाराज अपनी चतुरंगिणी
सेना के साथ शिकार खेलने को निकले। विश्वात्मा
भगवान नारायण लोकमे वचन सत्य करने के
लिये महर्षि जमदग्नि की स्त्री श्री रेणुका माता
के गर्भ से उत्पन्न हुए जो कि भृगुवंश मे होने से
भार्गव कहलाये और हल धारण करने से राम
नाम से प्रसिद्ध हुए महान कार्य के करने वाले प्रसिद्ध
हुए २- ३- ४- ५-

२

संस्कृत

रामोऽपि लब्ध संस्कारो वेदान्सांगानधीतवान्
धनुःशास्त्रं च सिद्ध्यर्थं कैलासं शिवमभ्यगात् ॥६॥
तत्रार्जुनं नाम सो मुनिवरन गहने वने
यदृच्छया श्रमं पदं जमदग्ने रुपा निधानं ॥७॥
जमदग्न्याश्रमं दृष्ट्वा कोशा देव नरर्षभः
बलं सर्वं च संस्थाप्य जगाम सहमंत्रिभिः ॥८॥
पदभ्यामेव हि धर्मज्ञो न्यस्तशस्त्र परिच्छदः
वसानो वाससी क्षौमे पुरोधाय पुरोधसं, ॥९॥
ततः संदर्शने तस्य महर्षेः सो हि हैहयः
मंत्रिणं स्थानं न स्थाप्य जगामानु पुरोहितं ॥१०॥

भाषा

राम भी यज्ञोपवीतादि संस्कार पाने पर षडंगों के साथ वेदों का अभ्यास किया। धनुर्वेद सीखने के लिये भगवान् शंकर के पास कैलास पर्वत पर चले गये। कार्तवीर्य अर्जुन महाराज गहन वन में शिकार में विचरण करते हुए अचानक महर्षि जमदग्नि के आश्रम के समीप पहुँच गये॥ महर्षि के आश्रम को देख कर एकाकी पहिले ही सेना सेनापति आदि को छुड़वा कर मंत्रियों के साथ पैदल ही धर्मज्ञ राजा ने अस्त्र शस्त्र को छोड़कर पुरोहितजी के साथ कौशेय वस्त्र पहिनकर महर्षिजी के दर्शन के लिये पुरोहितजी को आगे कर दर्शनार्थ बढ़ चले॥ ६-७-८-९-१०

संस्कृत

अभ्युद्ययात् महातेजा राजानं हैहयाधिपम्
तस्यार्घमर्घ्यं च पाद्यं च दत्त्वा पश्चात् फलानि च ॥११॥
आनुपूर्व्या च धर्मज्ञ पप्रच्छ कुशलं कुले
मार्गिण्यस्यां बले कोशे मित्रेष्वात्मनि चान्वपि ॥१२॥
पुरोहितं नृपश्चैनं पप्रच्छ कुशलातुरम्
अग्निषु वृक्षेषु भृत्येषु मृगेषु च पक्षिषु ॥१३॥

३

तथेति च प्रतिज्ञाय जमदग्निर्महातपा
भवद्दागमनं सौख्यकरं जातं ममानघ ॥१४॥
अथ तं जमदग्निर्वै आतिथ्येन न्यमंत्रयत्
अब्रवीदर्जुनं नृप नान्निर्दं तु भवत कृतम् ॥१५॥

भाषा

सामान्य रूप से महातेजस्वी हैहयाधिपति अर्जुन को अर्घ्य पाद्य देकर पश्चात फल पुष्पादि से सेवा कर सानुग्रह पूर्वक कुशल मंगल पूछे। माहिष्मती नगर के कोष सेना मित्र बन्धुओं के बारे में भी पूछे। फिर महाराज अर्जुन तथा पुरोहित जी ने महर्षि से निर्भयपूर्वक अग्निहोत्र-जंगल हंस मृग पशु पक्षी आदि का कुशल क्षेम पूछे पश्चात महर्षि जमदग्नि जी ने कहा आप के आगमन से बड़ा ही आनन्द मिला। श्रीमान् महाराज ने कहा भगवन् यह सब आप की कृपा का फल है। ११-१२-१३-१४-१५

संस्कृत

पाद्य मर्घ्यं तथा तिथ्यं नने यद्युपपद्यते
जमदग्निरुवाचाथो हैहयं प्रहसन्निव ॥१६॥
जाने त्वां प्रीतिसंयुक्तं तुष्टो त्वं येन केनचित्
सेनायास्तु तवैनास्या कर्तुमिच्छामि भोजनम् ॥१७॥
मम प्रीतिमयारूपां त्वमर्हो मनुजार्जुन
अर्जुनः प्रत्युवाचेदं प्राञ्जलिस्तं तपोधनम् ॥१८॥
सहैन्यो नोपयातोऽस्मि भगवन् भगवद्भयात्
राज्ञाहि भगवन्नित्यं राजपुत्रेण वा सदा ॥१९॥
यत्नतः परिहर्तव्यो विषयेषु तपस्विनः
वाजिमुख्या मनुष्याश्च मत्ताश्च नरनारयात ॥२०॥

भाषा

महर्षि जमदग्नि ने अपने आतिथि स्वरूप महाराज अर्जुन का वन में जो प्राप्त वस्तु उसी से पाद्य अर्घ्यादि से पूजन किया। सत्कार किया फिर हे सतोदुरु महाराज से कहे कि मैं आपको भली प्रकार से जानता हूँ आप और आपके सेना का सेवा करना चाहता हूँ। कृपया आप इसे

मेरे प्रेम के अनुसार स्वीकार कीजिये।। महाराज अर्जुन
ने कहा कि भगवन्! मैं तो सेना के साथ यहां नहीं आया
हूं आपके भय से अकेला कुछ सेनाओं के साथ ही आया हूं।
हे महर्षि! तपस्वी जनों को राजा या राज पुरुषों से दूर ही
रहना चाहिये गाड़ी मुख्य घोड़ा मुख्य मनुष्य होते हैं
हाथी घोड़ों से मत्त हुए होते हैं।।

१६-१७-१८-१९-२०

संस्कृत

प्रच्छाद्य मेदिनीं भूमिं भगवन् प्रयातो स्मि भाम
ये वृक्षा मेदिनीं भूमिं भाजयन्ते हृदा जना स्तथा ।।२१।।
न हिंस्युरिति ते नाहं सेनया सह सत्तम।
आगतो लक्षितः सैन्यं त्याज्य पत्येन पार्थिव ।।२२।।
भार्गवीर्यो तथा चक्रे सेनाया: समुपागमम्
अग्निशालां प्रविश्याथ पीत्वाथ परिमृज्य च ।।२३
आतिथ्य क्रिया हेतो कामधेनुं समाह्वयत्
आतिथ्यं कर्तुमिच्छामि तत्र मेदां विधीयताम् ।।२४।।
कामधेनुरुवाचेदं स्थीयतां पृथिवीसत्तम
आज्ञया हि करिष्यामि सर्वं हे ऋषिसत्तम ।।२५

भाषा

महाराज अर्जुन ने कहा कि भगवन् आपने बहुत लम्बी
चौड़ी भूमि पर कब्जा कर रखा है जिसमें फल फूल इत्यादि के
वृक्ष आश्रम में हैं इसमें प्रवेश करने पर किसी प्रकार की
हिंसा न हो इस भय से अकेले मैं यहां आया हूं बड़ी सेना को
साथ में नहीं लाया पश्चात महर्षि के आज्ञा सेना आने का
आदेश दिया। महर्षि जमदग्नि ने अग्नि शाला में प्रवेश करके
कामधेनु को बुलाया राजा आतिथ्य सत्कार करने को कहा
कामधेनु ने कहा आप की आज्ञा पर कल करूंगी

२१-२२-२३-२४-२५ ।।

संस्कृत

OM: One God Universal Garland of Offerings #12

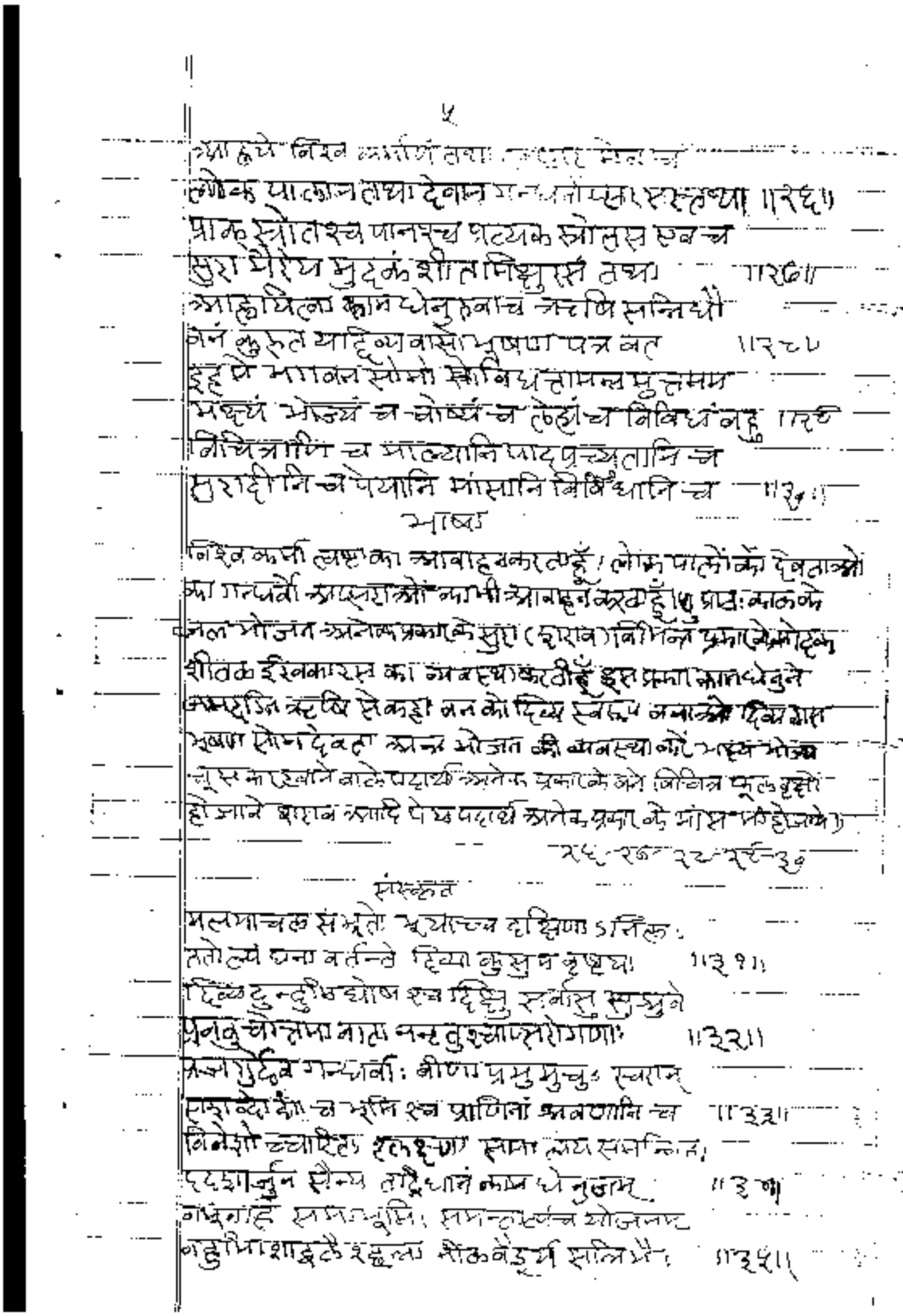

५

आह्वये निश्च [illegible] तथा [illegible] मेव च
लोकपालान तथा देवान गन्धर्वाप्सरसस्तथा ॥२६॥
प्राक्स्रोतश्च पानश्च प्रत्यक्स्रोतस एव च
सुरा मैरेय मुदकं शीतं निष्क्षुरसं तथा ॥२७॥
आह्वयिष्ये कामधेनुमवाचं ऋषिसन्निधौ
मनं कुरुत यादृग्वासोभूषणा पत्र वत ॥२८॥
इह मे भगवन सोमो सोविधत्तामन्नमुत्तमम
भक्ष्यं भोज्यं च लेह्यं च पेयं च विविधं बहु ॥२९॥
विचित्राणि च माल्यानि पादप्रच्युतानि च
सुरादीनि च पेयानि मांसानि विविधानि च ॥३०॥

भाषा

निश्चय करी लक्ष्मी का आवाहन करता हूँ। लोकपालों को देवताओं
का गन्धर्वों अप्सराओं का भी आवाहन करता हूँ। प्रातःकाल के
जल भोजन अनेक प्रकार के सुरा (शराब) विविध प्रकार के मोदक
शीतल ईख का रस का व्यवस्था करती हूँ इस प्रकार कामधेनु ने
ऋषि से कहा मन को दिव्य स्वरूप बनाओ दिव्य वस्त्र
भूषण सोमदेवता अन्न भोजन की व्यवस्था करो भक्ष्य भोज्य
चूस कर खाने वाले पदार्थ अनेक प्रकार के और विचित्र फूल वृक्षों
हो जाने शराब आदि पेय पदार्थ अनेक प्रकार के मांस भी हो जाये।

संस्कृत

मलयाचल संभूता भूयश्च दक्षिणा ऽनिल:
ततोऽस्य घना वर्तन्ते दिव्या कुसुम वृष्टय: ॥३१॥
दिव्य दुन्दुभि घोष श्च दिक्षु सर्वासु सुश्रुवे
प्रनेनु चोत्तमा नाद मन्द तुश्चाप्सरोगणा: ॥३२॥
मन्दा पुष्टैव गन्धर्वा: वीणा प्रमुमुचु स्वरान्
समुद्रा दीप्त च भूमि श्च प्राणिनां भवनानि च ॥३३॥
विनेशु रुच्चारिता स्तत्र मन्त्रा: सामा लय समन्विता
ददृशार्जुन सैन्य तद्विधानं कामधेनुजम् ॥३४॥
गन्धवाह समन्भूमि: समन्तात्पूर्णं च योजनम्
बहुभिराशाङ्कैश्छन्ना मौक्तिकैर्वैदूर्य सन्निभै: ॥३५॥

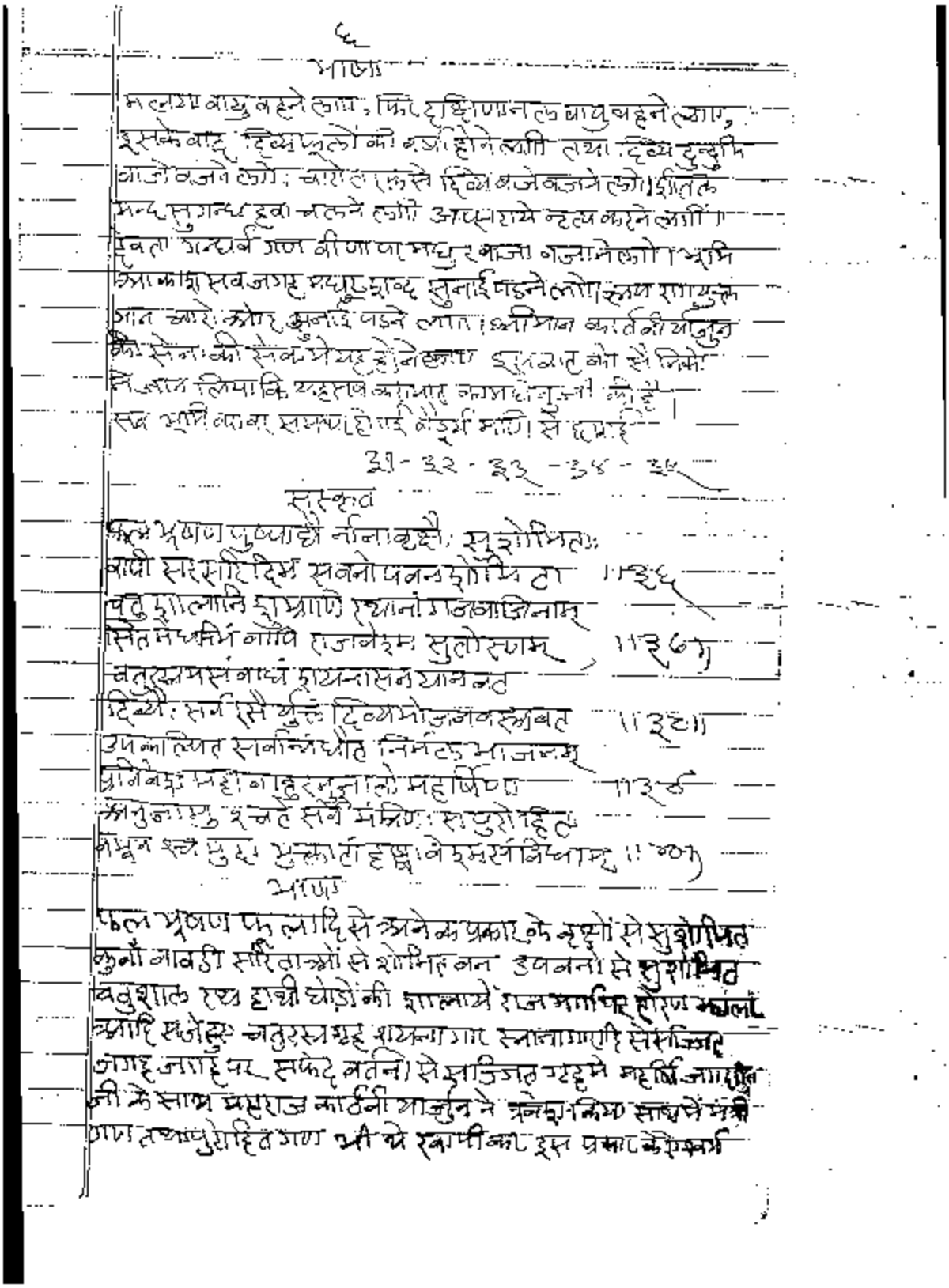

६

देख कर चकित होगये

३६-३७-३८-३९-४०

संस्कृत

आगु पूर्व्या निषेदुस्ते सर्वे स्वं स्वं निवेशनम्
ततस्तत्र मुहूर्तेन नद्यः पायस कर्दमा ॥४१॥
रत्नाकुवानसंघाश्च दिव्या कामधेनो प्रसादतः
तेनैव च मुहूर्तेन दिव्याभरणभूषिता ॥४२॥
आजगु निशाति साहस्रा कुबेर प्रहिता सिया
अलंबुषा मिश्रकेशी पुंडरीका च वामना ॥४३॥
नृत्यं चक्रु स गन्धर्वा ललितं जगु राघव
सुरां सुरेण पिबन् मांसं च भक्षिता ॥४४॥
नाना भक्ष्याणि भक्ष्यन्तु यथेच्छं विहरन्तु वै
परस्पा मुनाचेदं यश्यता ऽनुग्रहं कृते ॥४५॥

भाषा

सब लोक क्रमशः अपने अपने आसन पर बैठ गये
थोडी ही देर मे रघुवीर की नदी बह चली कीचड होगया कामधेनु
के प्रसाद से थोडी देर मे दिव्य भूषण वस्त्र आगया बीस हजार
हत्थी आगये कुबेर द्वारा प्रेषित उपस्थित होकर उसमे
अलंबुषा मिश्रकेशी पुंडरीका वामना प्रधान प्रधान अप्सरायें
आकर विभिन्न प्रकार के नृत्य करने लगी गन्धर्व गण भी ललित
स्वर से प्रसन्न तापूर्वक गाने लगे मांस का सेवन करने लगे
खाते नाचते परस्पर आपस मे बाते करते यह सब महर्षि वसिष्ठ
की कृपा का फल है ४१-४२-४३-४४-४५

संस्कृत

हयान् गजान् रथानुष्ट्रान् तथाच सुरसे भे सुतान
अभोजयन् वाहनयास्तेषां भोज्यं यथा विधि ॥४६॥
इक्षुश्च मधु लाजाश्च भोजयन्ति स्म वाहनान्
मत्ते मत्तोन्मत्त प्रमुदिताश्च सा चानु ॥४७॥
तर्पितास्वं कामैश्च स्रक्चन्दनाभिषिक्ता
अप्सरो गण संयुक्ता नृत्यमाना मुदीयन् ॥४८॥

OM: One God Universal Garland of Offerings #12

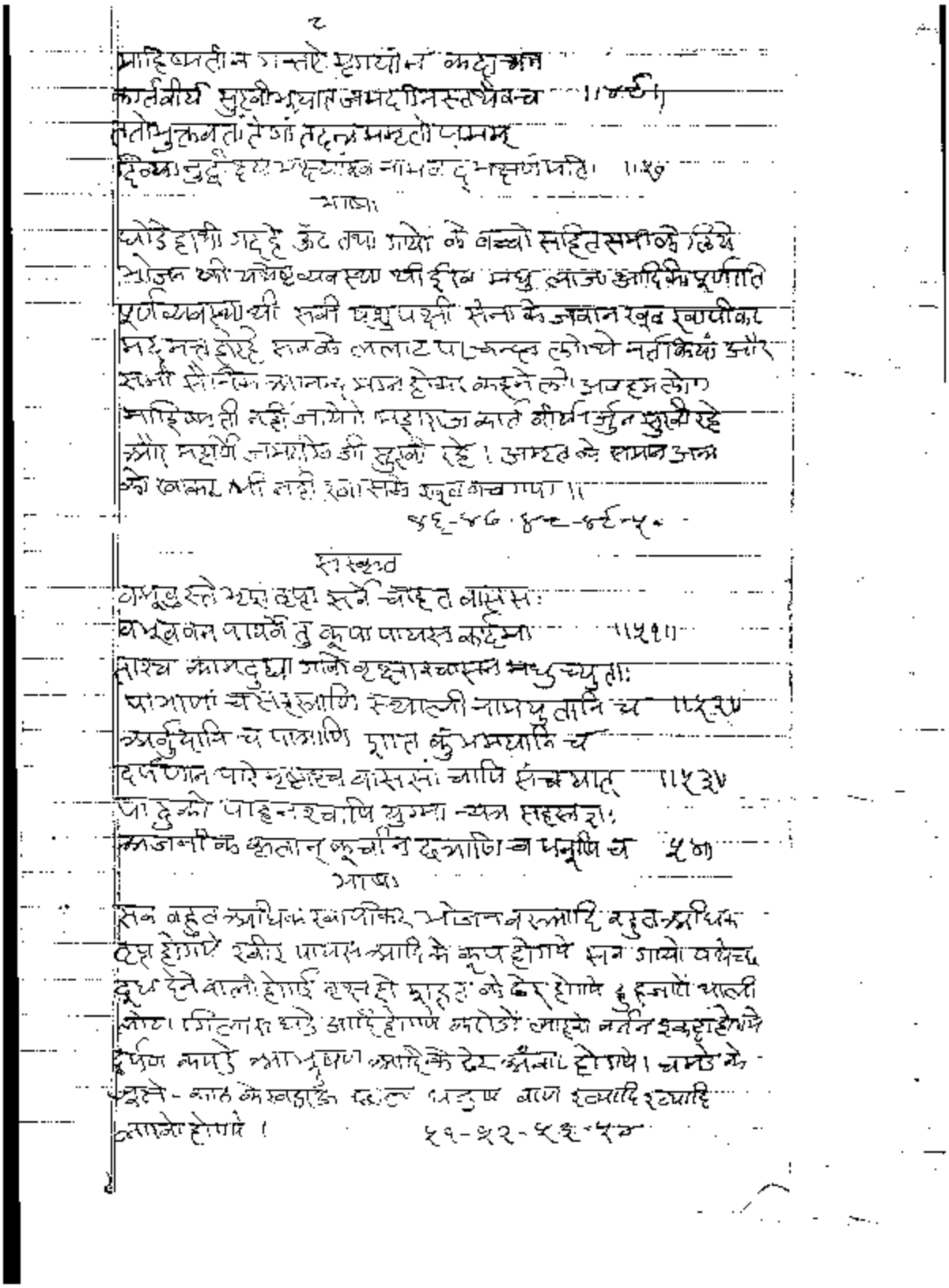

८

सर्वत्राणि च चित्राणि शयनास्यासनानि च
व्यस्यन्ति मनुष्यास्ते स्वप्नकल्पं तदद्भुतम् ॥५५॥
दृष्ट्वातिथ्यकृतं तादृक् कार्तवीर्यस्य भूपते
इत्येवं रममाणानां देवानामिव नन्दने ॥५६॥
जमदग्न्याश्रमे रम्ये सा रात्रिर्व्यजनत
प्रातिजामुश्च तानद्यो गन्धर्वाश्च यथागतम् ॥५७॥
जमदग्निमनुज्ञाप्य तास्च सर्वा जरांगनाः
ततस्तां रजनीं व्युष्य - कार्जुनः सपरिच्छदः ॥५८॥
जमदग्निं कृतातिथ्यो नाना दिभि जगाम ह
तमृषिः पुरुजं व्यार्थं प्रेक्ष्य प्राञ्जलिनागतम् ॥५९॥
हुताग्नि होत्र राजानं जमदग्निर्व्यमानयत्
क्वचिद्व सुखो रात्रि स्तवास्माद्विषये गतः ॥६०॥

भाषा

महाराज कार्तवीर्यजी के लिये आतिथ्य का साज सामान देखकर ऐसा लगता था कि जैसा देवों का नन्दनवन में होता है। ऋषि जी के आश्रम में वह रात्रि पूर्ण सुख विलास पूर्वक बीती ॥ प्रातः काल में वह सब ऐश्वर्य की वस्तुयें गन्धर्व अप्सरायें आदि जहाँ से आये थे वहाँ चले गये॥ नृत्य किया नारांगनायें आदि भी प्रातः काल में जिनों के साथ मुनि जी को हाथ जोड़कर अपने अपने स्थानों को चली गई। यज्ञशाला में ऋषि जी को हाथ जोड़ कर राजा ने प्रणाम किया। श्रीमहर्षि जी ने पूछा आज सभी प्रेमी जनों की रात्रि आनन्द पूर्वक बीती?

श्लोकार्द्ध

सम्प्रस्तास्ते जना: कार्त्वातिथ्येषु समेनच
तमुवाचाञ्जलिं कृत्वा कार्तवीर्यो प्रणम्य च ॥६२॥
भगवन्ते प्रसादेन संतुष्टा: सर्व एव हि
त्रैलोक्याद्धि कंसौ व्यं मन्महे भाग्यचोदनम् ॥६३॥
सप्तद्वीपाधिपत्यं मे वाहुकं धन संग्रहम्
गृहं मे धन धान्याढ्य दासी दास समान्वितम् ॥६४॥
तथापि एष ब्रह्मन् कार्दीया भाग्य नाशि भि:
अद्भुतं वै यथा दृष्टं मुनीनां स्वतपः फलम् ॥६५॥

भाषा

कहा आप के परिजन लोग हमारे सत्कार से प्रसन्न हुए। इस बात को सुन कर महाराज अर्जुन ने हाथ जोड़ कर ऋषि जी से कहा भगवन्! आप की कृपा आशीर्वाद से हमारे सभी सैनिक अत्यन्त संतुष्ट हुए मैं लोक से अधिक सुख कामधेनु जी की कृपा से हुआ मैं सात द्वीपों का स्वामी हूँ घर में अतुल धन संपत्ति है दास दास अन्न धन धान्य से परिपूर्ण मेरा घर है फिर भी आप के आश्रम में अद्भुत सुख ऐश्वर्य आप तप प्रभाव से देखा (कामधेनु जानिए) वैसा हमारे यहाँ नहीं है। ६१- ६२- ६३- ६४

संस्कृत

मुनिर्हे प्रीतिं तुल्या रक्षणीयो हि ईदृशि
श्रोतव्य प्राप्तम् काम: कामधेनु पुरोदय तम ॥६५॥
आर्यादि बहवो लोका: अन्यो देव किन्नरा:
मनुष्यपशवो नागा तेषा काम विधास्यति ॥६६॥
निरपेक्षी भवान साधु कन्द मूल फलाशना:
विनान येन कामस्ते फलिष्यन्ति तपस्विन: ॥६७॥
देहि मे कृपया ब्रह्मन् प्रार्थना सफला मम
ततो सर्वान्वेदमिति श्रृणु राजन महामते ॥६८॥
साधका ज्ञानि हीन स्य देव पित्रर्थ साधका
कामधेनुरदेया मे गम्यतां स्वगृहं प्रति ॥६९॥

भाषा

हमारे ऊपर आप की बड़ी कृपा है, यदि इसी प्रकार कृपा बनी रहे तो हमारी आप से एक प्रार्थना है हमारी प्रार्थना आप को अवश्य सुनना चाहिये वह यह कि कामधेनु हमें दे दीजिये बहुत से लोक देवता किन्नर मनुष्य पशु नाग इत्यादि जो हैं इसके द्वारा आप तो निरपेक्षी हैं महात्मा हैं कन्द मूल फल आदि का भोजन करते हैं इस कामधेनु के बिना ही आप तपस्वी महात्माओं का काम हो जाये कृपया हमें इस कामधेनु को दे दीजिये। महाराज की इस बात को सुन कर जमदग्नि जी ने कहा राजन्! हमारे अग्निहोत्र का साधन देव पितृ कार्य

११

आपसे हमारी यह कामधेनु है इसे हम नहीं देसकते हैं आप
कृपया अपने घर वापस चले जाइये इसीमें आपका कल्याण
होगा — ६५- ६६- ६७- ६८- ६९

संस्कृत

इति रुक्मा महीपालो याच्ञां भंगा मतर्कयत
क्रोधाविष्टो नरपतिः धेनुं कर्तुं समुद्यत ॥६०॥
इति भानी नृपे दर्पात्- नरान् हर्तुमचोदयत्
तेच माहिष्मतीं निन्युः सवत्सां क्रन्दतीं बलात् ॥६१॥
महर्षिः परम धर्मज्ञः तस्य तत्कर्म चिन्तयत
सस्मार रामं स्वसुतं शिव लोक गतं हरिम् ॥६२॥
सोऽपि पितुरादेशं श्रुत्वा तत्राजगाम ह
मातरं पितरं भ्रातॄन् नत्वा कार्यमपृच्छत ॥६३॥
कथयामास वृत्तान्तं राजन्याऽगमनादिकम्
सत्कारं राजसाहस्र्य ततो सत्कार पालनम् ॥६४॥
इत्थं श्रुत्वा ततो रामः स्वावतार प्रयोजनम्
स्वायुधस्य पदप्राप्तिं चिन्त्य यामास धर्मतः ॥६५॥
अतिथ्यं श्रृणु याज्ञस्तु नरो भाव समन्वितः
इन्द्र सौख्य मवाप्नोति मोदते दिवि देववत् ॥६६॥
इति श्री वायुपुराणे माहिष्मती माहात्म्ये एकादशोऽध्यायः ॥

भाषा

राजा ने दो तीन इस बार दोहराया कि कामधेनु हमें दे दीजिये
याचनाको भंग समझकर क्रोधित होकर आगे की सोचे कामधेनु
को जबरदस्ती छीनने के लिये नौकरों को संकेत किये वे नौकर
बछड़े को रोते चिल्लाते लेकर माहिष्मती नगरी को चले गये
परमधर्मात्मा महर्षि जीने अपने प्रिय पुत्र श्री कैलाश गये
हुए थे स्मरण किया राम भी पिता जी की आज्ञा से झट पट आगये
राजा के आने तथा सत्कार आदि की बातें बताये यह सुनकर
राम अपने अवतार का प्रयोजन समझकर अपने आयुधों
की प्राप्ति की चिन्ता किये सब हाल सामने आगये राजकथा को
जो सुनता है वह स्वर्ग में इन्द्र सुख पाता है देवताओं के समान
श्रीवायुपुराणे माहिष्मती माहात्म्य का ग्यारवाँ अध्याय ॥

९२

अथ द्वादशोऽध्यायः

संस्कृत

अथ राजनि निर्याते रामः आश्रमात्तदा
श्रुत्वा तत्तस्य दौरात्म्यं चुक्रोध हरिनाहत ॥१॥
घोरमादाय परशुं सतूणं चर्म कार्मुकम्
अन्वधावत दुर्धर्षो मृगेन्द्र इव यूथपम् ॥२॥
तमापतन्तं भृगुवर्यमोजसा
धनुर्धरं बाणपरश्वधायुधम्
रणेऽप्रतिद्वन्द्वमरं कर्मधामभि
युतं जटाभिर्ददृशे पुरीमिव ॥३॥
अथोदयन्तं हरितं रथं श्वेतैर्हयोत्तमैः
गृहीतशार्ङ्गाजिनिषु शरधीभ्यां च लक्षितम्
अक्षौहिणीं साधु दधाति भीषणां
तां राम एकां ददृशे तिरोहितः ॥४॥
समाप्य तां च बहुधा नानाभूषणभूषितां
रथोपस्थे बहुसाहस्रे ययुयुद्धुमरिन्दमः ॥५॥

भाषा

महाराज अर्जुन के चले जाने पर परशुरामजी आश्रम में आ गये। राजा के दुर्व्यवहार को सुनकर अत्यन्त क्रोधित होकर घोर परशु धनुष बाणों से भरे तरकस को दौड़ पड़े जिस प्रकार शेर हाथियों के पीछे दौड़ पड़ता है। भृगुवंशी परशुजी तेजी से दौड़ते हुए धनुष परशु मृग चर्म जटाओं को धारण कर मानो प्रदीप्त अग्नि पुंज से आये युद्ध के लिये अलंकार हाथी घोड़ा रथ पैदल गदा तलवार शतघ्नी (बन्दूक) शक्ति इत्यादि अस्त्र शस्त्रों से सज्जित सत्रह अक्षौहिणी सेना युद्ध करने को तैयार होगई उनके अलावे आभूषण वस्त्र आदि लिये हुए तैयार सैनिकों

संस्कृत

दिव्याम्बरधरा योधा गर्जमाना यथाम्बुदाः
दृढ्यधोणैश्च चाकम्पन्नो वसुन्धराम् ॥६॥
दिव्यायुधधरा योधा दिव्यमाल्यानुलेपनाः
दिव्यैश्च मानवैर्नद्धा दिव्यैश्चैनो च्छ्रितैर्ध्वजैः ॥७॥

73

संचालयन्तो नादेन त्रैलोक्यं सदेवमानवम्
गोमुखाश्च खराणां च भेरीणां मुरजैस्सह ॥८७॥
झल्लरी डिंडिमानां च शंखानां च महास्वनः
प्रवृत्ते युद्धे यत्तस्य तुमुलो लोमहर्षणः ॥८८॥

भाषा

योद्धाओं के दिव्य वस्त्र धारण किये थे बादल के समान गर्जना कर रहे थे। बहुत कोलाहल होने के कारण से सारी पृथ्वी कंपायमान हो रही थी। सैनिकगण दिव्य अस्त्र शस्त्र लिये हुए दिव्य वस्त्र पहिने हुए तथा सुन्दर दिव्य चन्दन लगाये हुए थे दिव्य वस्त्र पहिने हुए थे दिव्य ध्वजायें रथों पर फहरा रही थीं। चलते हुए शब्द त्रैलोक्य गूँज जा रहा था। गोमुख खर भेरी मुरज झल्लरी और शंख ध्वनि हो रही थी प्रवृत्त हुए युद्ध पर लोम हर्षण अर्थात् अत्यन्त भयंकर हो गया।

५-७-८-९

संस्कृत

रणप्रवृत्ते महानादे स्वर्गाय शूरसंमते।
तन्नादं निर्दहाणश्रुत्वा युद्धं संदृशिनोटसुरा ॥९०॥
सतक्रतुं पुरस्कृत्य आजग्मुर्मेघ मन्तरे
तमन्वगुस्सुरा दिव्या विश्वे देवाः सहर्षणाः ॥९१॥
वसवोऽश्वौ तथारुद्रा यक्षरक्षो महोरगाः
विद्याधराः किन्नराश्च गन्धर्वाप्सरसां गणाः ॥९२॥
महर्षयश्च सौ कारस्य यमो वैश्रवणादयः
येच सिद्धा महात्मानः पितरश्च मनस्विनः ॥९३॥

भाषा

रणप्रवृत्ते महानादे शूरों के लिये स्वर्ग देने वाला है। उस युद्ध के घोर शब्द सुनकर युद्ध देखने की इच्छा से रण भूमि के अन्तरिक्ष में आये इन्द्र को आगे करके मेघों के अन्तराल में आये उनके पीछे आदित्य गण, विश्वेदेव, मरुद्गण, अश्विनीकुमार, वसु, रुद्र, यक्ष, राक्षस, सर्प, विद्याधर, किन्नर, गन्धर्व, अप्सरायें, समुद्र, पर्वत, यम, कुबेर आदि सिद्ध गण, पितृगण, तपस्वी गण सभी युद्ध देखने आये। ९०-९१-९२-९३

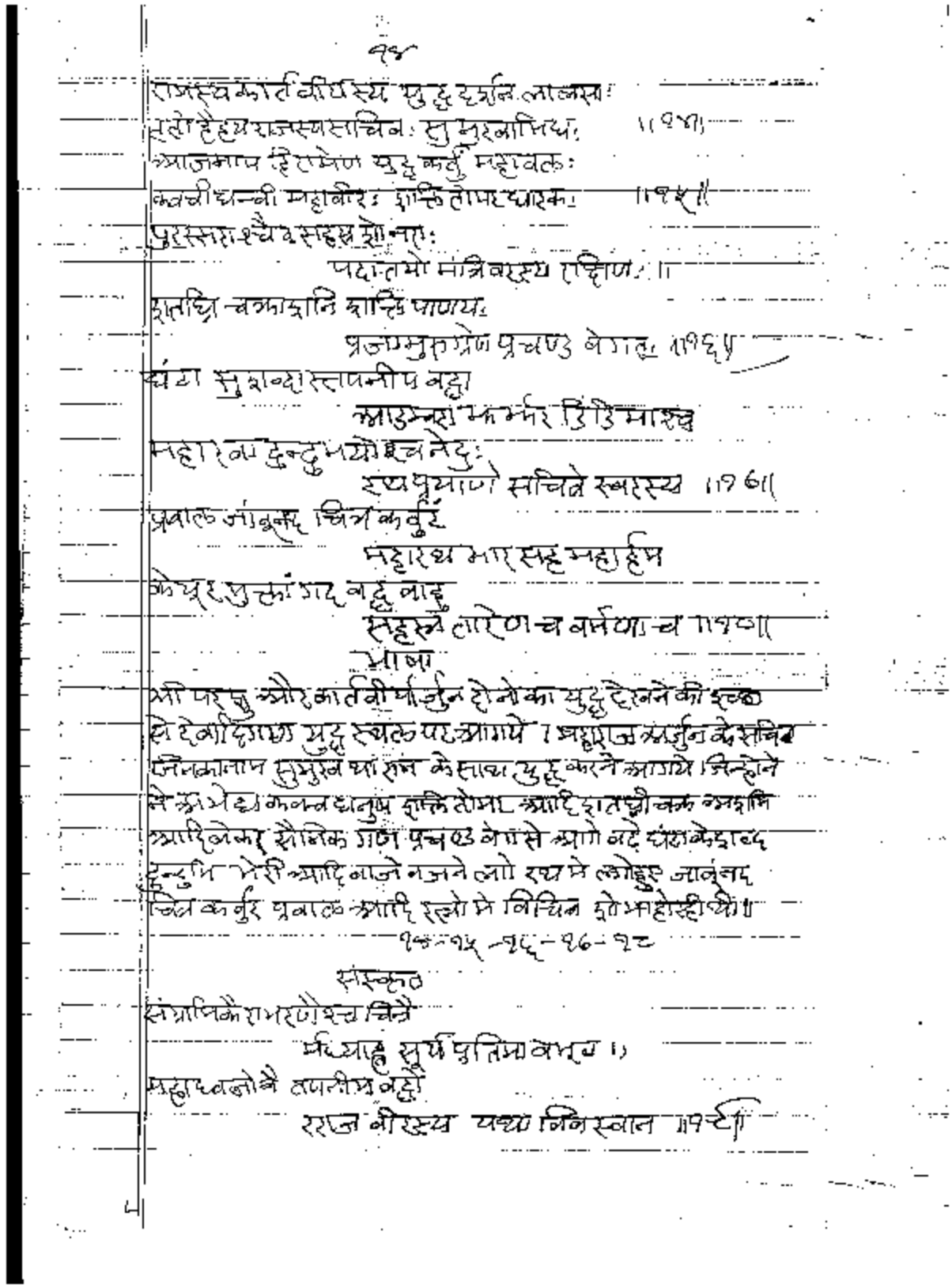

९४

राजस्य कार्तवीर्यस्य युद्धदर्शनलालसः
सुतो हैहयराजस्य सचिवः सुमुखाभिधः ॥९४॥
आजगाम हि रामेण युद्धं कर्तुं महाबलः
कवची धन्वी महावीरः शक्तितोमरधारकः ॥९५॥
पुरस्सराश्चैव सहस्रशोनाः
पदातयो मन्त्रिवरस्य दक्षिणः ॥
शतघ्नी चक्रशक्तीनि शक्तिपाणयः
प्रजग्मुरग्रेण प्रचण्डवेगात् ॥९६॥
घंटा सुशब्दास्तपनीयवद्धा
आडम्बरा भेरिडिंडिमाश्च
महारवा दुन्दुभयोऽथ नेदुः
रथप्रयाणे सचिवस्य ॥९७॥
प्रवालजांबूनदचित्रकर्बुरं
महारथं भारसहं महाहयम्
केयूरमुक्तांगदबद्धबाहु
सहस्रशो लारेण च वर्मणा च ॥९८॥

भाषा

श्री परशु और कार्तवीर्यार्जुन दोनों का युद्ध देखने की इच्छा से देवादिगण युद्ध स्थल पर आगये। महाराज अर्जुन के सचिव जिनका नाम सुमुख था राम के साथ युद्ध करने आगये। जिन्होंने से अभेद्य कवच धनुष शक्ति तोमर आदि शतघ्नी चक्र शक्ति आदि लेकर सैनिक गण प्रचण्ड वेग से आगे बढ़े घंटा के शब्द दुन्दुभि भेरी आदि बाजे बजने लगे रथ में लोहे जांबूनद चित्रकर्बुर प्रवाल आदि रत्नों से विचित्र हो आ होरही थी॥

९४-९५-९६-९७-९८

संस्कृत

संग्रामिके रामरणे च चित्रे
मध्याह्न सूर्य प्रतिमा बभूव ॥
महाध्वजो वै तपनीयबद्धो
रराज वीरस्य यथा निस्वान ॥९९॥

२५

तस्योच्छ्रितः काञ्चन वेदिकायां

विराजती दिव्य महा पताका

विचित्र शोभा ह्यतु दुःप्रतेक्ष्य

सहस्र रश्मेः प्रतिमा बभूव ॥२७॥

लक्ष्यशीति सहस्राणि रथानां चित्र योधिनाम्

द्विपंचाशत सहस्राणि दन्तिनां युद्ध तेजसाम् ॥२१॥

अश्वानां वायु वेगानां नि लक्षाणि समाययुः

त्रयो लक्ष पदातीनां कृत धर्माणि धारिणाम् ॥२२॥

अन्यु जग्मु रक्षयाला कार्तवीर्यस्य शासनात्

सर्वे कालान्तक प्रख्या वीरा समा दुर्जया ॥२३

भाषा

~~[illegible] विचित्र प्रकार कौशल पूर्वक~~

भाषा

ऊँची स्वर्ण वेदी पर दिव्य पताका उड़ रही थी, विचित्र शोभायमान दृश्य भगवान सूर्य की प्रतिभा के समान था। अस्सी हजार रथ विचित्र प्रकार कौशल पूर्वक लड़ने वाले थे। सौ हजार पचास एक लाख हाथियों की सेना थी वायु के समान चलने वाले घोड़ों की संख्या तीन लाख थी और दश लाख पैदल सिपाही लड़ने वाले थे कार्तवीर्य अर्जुन की आज्ञा से सब युद्धस्थल में युद्ध करने आगये जो कि महाकाल के समान दुर्जय वीर थे २७- २१- २२- २३

संस्कृत

आयसैः मार्गणैश्चैव सन्नद्धा मानिनः।

तत्रे राम समाहूय च युद्धं चक्रुर्महाबलाः ॥२४॥

बाणैः सुतीक्ष्णैः स्तीक्ष्णैः पत्रैः बाणैः दुरासदैः

मुद्गरैः मुशलैः शूलैः वज्रैः रक्षानि कल्पनैः ॥२५॥

खड्गैः शक्ति भुशुण्डीभिः स्तोमरैः निजिघायुधैः

तथा प्रवर्तितं तेषां विनर्देदभुत विक्रमे ॥२६॥

राम शक्तिहतं क्रोधो प्रज्वलन्निव तेजसा

शोणयामास बाणौघैः कीर्तिमेरिवाण्डजः ॥२७॥

१६

भाषा

लोहे और स्वर्ण निर्मित कवचों को पहिने हुए सैनिक गण पशु
रामजी के सम्मुख युद्ध करने को तूणीर से बाणों से प्रहार करते तथा
युद्ध करने को तथा बिजली के समान चमकीले हाथों
में शक्ति (भुशुण्डी (बन्दूक)) तोमर तथा अपने काम के विचित्र
शस्त्रों से युद्ध करने को शस्त्र धारियों ने परमश्रेष्ठ रामजी
ने प्रज्वलित तेज शस्त्रों से सूर्य की किरणों के समान शस्त्रों से
शत्रु सेना को छुपाये। २४-२५-२६-२७

संस्कृत

यतो यतो ऽसौ प्रहरत वरिष्यथे
ततो ततो निलौजस पत्रक्रसूदन।
ततस्तत दिव्य प्रजोहु कन्धर
निपेदु र्व्यो हव सूत वाहना ॥२४५
ततो मन्त्रिवरकुद्धः शक्तिं चिक्षेप भास्वतीं
अस्मि पुत्राय रामाय रात्रौ ऽ ग्नि निवाद्रये ॥२६॥
हताया मेव शस्त्रास्त सुमुखो मन्त्रि सत्तम
आगत्य तन निर्दिष्ट खड्ग आशीविष निवोगम ॥३०॥
तं गृहीत्वा रणमुखे प्रज्वलन्तं महाप्रभम्
आमदग्न्योपि तं दृष्ट्वा सन्धु बाणान समाधत्ते ॥३१
आकर्ण पूर्ण श्चिक्षेप शरान्नुग्रान महाबल
चतुर्भिश्चतुरो वाहान ध्वजं केन तारयिम ॥३२
तथैकेन रथं छित्वा ननाद भृगु नन्दनः
निहन्तुं भार्गवं दृष्ट्वा सुमुखं क्रोध मूर्छितः ॥३३॥

भाषा

जहाँ जहाँ वायु के भवन वेग से कमलों के चक्र नष्ट चमकते थे तब तब
भुजा कन्धा उरु इत्यादि कट कट कर गिरते थे। पृथ्वी पर
सूत और वाहन पृथ्वी पर गिर पड़ते थे। मंत्री प्रवर क्रोधित
होकर राम के ऊपर इन्द्र का वज्र चलाते जैसे पहाड़ पर वज्र के
गिरने के समान था फिर रजत वाला लेकर दौड़े फुफकारते
सांप के समान परशुराम ने भी यह देख कर सात बाण मारे
कान तक धनुष को खींच कर चार बाणों से चारों घोड़ों को

१६

मार डाले एक बाण से सातों को मार गिराये एक ही बाण से
रथ को टुकड़े टुकड़े कर दिये। इस प्रकार जोरों से गरज रहे हुए
शैतान परशुराम जी को देखकर अत्यन्त क्रोधित हो गया॥
३२-३३-३४-३५-३६

संस्कृत

प्रहृति रथ्रमाहृत्य रामं मन्त्र पतद्रुषा
तमायान्त समालोक्य नर्तयन्निव पावकम् ॥ ३३ ॥
निषंगाच्छर मुद्धृत्य रुक्मपंख मकंकृताम्
दृढ्याच प्रयुक्त्वं वै रुक्मानं सप्तपमम् ॥ ३४ ॥
सचिवाय स चिक्षेप रेचराणांच पश्यताम्
तेनबाणेन शिच्छेद शिरो ज्वलित कुण्डलम् ॥ ३५ ॥
सासि हस्तं च विपत्य तद्दभुत चिवा भवत
राम प्रशंसिरे देवा पुष्प वृष्टिश्च चक्रिरे ॥ ३६ ॥
अप्सरो भिर्विमानेन गृहीत्वा मंत्रि सत्वरम्
छत्र चामर संयुक्त दिव्य रूपं मनोहरम् ॥ ३७ ॥
गृहीत्वा रण मध्येतु जगाम दिवमाशु।
सुमुखस्य तु सा सेना छिन्नाभिन्ना पधाविता ॥ ३८

भाषा

मंत्री ने दल ही सहित लेकर क्रोध पूर्वक मारने को दौड़े।
आते हुए यमराज के समान आता हुआ देखकर तरकस से तेज
जड़ित बाण को निकालकर धनुष पर चढ़ाकर अग्नि तुल्य बाण
को मार दिया आकाश चारी देखते देखते मंत्री के कुण्डल सहित
सिर को काट दिया तेजवान वाला हाथ उड़ा दिया गया इस अद्भुत
दृश्य से देवगण परशुराम जी के ऊपर प्रसन्नता पूर्वक पुष्प वर्षा करने
लगे अप्सराओं ने मंत्री प्रवर सुमुख को विमान में बैठाकर
छत्र चामर युक्त दिव्य मनोहर मंत्री जी का स्वर्ग में चले
गये। मंत्री जी की सारी सेना छिन्न भिन्न होकर भाग गई
३३-३४-३५-३६-३७-३८

संस्कृत

हत शेष: पुनर्जेतुं रामानं प्रति भार्गव
कार्तवीर्योऽपि सचिवं हते श्रुत्वा सिकोनिदम् ॥ ३९ ॥

१८

स्वयं जगाम ससुतः ससैन्यो भार्गवं रणे
रथ वाजी समायुक्तं गजराजेन शोभितम् ॥४०॥
रथं समास्थाय महापताकं महाध्वजं मेघ गंभीरनादम्
आदित्य वर्णं विरजं स चौतं ब्रह्मा स्वयं निर्मित मीश्वार्थम् ॥४१॥
जालैश्च जांबूनद दिव्य चित्रै रलंकृत कांचन दामभिश्च
सकूबरो यस्क बन्धुरं सुरत्न विद्युत्प्रभाभि कृतमाभितम् ॥४२॥
कैलास शृंगोपम मादियानं सुचारु चारु प्रति चक्र चक्रम्
आस्थाय भास्वर माशु वेगं सदश्व युक्त रथमिन्द्र तुल्य ॥४३॥
आमुच्य वर्माथ सहस्र तारं हुताशना दित्य समप्रभावम्
सूर्य प्रभाञ्च मुमुचे किरीट माल्यं च जांबूनद वैजयन्ती ॥४४॥
क्षीरो दधि क्षोभ समुत्थितानि पुरा च कारे त्तम भूषणानि
देवासुराणां श्रम निर्जितानि सोमार्क नक्षत्र तडित्प्रभानि ॥४५॥

भाषा

भार्गव भगवान परशु राम जी से लडने के लिये कार्तवीर्य जी अपने पुत्र के साथ स्वयं युद्ध करने गये, रथ घोडे और हाथियो की सेना के साथ में स्वयं के रथ के ऊपर बहुत बडी पताका फहरा रही थी जो आदित्य के समान प्रकाशमान ब्रह्मा देव द्वारा बनाई हुई थी, सोने की जाली से अलंकृत रथ संपूर्ण स्वर्ण से मढ़ा हुवा था ॥ रथ का शिखर कैलाश पर्वत के समान था सहस्र तारो वाला कवच को धारण किया जो अग्नि और सूर्य के समान थे जिसमे से धूप मे खडे रथ पर सूर्य की ज्वाला निकल रही थी किरीट और वैजयन्ती माला अत्यन्त प्रकाशमान थी क्षीर सागर के समान सफेद रंग के मालाये गले में लटक रही थी देवासुर संग्राम से प्राप्त सोम नक्षत्र के समान चमक देने वाली थी

संस्कृत

तै र्भूषितं भाति सहस्र बाहु रुच्चोत्यन्तै र्विदिशो दिशश्च
स्तुवन्ति यान्तं विपुलं वचोभि जयाशिषै र्चार्जित सत्व वीर्यः ॥४६॥
सहस्र बाहु स्सशरं स चापं रक्ताम्बर रक्त किरीट कुण्डलम्
प्रहृष्टदा शक्ति समन्वितं च दिवि स्थिता देवगणा प्रतुष्टुवु ॥४७॥
दद्दर्श राजो निजितेन्द्रियश्च धर्मे रतः सत्ययशो नसूर्यः
स्थितो गतश्चांबुदवायु कल्पो रुपीयथा सर्वहरः कृतान्तः ॥४८॥

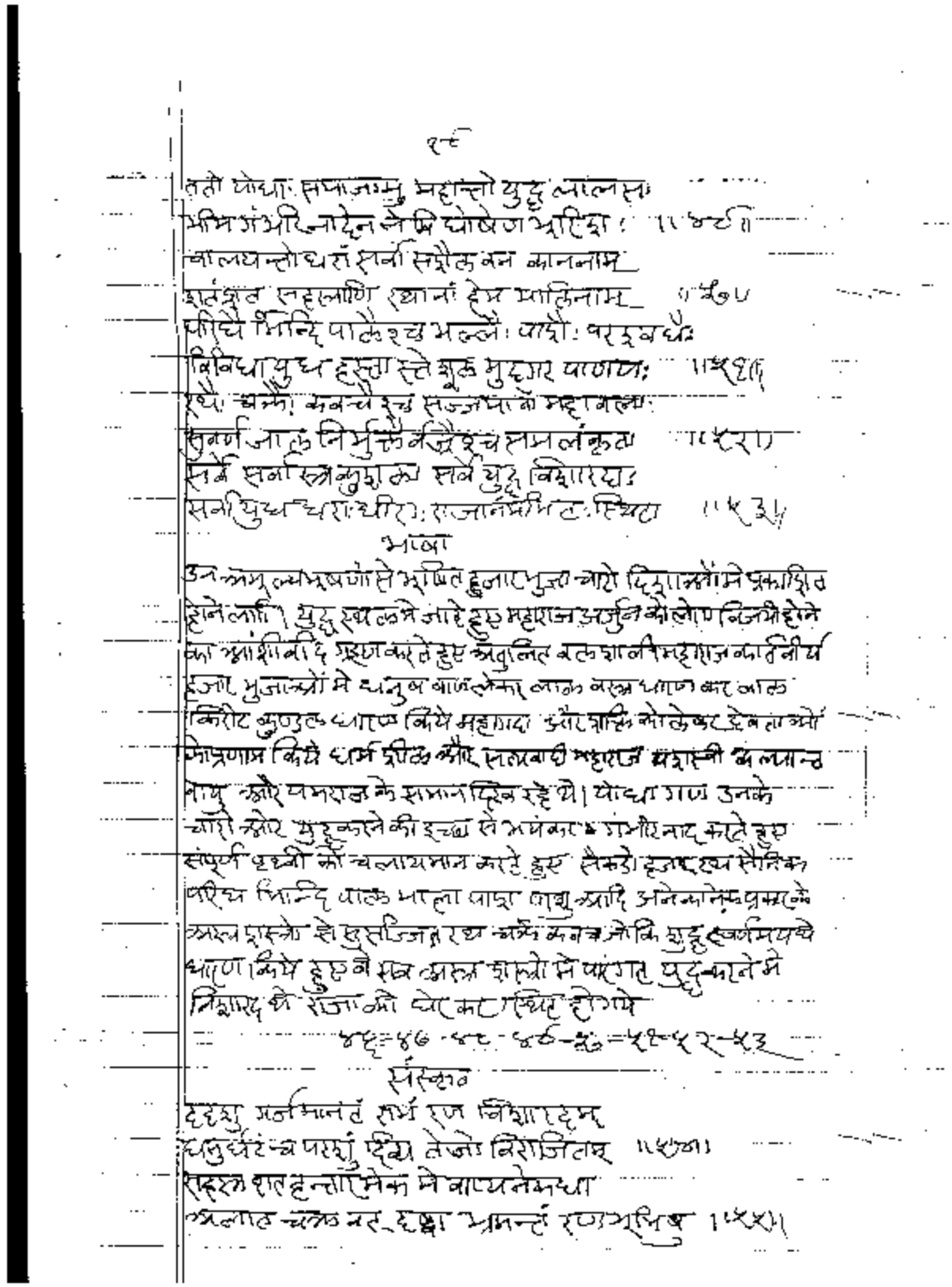

२०

प्राधान्यपथन बहु निर्घोष भेरी गोमुख डिंडिमान
सिंह नाद प्रकुर्वन्तो युयुधु भारवि रण ॥ ५६ ॥
नायोभिरसि भिर्हि शतघ्नीभि र्भुशुण्डिभि:
धनु श्च्युतै: शरै स्तीक्ष्णै: रामं शक्तिभि रावृणोत् ॥ ५७ ॥
वैष्णव रणमध्य स्थो धनु: सज्यमथा कोत्
राम बाण च्युतै र्बाणै: प्राच्छादत दिशो दश ॥ ५८ ॥
रुद्रमजातै रिनार्कस्य वितमं साम्बं जगत
तेन शस्त्राणि तेजांसि छित्वा चांगानि वाचयु ॥ ५९ ॥
शोणित किन्नं मुकुटं गैरिकान्त इवाद्रय:
ते भिन्न मार्गा स्थि भुजा यतंगा भाति भूभुज ॥ ६० ॥

भाषा

रण विशारद परशुरामको गर्जते हुए धनुष बाण और परशु हाथ मे लेकर दिव्य तेज युक्त कालांत चक्र के समान घूमते हुए हजारो हजार से अकेले ही युद्ध करने वाले रणभूमि मे चमक रहे हैं ॥ अनेक प्रकार के रणबाजा भेरी गोमुख आदि के शब्द गूँज रहे हैं सिंह नाद करते हुए भारवि शिरो मणि परशु राम की गदा तलवार शक्ति धनुष आदि से घिर गये हैं युद्ध के मैदान मे वैष्णव धनुष को सज्जी (चढ़ाना) करके बाणो के जाल से सूर्य रश्मि के समान आकाश को ढंक लिया उनके शस्त्रों के तेज से शत्रुओं के पुतले छिन्न भिन्न हो रहे हैं सैनिकों की भुजाये कांतियो के समान, सर्व स्थलो को काटकर जमीन पर फैल गई है ॥ ५४-५५-५६-५७-५८-५९-६०

संस्कृत

तपूरश्चरथ मातंग योधांगे भया पलत्यधा
तत: प्राणतदनधी रौद्र रूपा भया नहा ॥ ६१ ॥
वसनन्तौ रणरक्तं भीरुणां भय वर्धनम
तथापि युयुधुर्योधा स्तान धर्म निरपेक्षया ॥ ६२ ॥
पाशा तोमर नाराचै शक्ति खड्ग परश्वधै
सुवर्ण निकषै रुचावि गदा मुद्गर पट्टिशै: ॥ ६३ ॥
एको ऽपि रामो बहुधा चिच्छेद घोरमाणि सैनिकी:
कनकांगद केयूरै मणय इव सनुण्डकै: ॥ ६४ ॥

२१

सनुवै इहादिता भूमि हाथै निछैक रथ शोभनै।
पतितै रथ विदै रथ शतशोय सहस्रशः ॥६५॥
रथ धजा श्चादि सनी गज बाजि गणा नरा।
प्रत्यथिकल सनीजो पतिता धरणी तले ॥६६॥
द्रोण पाडु पुत्राश्चासन अर्जुन द्रारणार्थिन।
कार्तवीर्यो ऽपि तान् दृष्ट्वा भागान् राम स्य वीर्यतः ॥६७॥

भाषा

रथ हाथी तथा अस्त्रादि से योधाओं के कटे हुए अंगों से इधिर की नदी बह चली जो कि डरावनी भयंकर दिखती थी, युद्धस्थल में रहते हुए एक से डरे लोक जनों को भय हो रहा था तिसपरभी सैनिक गण शस्त्र धर्म के जानने वाले थे। तोमर अंकुश शक्ति खड्ग परशु आदि शस्त्रों से निर्भय होकर युद्ध कर रहे थे सोना लगा हुए शस्त्रों से युद्ध कर रहे। श्री परशु राम जी अकेले ही सब लोगों के अस्त्र शस्त्रों को काट काट पृथ्वी पर उन लोगों के मुकुट हार मणियों का भूषण गिर रहे थे सैकड़ो हजारो हजारो रथ घोड़े हाथी आदि के साथ क्षत्रिय गण धराशायी हो रहे थे जो बचे थे वे भागकर महाराज अर्जुन की शरण में जाना इच्छा कीजिये अर्जुन उन लोगों को परशु रामजी के प्रताप से भयभीत हुए देखे

६१-६२-६३-६४-६५-६६-६७

संस्कृत

अनुवाच महावीरो योधा श्रृणुत मेवच
क्षत्रियस्य न्यथा नोऽ मं रणभूमेः पलायनम ॥६८॥
दौ मृत्यु संगतौ पुंसां भवतो रण तीर्थयोः
क्षत्रियस्य रणे श्रेयां गृहे हानिकरः परः ॥६९॥
निवृत्तध्वं मते योधाः गच्छध्वं राम मग्रतः
कुरुध्वं युद्धमतुलं गन्तारो परमुत्तमम् ॥७०॥
स्वस्वामी वचनं श्रुत्वा जगतः राम संमुखम्
युद्धकामो नरपतिः हर्षितोऽभून्महामनाः ॥७१॥
रामवीर्य मिदं श्रुत्वा मत्वा च सुसमाहितः
विजयं प्राप्नोति सर्वत्र भार्गवस्य प्रसादतः ॥७२॥

२२

इति श्री वायु पुराणे माहिष्मती माहात्म्ये
द्वादशोऽध्यायः।

भाषा

महाबली श्री कार्तवीर्यार्जुनने युद्धसे भागे हुए सैनिकों
से कहा कि "बैठो रणांगनको। मेरी बात आप लोग
सुनिये क्षत्रियोंका धर्म रणक्षेत्रसे नहीं भागने का है। मृत्यु होना
तो अवश्य है रणभूमि में क्षत्रिय का मरना सर्वश्रेष्ठ है।
घरपर मरना नरक होता है इसलिये आप लौट जाइये
परशुराम के सम्मुख होकर युद्ध कीजिये यह आप लोगोंके
लिये मोक्ष दायक होगा। अपने स्वामी के इस जोशीले व्याख्यान
को सुन कर सब प्रसन्न होगये युद्ध में पुनः जाने को तैयार होगये
श्री परशुराम जी की इस शौर्य वीर गाथा को जो कोई सुनता
है वह भगवान भार्गव परशुराम के प्रसादसे सर्व
विजय लाभ करता है। ॥ ६८-६९-७०-७१-७२
श्री वायु पुराण में वर्णित माहिष्मती माहात्म्य का बारहवाँ
अध्याय समाप्त हुआ

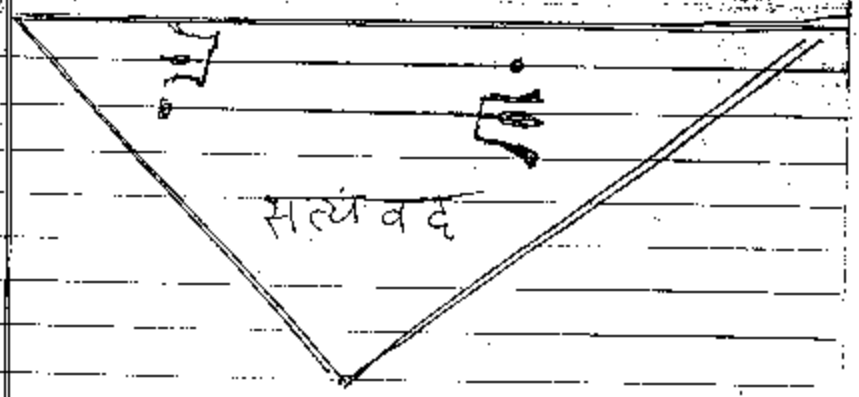

३३

अष्टत्रिंशो दशोऽध्यायः

सूत उवाच :--- सूतजी ने कहा ।

रथस्थितो नरपतिर्न भौ सूर्य इवांशुमान्
सर्वं सैन्य समादाय रामं योद्धुमुपायथौ ॥१॥

तौ ब्रह्म निर्दोष इव नमस्य मानौ
सपूज्य मानौ सुरसिद्धसंघैः ॥

गन्धर्व संघै रनुगीय मानौ
रामार्जुनौ लोकविधान मापतुः ॥२॥

ततः प्रवृत्तो द्विजराजविग्रहः स्तदा
दभुतो भाति सुरा सुराकुलः ॥

वेला मतिक्रम्य युगान्त कालि
महार्णवा वोन्योन्य मिवाभ्यवर्त्तन्त ॥३॥

नृपस्य योधाः सुविदीर्घ तांगा
महाबला व्यायत कार्मुकास्ते ॥

रणोत्सुका वारण हस्त तारुच
सुदुर्जयास्ते घन नाद नादा ॥४॥

निस्कारयन्तः सहसा धनूंषि
चन्द्राणि चादित्य सम प्रभाणि ॥

समुद्र दिपन्तो हुताशनिश्च घोरान्
एकद्रुचते वज्र धराशतघ्नी ॥५॥

भाषा।

रथ पर बैठे हुए महाराज कार्तवीर्यार्जुन सूर्य के समान प्रकाशित हो रहे थे। सब सेना को लेकर श्रीपरशुराम जी से युद्ध करने चल पड़े। दोनों ही श्रीपरशुराम और अर्जुन ब्रह्म वेत्ताओं द्वारा पूज्य सिद्धों, पूज्य, गन्धर्वों द्वारा दोनों का गुण गान हो रहा था। जब दोनों द्विजराजों का युद्ध प्रारम्भ हुआ, वह अत्यन्त अद्भुत दृश्य हो रहा था। मानो प्रलय काल की सात समुद्र एकदम से मिल रहे हैं। महाराजा के सैनिक बड़े डीलडौल वाले अपने अपने धनुषों को खींचे हुए युद्ध की प्रबल इच्छा से मेघ समान परस्पर गर्जना कर रहे थे ॥ धनुषों को खींचते हुए गोलाकार अपने सूर्य के

९४

दिखते थे। घोड़ा नजा-रथ्य धातुर्वेद इत्यादि शास्त्रों को
लिये हुए थे ॥ १-२-३-४-५

संस्कृत

निच्छेद तानि रामोऽपि शस्त्राणि स्वशरैः पुनः
योधानां च शिरस्त्राणं करोऽक्षाणान् शिरः ॥६
दृष्ट्वा स्व सैन्यं तदिरोप्य कर्मे
रणाजिरे राम कुठार सायकैः
विवृक्ण वर्म ध्वज चाप विग्रह
निपातितं हैहय आप दुष्टा ॥७॥
अथार्जुनः पंचशतेषु बाहुभिः
धनुश्च बाणान् युगपच्च संदधे ।
रामाय रामो स्वशरैः समग्राणि
तान्येक धन्वे शुभि राच्छिनत्सम ॥८॥
एवं स्म युद्धं प्रचकार हैहयः
शस्त्रैव संधान मृषे पराजये
रामोऽपि पर्जन्य इवो मुमोच
नृपास्त्र शान्त्यै जन सौख्य हेतु ॥९॥

भाषा

श्री परशुराम जी ने अपने बाणों से उनके अस्त्रों को काट दिया
सैनिकों के कवच हाथ-शिर-पैर आदि को काट दिया। रक्त का
कीचड़ सब जगह फैल गया, जब महाबली अर्जुन ने श्री
परशुराम जी का इस प्रकार खून बहाना देखा तो अपनी पांच
सौ भुजाओं में इतने धनुष लिया बाण लेकर चारों ओर राम के ऊपर
बाण वर्षा करने लगे। अब दोनों महावीरों का भयंकर द्वन्द्व युद्ध
प्रारम्भ हो गया - अर्जुन ने आग्नेयास्त्र परशुराम पर मारा परन्तु
परशुराम जी ने उसे शान्त कर दिया ॥ ६-७-८-९

संस्कृत

वायव्य प्रमुमोचाशु पर्जन्यास्त्र च भार्गवः
नागास्त्र कार्तवीर्योऽपि गरुडास्त्र च वै मुनिः ॥१०॥

२५

गान्धर्वमथ पैशाचं नैऋतं परशुरातं तथा
ऐन्द्रं नारायणास्त्रं च ब्राह्मं ब्राह्मेन संदधे ।।१२।।
अन्योन्यं जघ्नतुर्वीरौ महद् युद्धं बभूवतुः
राम हैहययोर्युद्धं राम हैहययोरिव ।।१३।।
सप्तरात्रं बभूवेदं युद्धं दिवा शनि मर्तयोः
कुद्धे सहस्रबाहुस्तु शरैः पंचशतैः परम् ।।१४।।
जघ्नतुर्मास्त्र सर्वज्ञ सर्वास्त्रेषु पृथक् पृथक्
रामो युद्धे स्तु जग्रीव सौ रामौ निरोधनेः ।।१५।।
सहस्रबाहोर्द्विधा चच्छेद धनुः पंचशतं तदा
दृष्ट्वा तु सहस्रकर्म दिवि देवा प्रसन्न शिरे ।।१६।।

भाषा

कार्तवीर्य ने बाण व्यास्त्र छोड़ा, विरोध में परशुराम जी ने पर्जन्यास्त्र छोड़ा; एक ने ऐन्द्रास्त्र छोड़ा, तो परशुराम ने नारायणास्त्र छोड़ा एक दूसरे पर विजय की इच्छा से अस्त्र शस्त्र छोड़ने लगे, परशुराम जी और कार्तवीर्य जी का युद्ध उन्हीं के समान था। लगातार सात दिन युद्ध होता रहा।। कुद्ध सहस्र बाहु ने पाँच सौ धनुष तथा उतना ही बाण एक साथ परशुराम जी के आगे चलाया। परशुराम जी ने कुद्ध होकर सब धनुष बाणों को काट दिया। यह देखकर देवगण परशुराम जी की प्रशंसा करने लगे ।।८-१२-१३-१४-१५

संस्कृत

तत्रैव युद्धं तत्र युद्धं सूत्र युद्धं च सुदारुणम्
त्यासि युद्ध शक्तिं युद्धं नन्योन्यतो प्रचक्रतुः ।।१५।।
सर्व योध प्रधानं वाजे बाण नाशनम्
इन्द्र युद्ध मभूद्राम तत्र हैहयमोस्तथा ।।१६।।
राम परशु माहाय छापाएँ क्रोध माद्धये
चिच्छेदाय कुकोण भुजान् धनुश्च इलापरः ।।१७।।
जामदग्न्यबलं दृष्ट्वा तेजोभिर्वा मर्जुनः
स्वदैव मथोद्धस्तो जगाम शरणं हरा ।।१८।।

भाषा

चक्र, गदा, शूल और मुद्गर युद्ध तत्पर से युद्ध करके युद्ध परस्पर एक दूसरे पर विजय के लिये एक और हैहयराज का होने लगा जो कि सब प्रकार के योद्धाओं का नाश करने वाला तथा हाथी घोड़ों का विनाश करने वाला था। दोनों वीरों का द्वन्द युद्ध प्रारंभ था अब परशुराम ने अत्यन्त क्रोध में भरकर वृक्ष शाखाओं के समान अर्जुन की भुजाओं को काटने लगे। भगवान परशुराम के तेज को देख हैहयराज अर्जुन समझ गये अब हमारा अंतिम समय आ गया है अतः परशुराम से प्रार्थना

संस्कृत

चतुर्भुजान्निरस्तः तुष्टाव जामदग्न्यम्
आशिषा वर्द्धमानेन सुरर्षिगणसेवितम् ॥२०४

सहस्रार्जुन उवाच

भाषा

जब केवल चार भुजायें कटने से बच गई तब अर्जुन ने समझ कर कि अपना समय पूरा होने जा रहा उन्होंने ये प्रार्थना किया सहस्रार्जुन ने कहा कि

संस्कृत

नमस्ते पुण्डरीकाक्ष वासुदेव नमोऽस्तु ते
जामदग्न्य नमस्तुभ्यं नमस्ते विश्वभावन ॥२१॥
लोकानां च हितार्थाय सम्भूतोऽसि जगत्पते
त्वं मे भूतपतिः स्वं हि प्रभो जन्मनि जन्मनि ॥२२॥
अहं क्रोधेन बुद्ध्या वा तथा स्वं त्वादिभिर्गुणैः
त्वमेव भजतां संयोगः स्वया जन्मनि जन्मनि ॥२३॥
ब्रह्मा प्रलीयते चान्ते नष्टे स्थावरजंगमे
अमृतस्यान्धये यस्मिन् लीयते प्रकृतौ पुमान् ॥२४॥

भाषा

हे कमलनयन! आप को हमारा नमस्कार है। हे वासुदेव! हे जामदग्न्य! आप को हमारा प्रणाम है प्रणाम है। हे विश्वभावन लोकों के हित के लिये आप सम्भूत हुए हैं आप को हमारा नमस्कार है। आप ही भूतपति हो, आप ही प्रत्येक मेरे जन्म में मेरे स्वामी हो।

२७

अहंकारी बुद्धि से मैंने आप से युद्ध किया मुझे सात्विक
बुद्धि दीजिये हम प्रत्येक जन्म में आप के साथ रहे ब्रह्मा के
प्रलय पर सब स्थावर जंगम संसार नष्ट होजाता है अर्थात प्रलय
में सब कुछ नष्ट होजाता है। २१-२२-२३-२४

संस्कृत

सर्वं च लीयते यस्मिन् स मे विष्णुः प्रसीदतु
ब्रह्मा रुद्रेन्द्र वरुण सोमाग्निश्च हविर्भुजाम् ॥२५॥
यस्तेजसा ते तेजांसि स मे विष्णुः प्रसीदतु
चराचरमिदं सर्वं भूतग्रामं चतुर्विधम् ॥२६॥
जगत्येवं संप्रोक्तं सूत्रे मणिगणा इव
यस्य सर्वात्मनो देव स मे विष्णुः प्रसीदतु ॥२७॥
यद्बुद्धिस्तव कृतं प्राणस्तद्दुष्कृतं तव परायणः
त्वमनाद्यं स्मरिष्यामि मरणे समुपस्थिते ॥२८॥
एवं दासोऽस्म्यहं राम त्वया युद्धेन तोषितः
मनोरथार्थिनं तोषितो सरिनोऽहं त्वया प्रभो ॥२९॥
दिनं क्षेमे मया राज्यं कृतं भूरि समं प्रभो
सप्तद्वीपाधिपत्यं च प्रजानां परिपालनम् ॥३०॥

भाषा

सब संसार जिसमें विलीन होजाता है, वह भगवान विष्णु
हम पर कृपा करें। ब्रह्मा रुद्र इन्द्र वरुण चन्द्रमा सूर्य अग्नि
आदि जिसके तेज से तेजस्वी होजाते हैं, वह भगवान विष्णु
हमारे ऊपर कृपा करें। चराचर यह विश्व भूतग्रामादि जिसमें
माला मणि के समान पिरोये हुए हैं, जिसके जानने से सब कुछ
जाना जाता है वह विष्णु हमारे ऊपर कृपा करें। मरते समय
आपका ही स्मरण करूंगा, मैं आप का दास हूँ आपने युद्ध से
मुझे तुष्ट कर दिया। हे प्रभो! मैं मनोरथ रूपी समुद्र से पार
होकर सुखी होगया हूँ। हे भगवन्! मैं इस माहिष्मती क्षेत्र में
बहुत दिन रहा सप्तद्वीप पृथ्वी का बहुत दिनों तक राज्य भोग
२५-२६-२७-२८-२९-३०

OM: One God Universal Garland of Offerings #12

२८

धर्मेणपूजिता विप्रास्त्वन्नेहज्ञा च पालिता
इतदर्थे हि भगवान् शंभुः साक्षी महेश्वरः ॥३२५
तच्छ्रुत्वा वचनं तस्य ध्यानरूपः सदा शिवः
सोमांगणपरीवारो यतो विष्णुस्ततो ययौ ॥३२६
साम्बं महेश्वरं दृष्ट्वा सर्वे देवाः समागताः
ऋषयः सिद्ध गन्धर्वाश्चाप्सरोगणसंयुता ॥३३
समाजग्मुर्महेशानं रामं राजानमेव च
स्तुत्वा परस्परं नत्वा स्थिताः सर्वे यथाक्रमम् ॥३४
कार्तवीर्यस्समुत्थाय साम्बं स्तोतुं प्रचक्रमे
कृत्वा पूर्वं स्वलं हि देव देवाय चामृतः ॥३५॥

भाषा

धर्मयुक्त हमने ब्राह्मणों की पूजा किया है। आपकी ही आज्ञा का पालन किया है। इसके लिये हे भगवन् भगवान शंकर जी साक्षी। उन कार्तवीर्य अर्जुन जी की बात सुनकर भगवान शिव जी स्वयं माता पार्वती के साथ आये जहां स्वयं विष्णु परमब्रह्म रूप में विद्यमान है वहां माता पार्वती के साथ शंकर जी को देखकर सब देव गण आये ऋषि गण सिद्ध गण गन्धर्व और अप्सरा गण भी आये परस्पर एक दूसरे को प्रणाम करने लगे। अर्जुन ने भगवान शिव जी की [illegible] भगवान विष्णु जी का पूर्ण रूप परशुराम जी को जाने ३२-३३-३४-३५

संस्कृत

कार्तवीर्य उवाच :— कार्तवीर्य ने कहा
नमः शिवाय शान्ताय ज्ञान तत्त्व स्वरूपिणे
सूक्ष्माय यक्षरूपाय सर्व साक्षिकहेतवे ॥३६॥
व्योम प्रमाण कायाय कामाय कामदेवाय नमो नमः
व्योम प्रमाण विद्याय विद्येशाय नमो नमः ॥३७॥
व्योम प्रमाण भोगाय भोगेशाय नमो नमः
व्योम प्रमाण मोक्षाय मोक्षेशाय नमो नमः ॥३८॥
व्योम प्रमाण कालाय कालेशाय नमो नमः
व्योम प्रमाण धर्माय धर्मेशाय नमो नमः ॥३९॥

२८

भाषा

शान्त स्वरूप शिव जी को हमारा प्रणाम है। शान्त स्वरूप शिव जी को हमारा प्रणाम है। सूक्ष्म स्वरूप शिव जी को प्रणाम है। पक्ष स्वरूप शिव जी को प्रणाम है। सर्वसाक्षी रूप शिव जी को प्रणाम है। व्योम प्रमाण शिव जी को प्रणाम है। आकाश स्वरूप शिव जी को प्रणाम है। आकाशेश शिव जी को प्रणाम है। व्योम रूप शिव जी को प्रणाम है। विद्या स्वरूप शिव जी को प्रणाम है। विद्येश शिव जी को प्रणाम है। व्योम प्रमाण व्योमेश शिव जी को प्रणाम है। व्योम स्वरूप शिव जी को प्रणाम है। व्योमेश शिव जी को प्रणाम है। व्योम प्रमाण काल रूप शिव जी को प्रणाम है। कालेश शिव जी को प्रणाम है। व्योम प्रमाण धर्म रूप शिव जी को प्रणाम है। धर्मेश शिव जी को प्रणाम है।

३५-३६-३७-३८

संस्कृत

सर्व मंत्र शरीराय सर्व मंत्रै कृते नमः
मंत्राणामपि मंत्राय नमो मंत्र स्वरूपिणे ॥४०॥
अग्नि तत्त्व नमस्तुभ्यं नमो भस्मांग धारिणे
सर्वात्मने नमस्तुभ्यं शाश्वताय नमो नमः ॥४१॥
नमः कालाग्नि रुद्राय नमः पाताल वासिने
जगत् व्याप्य स्थितं सर्वं त्रैलोक्यं चराचरम् ॥४२॥
अपि वर्ष सहस्रैस्तु कः स्तोतुं शक्तिमान् भवेत्
मदृशो वापि न जानीहि रामभाग्य मीश्वर ॥४३॥

भाषा

मंत्र रूप शरीर वाले आपको प्रणाम है। सब मंत्रों के कारण स्वरूप आपको प्रणाम है। मंत्रों के मंत्र आपको प्रणाम है। मंत्र रूप आपको हमारा प्रणाम है। अग्नि स्वरूप आप को प्रणाम है। भस्मांग धारी आप को प्रणाम है। सर्वात्मन् आपको प्रणाम है। शाश्वत रूप आप को प्रणाम है। कालाग्नि रुद्र रूप आप को प्रणाम है। पाताल वासी आपको प्रणाम है। आप सर्वत्र व्याप्त हैं यह त्रिलोक चराचर आप से व्याप्त है। आप के हजारों वर्षों तक भी कौन प्रार्थना कर सकता है। मुझ जैसा नहीं जानते कि भगवान परशुराम जी हमारे लिये ही आये अवतीर्ण हुए हैं ४०-४१-४२-४३

OM: One God Universal Garland of Offerings #12

३०

रामोऽपि शंकरं नत्वा सुहृदं जगदीश्वरम्
प्रजापित्वा यथा न्यायं सुपावेश्य जगद्गुरुः ॥४४॥
तत्र प्राह प्रसन्नात्मा जामदग्न्यं महेश्वरः
राम राम महाबाहो जाने त्वां मूलकारणम् ॥४५॥
प्रजानां स्थिति कर्ता सर्व दुष्ट संहारकारकः
स्वायुधं स्वच्छ कामाक्षं स्वयं नेतुं मागतः ॥४६॥
सर्व मया चरितं तेऽद्यैतां राम दयां कुरु
क्षेत्रे मदीये सानिध्यं देहि मे त्वं सुदर्शनम् ॥४७॥
मम देहे भवारेवा देवी यत्र विराजते
सर्व तीर्थ कृतं सेना फलं तत्र प्रयच्छति ॥४८॥

भाषा

परशुरामजी ने भी भगवान शंकरजी को प्रणाम करके पूजा किया पास में आकर बैठ गये। प्रसन्नात्मा भगवान शंकरजी ने परशुरामजी से कहा। हे महाबाहु परशुरामजी मैं मूल कारण को जानता हूँ। आप प्रजाओं का पालन करने वाले और दुष्टों का संहार करने वाले हैं। आप अपने आयुध सुदर्शन चक्र को स्वयं लेने आये हो। मेरे इस क्षेत्र में मेरे सुदर्शन को स्थापित कीजिये मेरी पुत्री नर्मदा यहाँ रहती है राम तीर्थों के आश्रय पुण्य प्रदान करती है।

४४-४५-४६-४७-४८

संस्कृत

कार्तवीर्योऽर्जुनो दास मामपि रोचते त्विदम्
क्षेत्रे प्रीतिकरं महा देवदेवस्य भार्गव ॥४९॥
निर्योग नाहमिच्छामि त्वया सह भार्गव
भक्तोऽसि राम माज्ञाय रामः प्राह महेश्वरम् ॥५०॥
दत्तं वदसि देवेश करिष्यामि तथैव हि
स्थापयाम्यहं क्षेत्रे तदा भवन्तु प्रवर्ती लुभौ ॥५१॥
महेश्वर उवाच
नो भेदाम रमानाथ त्वदीयं च चतुर्भुजम्
रूप भास्यामि वासोऽत्र क्रियतां योगि पूजितम् ॥५२॥

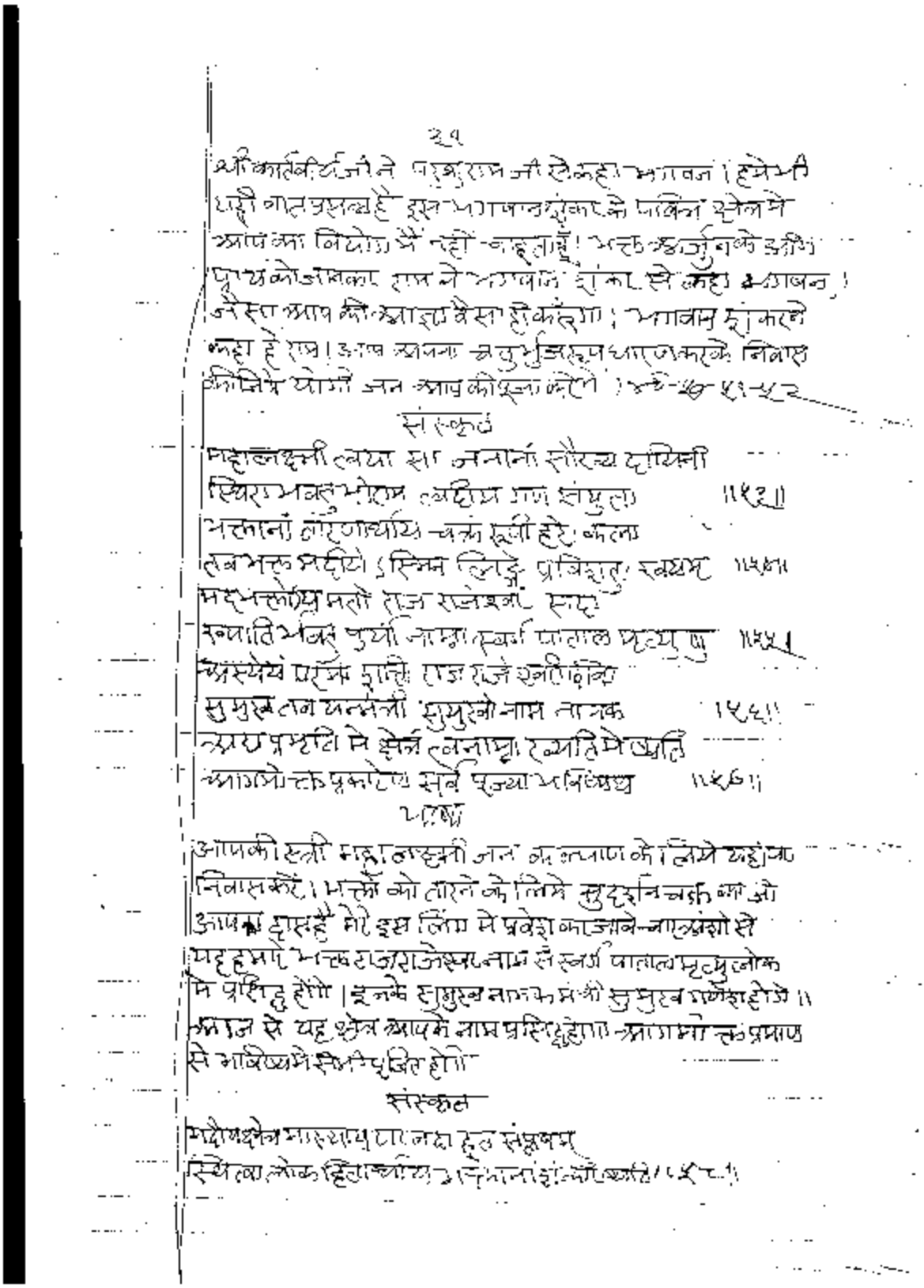

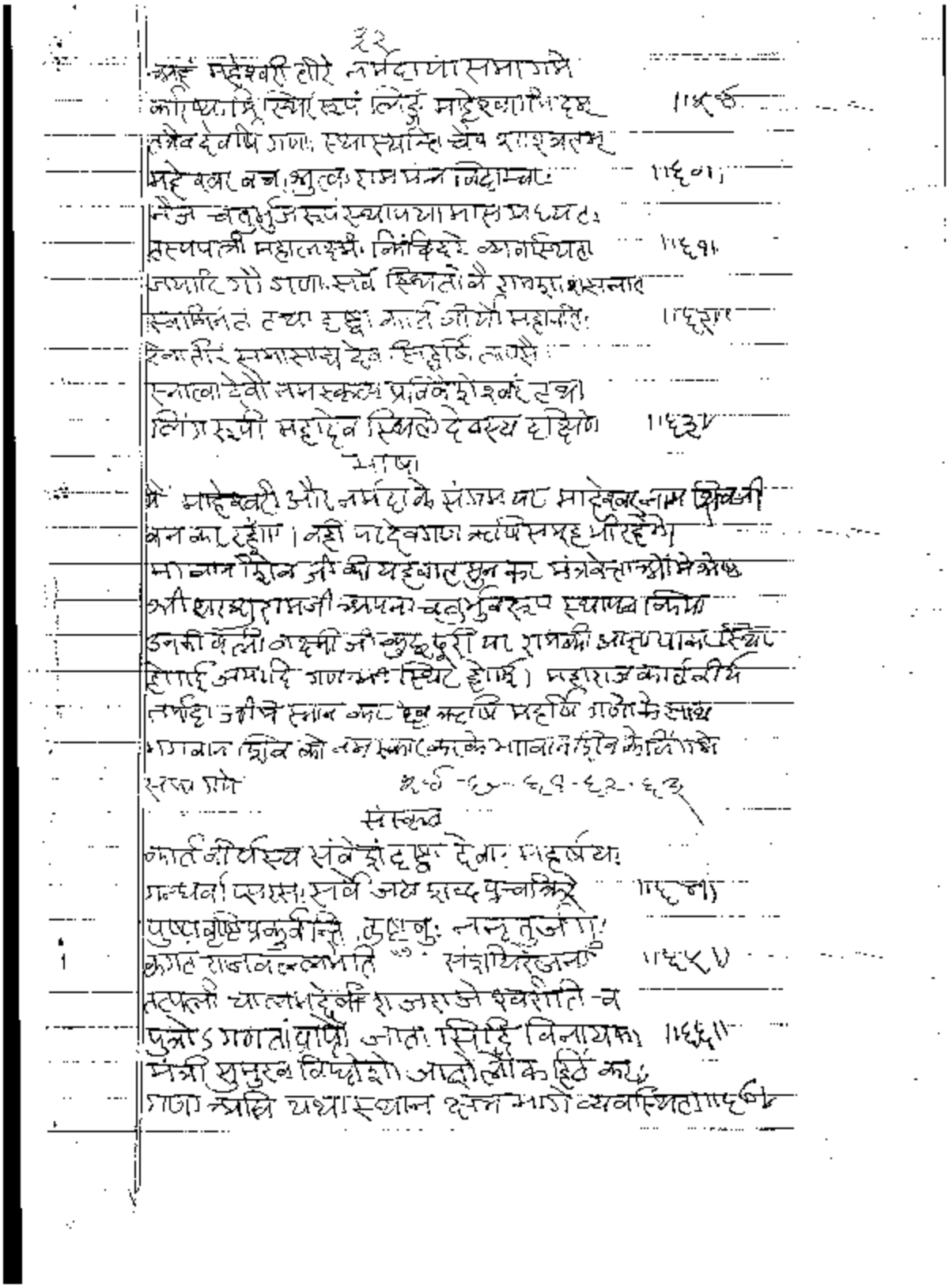

३३

भाषा

श्री माहिष्मतीपुर जी की उपरोक्त ।।२।। वाटिका प्रवेश करने आदि
लीला देख कर देवगण महर्षि गण गन्धर्व गण और
अप्सरा गण जय जय करने लगे प्रसन्न होकर नाचने
लगे और आपस में कहने लगे अरे। महाराज कार्तवीर्य
जी कहाँ अदृश्य होगये इनकी स्त्री राजराजेश्वरी पूज्यनीया
होगई। पुनः सिद्धि विनायक गणेश होगये। मंत्री सुमुख
जी विघ्नेश्वर होगये। सब गण यथा स्थान स्थित होगये

संस्कृत

सिद्धि शैव सिद्धि क्षेत्रं वैष्णवं च विमुक्ति दम्
सिद्धि क्षेत्र सिद्धि क्षेत्रं कामदं भुक्ति मुक्ति दम्
अणुयाद कीर्तये यस्तु सर्व सौभाग्य दायकम्
इति श्री वायु पुराणे माहिष्मती माहात्म्ये नर्मोदवो
अध्याय १२

भाषा

यह शैव क्षेत्र है वैष्णव क्षेत्र भी है कामना पूर्ण करने
वाला है

श्री वायु पुराण का माहिष्मती माहात्म्य का
भाषा अर्थ समाप्त
३३

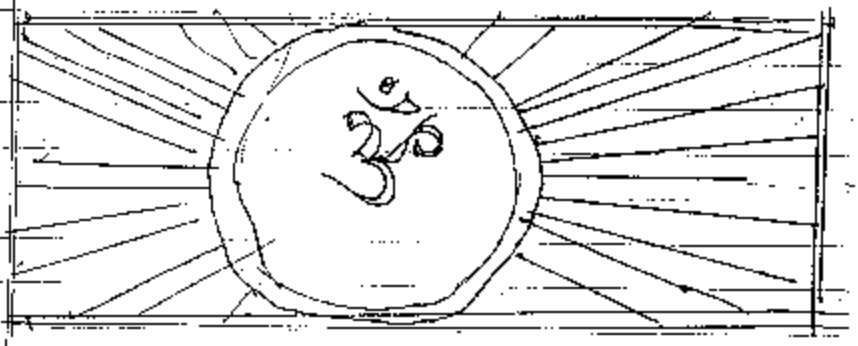

३४

अथ चतुर्दशोऽध्यायः

श्रीसूत उवाच :-

श्री सूतजी ने कहा

अथ राजानं श्रुत्वा सायुज्य पदवीं गतः
नानादिग्भ्यः समायाता ऋषयः शान्त मानसाः ॥१॥
प्रजानां पतयः सर्वे सपूर्वे च महर्षयः
तस्य जातस्य देवस्य नमस्कारं प्रचक्रिरे ॥२॥
भरद्वाजो नामदेवो वशिष्ठः च्यवनः क्रतुः
असितो देवलो व्यासो दुर्वासाः भृगुरंगिराः ॥३॥
पुलस्त्यः पुलहो दक्षो गौतमश्च पराशरः
मार्कण्डेय मुखा सर्वे नर्मदा तीर वासिनः ॥४॥
तापी गोदावरी भीमा कृष्णा तीर वासिनः
राज राजेश्वरं द्रष्टुं समाजग्मु महर्षयः ॥५॥

भाषा

महाकार्तवीर्यार्जुन की सायुज्यपदवी (मृत्यु समाचार) प्राप्त का समाचार सुनकर चारों दिशाओं से ऋषि मुनिगण, प्रजापति गण सप्तर्षि गण राजा की विचित्र गति (शिव लिंग में समावेश) रूपी को देखकर सम्मुख प्रणाम किये, भरद्वाज-नामदेव-वशिष्ठ-च्यवन-क्रतु-असित-देवल-व्यास-दुर्वासा-भृगु-अंगिरा-पुलह-पुलस्त्य-दक्ष-गौतम-पराशर तथा श्री मार्कण्डेय इत्यादि नर्मदा तीर निवासी मुनि गण आगये ॥ तापी-गोदावरी-भीमा तीर के वासी महर्षि गण आगये ॥

संस्कृत

महीसाभ्रमती मद्रा गोमती तीर वासिनः
चर्मण्वती कुरुक्षेत्र यमुना जाह्नवी स्थिता ॥६॥
नैमिषस्था प्रयागादि तीर्थ हैमवता श्रिता
ते सर्वे समाजग्मुः पर्वता रण्य वासिनः ॥७॥

३५

ब्रह्मादयो लोकपालाः सर्वे देवाः समागताः
ददृशुः देवदेवेशं राजराजेश्वरं शिवम् ॥८॥
विष्णुलोकप्रदातारं शिवलोकप्रदं तथा
रेवा स्नानं विधायादौ पूजयामासुरंकरम् ॥९॥

भाषा

मही, सावरमती, भद्रा और गोमती तीर निवासी महात्मागण
चम्बल, कुरुक्षेत्र, जमुना और गङ्गाजी किनारे रहने वाले
मुनि लोग, नैमिषारण्य के रहने वाले, प्रयागादि तीर्थ तथा
हिमाचल प्रदेश के रहने वाले महात्मा गण ब्रह्मा आदि देवगण
सभी लोग राजराजेश्वर जी के दर्शन के लिये आगये। विष्णु लोक
देने वाले तथा शिवलोक देने वाले राजराजेश्वर दर्शनार्थ आये
पहले नर्मदा जी ने स्नान कर भक्ति प्रेम पूर्वक शिवजी का
पूजन किया ६-७-८

संस्कृत

उद्योत मानवपुषा सर्व भरण भूषितः
उपनृत्यन्ति देवेशं विष्णुमन्यसुरा वरा ॥७॥
सोगन्धर्व ऋषयेषु प्रणमत सु विहायसि
महर्षिः सहगन्धर्वैः तं प्रणम्य प्रतुष्टुवुः ॥११॥
सर्वज्ञ भगवन् स्थिल ब्रह्मलोकपितामह
तुष्टावराजराजेशं सर्व सिद्धि विधायकम् ॥१२॥
चिराधार पुरन्दरं तपन सुन्दरं भूतले नर महाचलम्
रण महाबलं केवलं किरीट मुकुट गयांगद निविध भूषणै
भूषित सहस्रकर मण्डित विनय मण्डित भाचये
जपालु सुभ भाषुरं निहत दुष्ट दंभासुरं सुतस्करा विनाशनं
वेदित साधकोपासनं सुरारि बलखंडनं धरणीधर मंडितं भावये ॥१३॥
करुणा कर कारणं पतितबान्धवो तारणम् ॥१४॥
सदा भरुण नासनं निहद हास सदीपितं सहस्र वपु
व्याधिनं पयसि नार्मदे मानितकला कलानिलयिनं
हृदय नाशिनं भावये समस्त आद नाशिनं समल विनाशनं ॥१५॥

३६

भाषा

प्रकाशमान शरीर सब प्रकार के आभूषणों से सुशोभित होकर अप्सरायें मानव विष्णु सामने नृत्य करने लगीं। गन्धर्वगण ऋषियों को देवताओं के गान करने लगे। लोक पितामह सब के आगे बैठाये श्रेष्ठ आसन पर राजाधिराज को प्रसन्न करने लगे। पृथ्वीपति इन्द्र के समान व सूर्य के समान वर्तमान राजा हिमालय के समान करुणासागर, युद्ध में महानल बान, किरीट मुकुट गदा अंगद इत्यादि भूषणों को धारण करने वाले, हजार भुजाओं से मंडित सहस्रांशु सूर्य भगवान के समान, जपाकुसुम के समान रक्तवर्ण के वस्त्र धारण करने वाले प्रकाशमान, राक्षसों के बल को चूर्ण करने वाले चोरों के प्रबल शत्रु स्वरूप का भजन करते हैं। अत्यन्त करुणा करने वाले, पतितों को तारने वाले हमेशा लाल वस्त्र धारण करने वाले, विशेष हस्त पुष्प प्रसन्न रहते हुए। नर्मदा जल में विहार करने वाले ऐसे महा पुरुष का हम मानसिक वाचिक करते हैं। पृ-२१-२२-१३-४

१५

संस्कृत

कलेः कलुषहारिणं नयति सद्गतिं संसरिणं
त्रिविष्टप विहारिणं दितिजदानव संहारिणम्
सुचाप शर पाणिनं नृपति मानिन सेवये
समस्त सुख दायिनं कृतवीर्य सनमायिनम् ॥१६॥
विलास लसितांतरं खपुष्पिकां तरं गान्वलम्
समात्परगतं सदा निविध भावि रूपोत्तमम्
स्वहैहयकुलोद्भव पति वैभवं भावयत्वमुद्
अत्रि कुल संभवं वैभवं मानयन् ॥१७॥
दुष्टास्य मदभंजनं खिल मानिनी रंजनं स्वसाधक दृगंजनम्
अजित लोक दृक खंजनं स्मरामि कृतवीर्यजं परम शौर्य
जं प्रवाल निभं वाचिकं निरिवक नाडी नायक ॥१८॥

३६

भाषा

कलिमल के दोषों को दूर करने वाले, सुनीति रूपी घर
को विस्तार करने वाले, स्वर्ग में विहार करने वाले, दिति के पुत्रों
अर्थात दानवों का संहार करने वाले, श्रेष्ठ धनुषबाण को
धारण करने वाले, ऐसे महाराज कार्तवीर्य हम नमस्कार करते हैं।
सब प्रजा को सुख देने वाले महाराज कृतवीर्य के सुपुत्र
कार्तवीर्य का सम्मान करते हैं। विलास में लोहुए स्वपुत्रिका
को तोषित अपने से परराष्ट्र का विशेष ध्यान देने वाले, अनेक
भाव स्वभाव वाले, हैहय कुल में सर्वश्रेष्ठ हम
समादर करते हैं। कलिमहर्षि के कुलश्रेष्ठ तथा भगवान
दत्तात्रेय के प्रिय शिष्य दशानन रावण के मद से मस्त
को चकनाचूर करने वाले, सभी स्त्रियों के मन को प्रसन्न
करने वाले, साधकों के लिये नेत्रों का स्वरूप, श्रीकृतवीर्य के
परम प्रिय पुत्र जो कि प्रजा के समान रक्षण धारण करते
समस्त प्रजाजनों के नायक स्वरूप हैं हम उनका भावमय संस्तवन
करते हैं 25-9-92

संस्कृत

नृपतिकरणहेतुर्जीतकुरंगप्रकेतुर्मदोपाधिपीडा
पोषणस्वजनभक्तसंतोषिणस्वर्गगंगाभिनामभि
र्बहुधाभिर्भाषितं नमामि कृतवीर्यजं
करुणवतीर्णं विभुम् ॥१॥

सुदृढनिजपुत्र्या गाढ कामीनां सुन्दरं परम निजिहृ
सैगर सुरनरसमस्तसंपत्कर सुपर्वरिपु दुर्धरं
दुरितताप हरं हरं श्रीकरं स्वभक्तिबल कातरं भजे
निरीहरं तमहं ॥ २

इति स्थापितकष्टकं नरयते पठेदष्टकं लभेद्दुःखनष्टकं
सुजयाति सिद्धयष्टकं स्मारमणकानने विलसयन्ने
घोषितां निहाय मतिमानसौ मति समा सौख्य भजेतान्?
ॐ कार्तवीर्य स्वकेदुषीकृतवीर्य सुतो बली
साहस्रबाहु रुदारो शत्रुपोरस्त्रनस्य धनुर्धरः ॥३॥

३८

भाषा

सुन्दर शरीर धारण करने वाले, हाथी के समान सुन्दर चाल
वाले, युद्ध में परम विजय प्राप्त करने वाले, सब के सुख
के लिये प्राप्त करने वाले, शत्रुओं के लिये दुर्धर्ष अजेय
दैहिक दैविक भौतिक तीनों प्रकार के दुख नाश
करने वाले, धन प्रदान करने वाले, भक्तों के दुख दूर करने
वाले को हम स्मरण कर भजते हैं। कष्ट को नाश करने वाले
इस श्लोक के पाठ से नष्ट हुई वस्तु पुनः प्राप्त हो जाती है।
राम रमण रूपी वन में सदैव विहार करने वाले बुद्धि कार्तवीर्य को
हम स्मरण करते हैं। कार्तवीर्य खलों से द्वेष करने वाले
हजार भुजा धारी धनुष बाणों से लाकर के वस्त्र
पहिनने वाले। १२६-२८-२९-३२

संस्कृत

रक्तगन्धो रक्तमाल्यो राजा स्मर्तुरभीष्टदः
नाम्ना कृष्णेन सिद्धिजयं मंगलदायकम्।

भाषा

रक्त गन्ध धारण करने वाले लाल रंग की माला धारण करने
वाले स्मरण करने वाले को अभीष्ट देने वाले यह आप का दृष्टि
नाम सिद्धि जय व मंगल देने वाला है।

सूत उवाच :- सूत जी ने कहा

अनुष्टुप् संस्कृत

शुक्लं स्तोत्रं मिदं दत्वा श्चक्र रूपो पितामहः
अवनीं दूचनं प्रीतो दृष्ट्वा मित्वा ऽरनपु ॥२४५
महेश्वर प्रसादेन स्थितोऽत्रैव पितामहः
निष्णुना धृष्टितं क्षेत्रं सर्व पाप हरं परम् ॥२४७
सर्व देव गणैः सार्धं ब्रह्मन् क्षेत्रे स्थितोमन
नित्यं पश्यसि देवेशं शंकरं विष्णुमव्ययम् ॥२४८

भाषा

सुदर्शन चक्र रूपी पितामह प्रसन्न होकर यह कहा कि
भगवान शंकर की कृपा से पितामह ब्रह्मा जी और भगवान
विष्णु से रक्षित यह क्षेत्र सर्व पाप शमन करने वाला है

३८

संस्कृत

सहस्रार वच श्रुत्वा तथेति दुहिणोऽब्रवीत
रेवातीर समासाद्य प्रसन्नोऽभूत पितामहः ॥२६
दुग्धाश्वमेधानाहूय विधिमंत्र पुरस्कृतान
ब्रह्मेश्वर महालिंगं सर्व काम समृद्धिदम् ॥२७
स्थापयामास लोकानां स्वस्त्ये शुद्ध चेतसाम्
पूजयित्वा च तल्लिंगं सर्व देवगणैः सह ॥२८
ध्यायं ब्रह्मा भगवान रूपं चैव महेश्वरः
आत्मन्यपि शिवं प्राप्तं तडित पिंगजटाधरः ॥३०

भाषा

भगवान सुरश्रेष्ठ की बात को सुन कर भगवान ने कहा कि ठीक है सब रेवा तट पर आकर के प्रसन्न हो पितामह ब्रह्माजी ने दुग्धाश्वमेधों को मंत्र पूर्वक आवाहन करके ब्रह्मेश्वर महालिंग को सब समृद्धि देने वाला है लोक कल्याण के लिये स्थापित किया। सब देवगणों के साथ पूजा करके ध्यान भगवान शिव का किये अपने स्वरूप को शिव प्राप्त करके पिंगल जटाधारी बनाये ॥ ३०

संस्कृत

अष्टमष्ठ भुजंप्रभु शुद्धं शिव भास्करम्
व्याघ्र चर्माम्बरधरं शूल खट्वांग चर्मभिः ॥ ३१॥
अक्ष माला उमरुकं कपालासिध नुस्सह
त्रिशूणा सहस्रभ्रान्तं विचिंत्य हृदि विस्मिता ॥३२॥
किमिदं कृत एवेति समाधे विरतो विभुः
नेत्र उन्मील्य दृष्ट्वेदं सगणं सोमयाजिनम् ३३
कृदं त्रिलोकैक गुरुं नत्वाति शिरसि विभुः
अर्घ्ये सपर्यां व्यरचत सगणाश्च महोमया ॥३४
एकत्रातो सर्व पाद्यार्घ्ये गन्ध सक्त सदीपकैः
साहस्रात्मनु भोजेन पूर्ण कामस्यतो विभो ॥३५
वरं वाणि किमीशान येनेदं निष्टितं जगत
नमः शिवाय शान्ताय सत्याय च मृडाय च ॥ ३६

४७

भाषा

भुजाओं और नेत्र आठ आठ उठाते हुए सूर्य के समान प्रकाशमान भगवान शिवजी बाघ चर्म त्रिशूल खड्ग - अक्षमाला - डमरू - कपाल - धनुष - सूर्य समान प्रकाशित अपने आप निश्चित होगये, नेत्र खोलकर देखते हैं; पार्वतीजी के साथ शिवजी मैं लोकगुरु को देख प्रणाम किये, पूजा सामग्री अर्घ्यादि अर्पण कर पूजा किये फिर बोले भगवन् आप की कृपा से पूर्णकाम होगया है। हे भगवन शिवजी! मैं क्या सेवा करूँ?

३१-३२-३३-३४-३५-३६

संस्कृत

सूत उवाच :— सूतजी ने कहा

संस्कृत

एवं स्तुत स भगवान् महादेव सतांगति
परि तुष्टः प्रसन्नात्मा प्रहसन तमभाषत ॥ ३७

भाषा

इस प्रकार प्रार्थना किये जाने पर, हँसते हुए भगवान शिवजी ने कहा
मैं आप से बहुत प्रसन्न हूँ

संस्कृत

महेश्वर उवाच :— भगवान महेश्वर ने कहा
वरं वृणीष्व मत्तः कामं वरदेशं वयं त्रयः
अमोघं दर्शनं येषां मृत्यो यद्धि दृते मृतम् ॥ ३८
ईश्वरस्य वच श्रुत्वा जगाद चतुरानना
भवानी सम्मतः कृत्वा लोकानां हित काम्यया ॥ ३९
देव देव जगन्नाथ सर्व लोक हितम च
ब्रूहि नः श्रद्दधानानां रहस्यं किंचिदुत्तमम ॥ ४०
इदमाख्यानकं श्रुत्वा कीर्तयित्वा नरोत्तम
राजसूयस्य यज्ञस्य फलं प्राप्नोत्य संशयः ॥ ४१
इति श्री वायु पुराणे माहिष्मती माहात्म्ये चतुर्दशोऽध्यायः
॥ १४ ॥

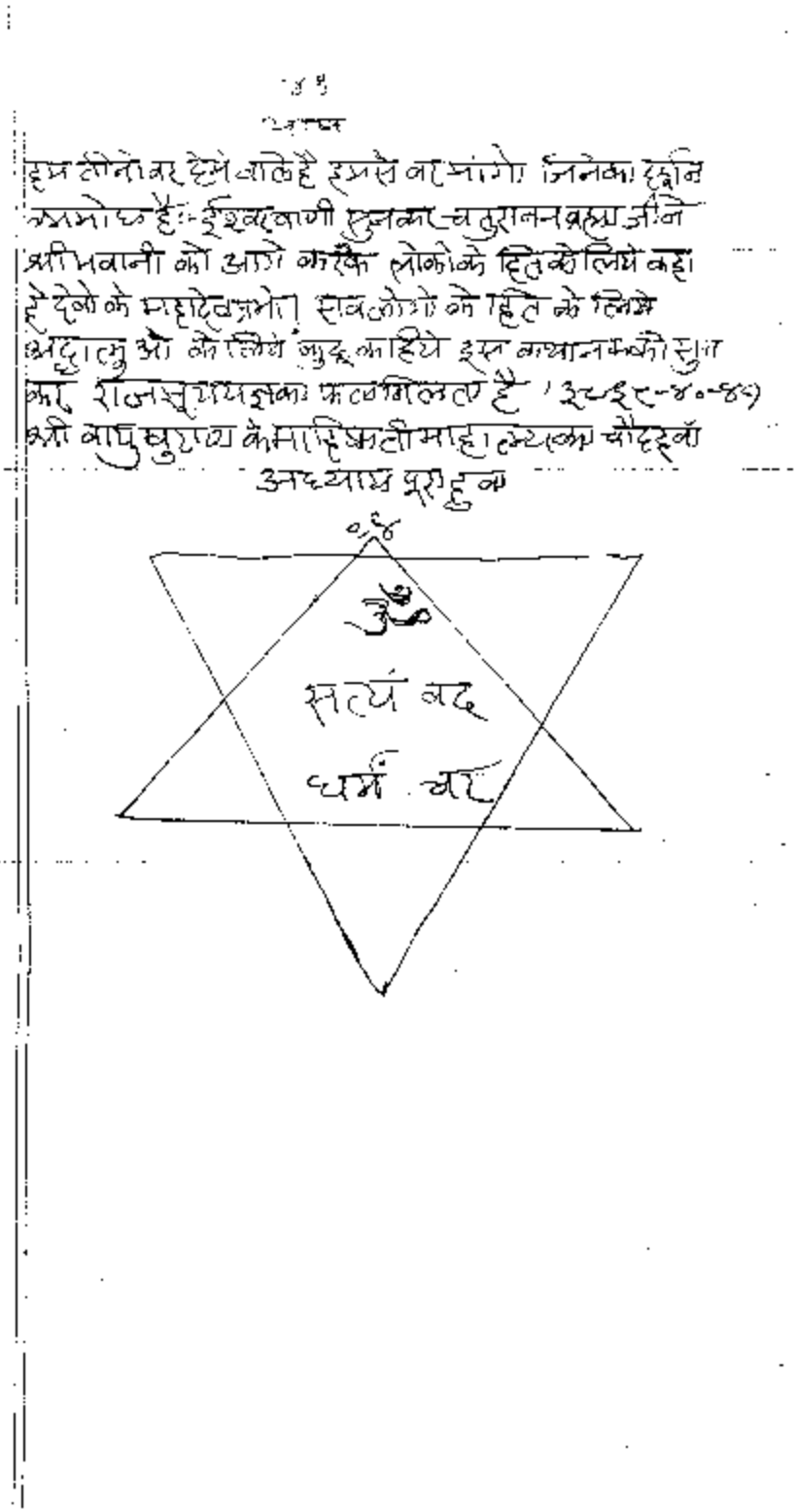

इस दोनों वर देने वाले है इससे वर मांगो जिनका दर्शन
अमोघ है। ईश्वरवाणी सुनकर चतुरानन ब्रह्मा जीने
श्री भवानी को आगे करके लोकों के हितके लिये कहा।
हे देवों के महादेवजी! सब लोगों के हित के लिये
अद्भुत्तु ओं के लिये जुद्ध कहिये इस कथानक को सुन
कर राजसूय यज्ञका फल मिलता है। (३८-३९-४०-४१)
श्री वायु पुराण के माहिष्मती माहात्म्य का चौदहवाँ
अध्याय पूरा हुआ

ॐ

सत्यं वद

धर्मं चर

॥ ४२ ॥

अथ पंच दशोऽध्यायः

सूत उवाच :— सूत जी ने कहा

रक्तस्रजंबर विभूषितकुण्डलाढ्यम्
चापाक्षि सायक गदाङ्कुशचक्रयूथैः
संशोभिताधर सहस्रकरं गुणाब्धिं
त्रैलोक्यनाथ मनिशं मनसा स्मरामि ॥१॥

उद्यद्दिवाकरनिभं कमलायताक्षं
केयूरनूपुर किरीटधरं नरेशम् ॥
रक्षः पिशाच भयनाशनमादिदेवं
श्रीकार्तवीर्यमनिशं हृदि भावयामि ॥२॥

स्वर्णाद्रिपीठे सुखासीनं देवदेवं जगद्गुरुम्
त्रिलोचन महादेव जटामण्डलमण्डितम् ॥३॥

भाषा

लाल रंग की सुन्दर माला पहने हुए, कानों में रत्नजड़ित कुण्डल धारण किये हुए; बाण तलवार बाण गदा - अग्नि तथा चक्र से शोभित गुणों के सागर हजार हाथों से शोभित पृथ्वीपति के एक मात्र स्वामी (चक्रवर्ती सम्राट) को मैं सदैव स्मरण करता हूँ।
उदित होते हुए सूर्य के समान कमल नेत्र केयूर - बाजूबन्द किरीट को पहिने हुए नरेश जो पिशाच - राक्षस आदि के भय को दूर करने वाले कार्तवीर्य जी का स्मरण करता हूँ
स्वर्णाद्रि पीठ (माहिष्मती) के राज सिंहासन पर विराजमान त्रिनेत्रधारी भगवान शिव जटा मण्डल से शोभित

संस्कृत

स्कन्दादि सततं ज्ञातं सर्व भूतहितेरतम्
कलानन्त जनिवासमुवाच गिरिजाशिवम् ॥६॥
पुण्यम् दण्डवदभूमौ सोमानुग्रह काम्यया
श्रीव्युत फुल्लवदना देवी पूर्णचन्द्र समप्रभा ॥५॥
श्रीपार्वत्युवाच :—

४३

स्कन्दादि को सेसेवित सर्व प्राणियों के हित में संलग्न
श्री पार्वती जी ने शिवजी महाराज से संसार हित की कामना से
प्रसन्न चित्त होकर पूर्णचन्द्रमा के समान मुखारविन्द से यह कहा
श्री पार्वती जी ने कहा

संस्कृत

देवदेव महादेव लोकानुग्रहकारक
चन्द्रशेखर भस्मांग फणिराज विभूषण ॥६॥
सर्व शास्त्र पुराणानि श्रुतयः स्मृतयस्तथा
विप्रधर्मा राजधर्मा वैश्यधर्मास्तथैव च ॥७॥
नारी बाल युवा वृद्धानां सर्वे आश्रमणस्तथा
सर्व धर्मा मया ज्ञाता त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥८॥
इदानीमेक मिच्छामि त्वन्मुखाच्छ्रोतुमर्हसि
अस्मिन् कलियुगे घोरे नराः पुण्यविवर्जिताः ॥९॥
पापाचार रतानित्यं परनिन्दा परायणा
परद्रोह रता नित्यं परान्न दूषितास्तथा ॥१०॥
परवीक्षा रताश्चैव परनारी मनोरथा
धर्माचार विहीनाश्च सन्ध्या स्नानादि वर्जिताः ॥११॥

भाषा

हे देवों के देव! लोकानुग्रह करने वाले! चन्द्रशेखर! सर्वांग में
भस्म लगाने वाले प्रभो! वासुकी नाग से विभूषित! मैंने आपसे
सम्पूर्ण शास्त्र सम्पूर्ण पुराण चारों वेद सम्पूर्ण स्मृतियां, विप्रधर्म
राजधर्म वैश्य धर्म नारी, बाल युवा वृद्ध धर्म आश्रमों के
धर्म आदि आप से पढ़ा है। इस समय एक इच्छा है वह आपमुखार
विन्द से सुनना चाहती हूँ इस घोर कलियुग में मनुष्य पुण्यहीन
हैं पापाचार में लीन हैं, परनिन्दा परायण हैं, परद्रोही हो गये हैं
पराये अन्न दूषित, परवीक्षा परायण धर्माचार हीन
सन्ध्या वन्दन रहित स्नानादि से वर्जित हो रहे हैं ॥९-१०-११॥

संस्कृत

श्रौत स्मार्तादि रहिता सत्यधर्म विवर्जिता
क्लेशा दुःख बहुलाः बहु दुःखानि शोकाः ॥१२॥

OM: One God Universal Garland of Offerings #12

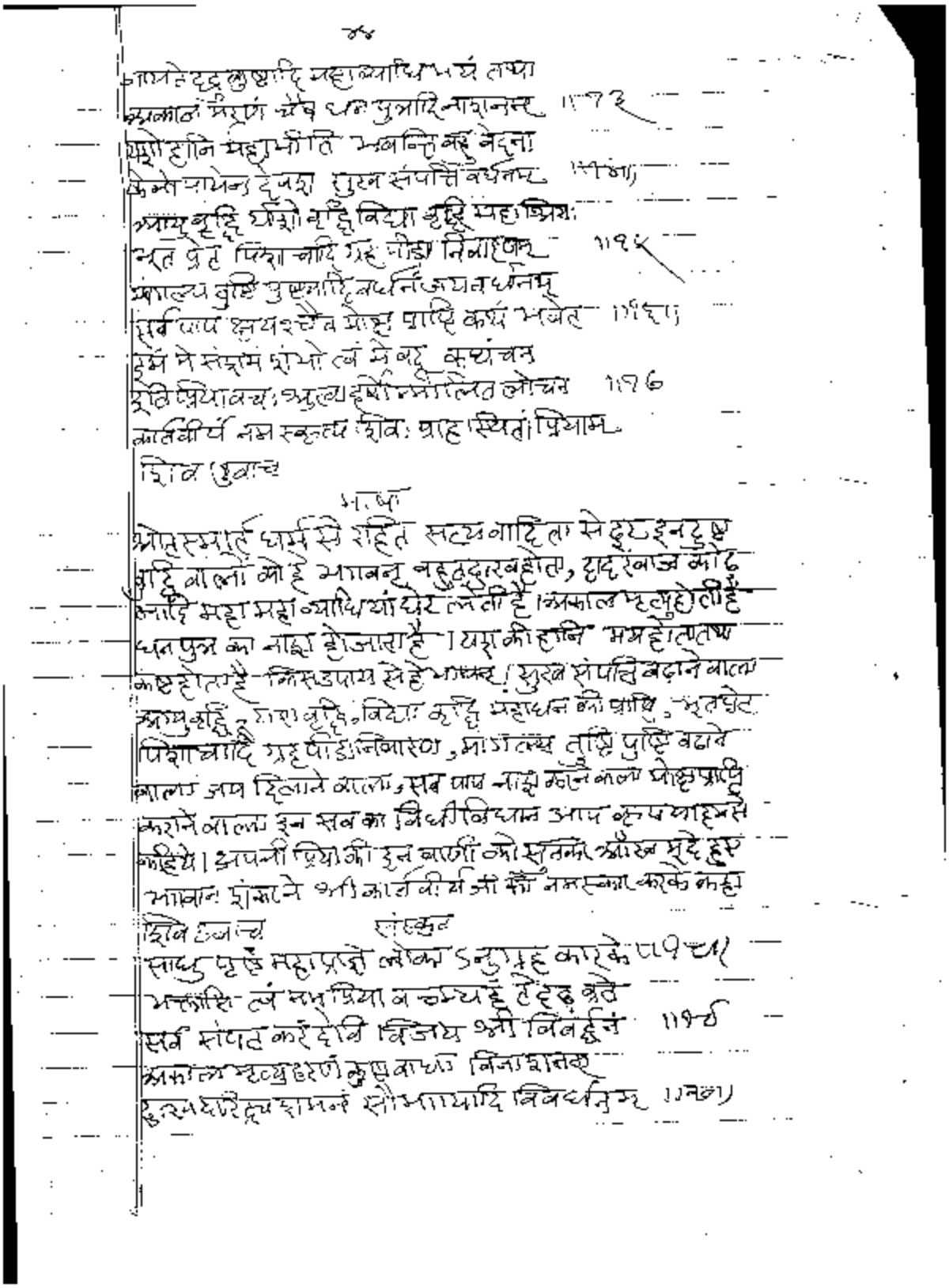

इति दं पावनं नृणां सकलार्थ फलप्रदम्
गुह्याद्गुह्यं परं देवि पिशाचादि निवारणम् ॥२२॥
सर्व पापहरं विद्धि सर्व ज्ञान विवर्धनम्
स्तवराजं महादेवि कार्तवीर्य एव भूपते ॥२३॥
वेदोपनिषदां सारं नाख्येयं कस्यचित्त्वया
पुराण शास्त्र स्मृतयो वेदो पनिषदस्तथा ॥२४॥
स्तवराजस्य षोडशी कलां नार्हन्ति षोडशीम्
चक्रस्यैव हरेरेषा महा नीयो महानक ॥२५॥

भाषा

भगवान शिवजी ने कहा हे बुद्धिमती प्रिये! आपने लोकों के कल्याण के लिये बहुत अच्छा प्रश्न किया है। आप मेरी प्रिय हो कठोर व्रत धारण करने वाली हो इसलिये मैं आपसे कहता हूँ सुनिये, सर्व प्रकार की सम्पत्ति देने वाला, विजय को बढ़ाने वाला, दुःख दरिद्र को शमन करने वाला, सौभाग्य बढ़ाने वाला, मुक्ति देने वाला, सब प्रकार के फल अर्थ धर्म काम मोक्ष देने वाला, अत्यन्त गोपनीय पिशाचादि निवारण करने वाला, सब प्रकार के पापों को नाश करने वाला, सद्ज्ञान के ज्ञान वर्धक, हे देवि श्री कार्तवीर्य का स्तवराज है वेदों उपनिषदों का सार भूत है किसी अयोग्य को नहीं बताना चाहिये पुराण शास्त्र स्मृति वेद उपनिषद आदि स्तवराज की सोलहवीं कला की बराबरी नहीं कर सकते क्योंकि यह नित्य भगवान के सुदर्शन चक्र अवतार विष्णु अंश महाबली महावीर का वर्ण है

१८-१०-२०-२२-२३-२४

संस्कृत

तस्यनामेति लक्ष्यन्ति सर्व दुःखानि पार्वति
दत्तात्रेय ऋषि प्रोक्तोऽनुष्टुप छन्द प्रकीर्तितः ॥२५॥
कार्तवीर्यो महाविष्णुर्देवता परिकीर्तितः
आद्यैः ध्यानं बीजं च्यां शक्तिः कृतयुगे कामनात्मा ॥२६॥
गोप्यात्गोप्यतरं देवि गोपनीयं प्रयत्नतः
कौनांदि पाशिराचम्य प्राङ्मुखो मनुप्रिये ॥२७॥

४६

भाषा

उनका नाम लेने मात्र से सब प्रकार के दुःख नष्ट हो जाते हैं। श्री दत्तात्रेय जी ऋषि हैं। अनुष्टुप छन्द है। श्री कार्तवीर्यमहा विष्णु देवता है। उनका पहले ध्यान वर्णन करता हूँ। एकाग्रचित्त होकर सुनिये जो कि बहुत ही गोपनीय बात है। पहिले स्नान के बाद कपड़ा बदलने के बाद आचमन करके पूर्व को मुख करवैठे। २५-२६-२७

संस्कृत

स्वस्तिकासनयुतो न्यास कृतो भवेत्तदा
कोटीन्दु बिम्ब संकाशे रत्नाख्ये नास्त्र संयुते ॥२८॥
अयुताश्वयुते दीप्ते रक्तध्वजशते रथे
स्थितं कन्दर्प लावण्यं सहस्र भुजमण्डितम् ॥२९॥
चक्राद्यायुध संयुक्तं कोटि सूर्य सम प्रभम्
धनुर्बाण धरं धीरं रक्तालंकार भूषितम् ॥३०॥
रक्ताम्बरं रक्तवर्णं रक्त कुण्डल मण्डितम्
रक्त चन्दन लिप्तांगं किरीटो ज्जिवलितं बरम् ॥३१॥
रक्तनूपुर युतं रक्त माल्य भूषित भूपतिम्
करि पत्ति रथाश्वानां सहस्रैः परिवारितम् ॥३२॥
राजराजेश्वरं शान्तं कमलायत लोचनम्
प्रेम कारुशक्ति स्युग्रा रक्तमाल्यानुलेपना ॥३३॥

भाषा

स्वस्तिकासन से बैठ कर न्यास करे। करोड़ों चन्द्रमा के समान प्रकाशमान रत्न जड़ित रथ पर, अयुत (दस हजार) संख्या वाले प्रकाशमान सौ लाल रंग की ध्वजा वाले रथ पर कामदेव के समान रूपवान हजार भुजाओं से युक्त चक्र आदि दिव्यास्त्रों से युक्त करोड़ों सूर्य समान प्रकाश वाले धनुर्बाण लिये हुए लाल रंग के भूषणों से भूषित, लाल वस्त्र पहने हुए लाल कुण्डल युक्त लाल चन्दन शरीर में लगाये हुए प्रकाशमान लाल नूपुर लाल माला से युक्त हाथी पत्ति रथ अश्व सहस्रों से घिरे हुए राजराजेश्वर भगवान कमलनेत्र प्रेम करुणा शक्ति से उग्र लाल माला से लेपन वाली।
२८-२९-३०-३१-३२-३३

संस्कृत ४६

मुक्ताभरणभूषा पूर्वां देवीमुपासते
श्री करी व्यजनेनैव पीतमाल्यांबरा सती ॥३४॥
सुस्मिता रत्ना नरेशं तं दक्षिणस्यामुपासते
हेमाभा करी चैव शुक्लाम्बर विभूषणा ॥३५॥
सदर्पण कराद्वित्यं पश्चिमस्यां ह्युपासते
शक्ति पाशकरी पुण्या नीलाम्बर विभूषिता ॥३६॥
सचामर करेणैव सौम्यांतां समुपासते
शक्तिः पुष्पकरी चैव चाप बाण धरा शिवा ॥३७॥
चन्दनालेपनेनैव आग्नेयां समुपासते
विद्या करी महाशक्तिर्निशूल वर धारिणी ॥३८॥
पाद संबाहनेनैव नैर्ऋत्यां समुपासते
शक्ति धनुकरी चैव खड्ग दण्डाऽमितप्रभा ॥३९॥

भाषा

मोती जड़ित वस्त्र धारण किये हुए पूर्व दिशा की तरफ से उपासना करती है। श्री करी देवी पीली साड़ी धारण किये हुए पंखा चला रही थी सुस्मिता देवी शान्त स्वरूपवती राजा की दक्षिण तरफ से सेवा कर रही थी। हेमाभा करी देवी सफेद साड़ी पहिने हुए हाथ में दर्पण लिये हुए पश्चिम की ओर से सेवा कर रही थी। पुण्या करी देवी नीलांबर धारण किये हुए हाथ में चामर लिये उत्तर की ओर से सेवा कर रही थी। प्रज्ञाकरी शक्ति धनुष बाण लेकर चन्दन का लेप किये अग्निकोण से सेवा में लगी हुई है। महाशक्ति विद्याकरी त्रिशूल हाथ में लेकर नैर्ऋत्य दिशा पैरों की सेवा कर रही है। अमित प्रभा शक्ति धनुकरी देवी खड्ग हाथ में लिये हुए

३४-३५-३६-३७-३८-३९

संस्कृत

स्तुत्यादिभिः परेशं तं नायक्यां समुपासते
शक्तिः स्रग्करी चैव वाणांकुश धरा शिवा ४०
दुर्निरीक्ष्या त्रिनेत्राभ्यां तनी शक्त्या समुपासते
विजया करणी देवी स्फटिकमालाकलेवरा शुभा ॥४१॥
आज्ञाभिस्तं सदा शान्तं मूर्धन्यां समुपासते
शुभ्रा शक्तिः स्रग्युग्रा पीयूषांकुश धारिणी ॥४२॥

४८

वाहने नैव राजेन्द्रमधस्तात्समुपासते
ध्यानमेतन्मया देवि ख्यातं भुवन वन्दितम् ॥४३
यत् ज्ञात्वा मुच्यते पापात घोर संसार सागरात्
एकं ध्यायेत सदा देवं सुरर्षिदेव पूजितम् ॥४४
श्रीमन्त कृतवीर्य सूनुमनिशं त्रैलोक्य नाथ शिवम्
सर्वाभीष्ट फल प्रदं भय हरं राजीव नेत्रं विभुम् ॥४५
आनन्द सुरपूजिताङ्घ्रि कमलं नित्योत्सवं भूषितम्
सर्वानन्द करं हिमांशु वदन वन्दे सहस्रार्जुनम् ॥४६

भाषा

स्तुति आदि से नरेश जी को वाग्मय दिशा से सेवा करती है। आयुधकी शक्तिपाश अंकुश धारण किये हुए दर्शन आलिंगनादि से ईशान दिशा से सेवा करती है। विजय करी देवी स्फटिक की माला धारण किये ऊर्ध्व दिशा से सेवा करती है। अति महाशक्ति अमृत कमल लिये हुए राजेन्द्र की सेवा अधस्तात से करती जिसको ज्ञान का घोर पाप से छूट जाता है इसप्रकार देवगण ऋषि गणादि सदैव सेवा करते रहते हैं। श्री कृतवीर्य महाराज के सुपुत्र वीर अर्जुन त्रैलोक्य के स्वामी सब फल देने वाले कमल नेत्र आनन्द से परिपूर्ण देवों से पूजित नित्योत्सव से विभूषित सब लोगों को आनन्द देने वाले चन्द्र वदन सहस्रार्जुन जी हैं ॥ ४०-४१-४२-४३-४४-४५

संस्कृत

उद्यत कोटि दिवाकर द्युतिनिभं केयूर हारावलि
श्रीमद्दीर्घ सहस्रबाहु यजनं सत्यव्रतं धार्मिकम् ॥
स्फूर्जत्खड्ग रथ गदेषु चाप कुलिशं रक्तांबरालंकृतम्
भूपालं कृत भूतलं सुखकरं नित्यं भजे भूपतिम् ॥४६
रक्तांग राग कृत कल्पनमादि देव
रक्तस्रजं रथयुतं कवचावृत ञ्च
संसार नाशहरि मंबुज रक्तपादम्
नन्दे सदा गुणनिधिं निखिलाभिरामम् ॥४७॥
संग्राम पूजित पदं हरि नाथ यूथा कृत शार्ङ्गचापं
धरं नृपेन्द्रम ।

४६

दुःख घ्न मादि पुरुषं द्विजराज कान्तं
वैकुण्ठ नाथ तनुजं भव रोग वैद्यम् ॥४८॥

भाषा

जिनके लाल हुए करोड़ों सूर्य के समान प्रकाश वाले, के मुकुट हार धारण करने वाले, श्रीमान सहस्रबाहु महाराज यक्ष और सत्यवादी धार्मिक होते हुए शंख, गदा, चाप, कुलिश तथा रत्नमय से सुशोभित भूपाल पृथ्वी पर सुख करने वाले को हम भजते हैं। लाल रंग के तेज से शोभित लाल रंग के माला को धारण किये हुए कवच से युक्त लाल रंग के चरण कमल गुणनिधि को, संग्राम सृजित चरण वाले धार धनुष से युक्त महेन्द्र अर्जुन जो सब प्रकार के दुःखों को शमन करने वाले चन्द्र के समान कान्त पूर्ण चन्द्र मुख वाले श्री वैकुण्ठ विष्णु भगवान पुरुषरूप भव वैद्य को हम नमन करते हैं। ४६-४७-४८

संस्कृत

योगीन्द्र पूजित पदं सुरवृक्ष कल्पम्
दिव्यास्त्र शास्त्र विदमर्जुन सिद्धि धेनुम्
सिद्धाश्रम सकल सिद्धि करं च शान्त
माहिष्मती पति मनन्य गतिं भजामि ॥४९॥

जिन्हितुल्यवपुषं कमलासनस्थं
देवाधि देव मनुजं जगदादि भूतम्
चक्रानकार मरविन्द विशाल नेत्रम्
श्रीमन्निधु सुरपतिं हरि पूजिताङ्घ्रिम् ॥५०॥

भाषा

योगीन्द्रों द्वारा पूजित चरण वाले कल्प वृक्ष के समान, दिव्य अस्त्र शास्त्रों के ज्ञाता जितेन्द्रिय अर्जुन महाराज सिद्धाश्रम स्थित सब प्रकार की सिद्धि देने वाले माहिष्मती नगरी के स्वामी अनन्य गति स्वरूप को मैं भजन करता हूँ। पर्वत समान विशाल शरीर धारण करने वाले कमल आसन स्थ देवाधिदेव के अनुज अनन्य गति वाले चक्राकार कमल समान नेत्र वाले श्रीमान सुरपति से भी पूजित को मैं भजन करता हूँ।

अव्यक्तरूपं गुणवीर्यमनन्तबाहुम्
वेतालराक्षसपिशाचभयप्रणाशम् ॥
दारिद्र्यदुःखभयनाशनं स्वरूपम्
तेजोमयं निरुपमं जनतार्तिनाशम् ॥४४॥
लोकेशवन्दितपदं निगुढात्मरूपम्
संसारकष्टदमनं निष्कृतप्रपंचम् ॥
आनन्दमूर्तिमतुलं करुणामृताब्धिम्
वन्दे समस्तजनतापनिवारणञ्च ॥४२॥
जगदुद्ध्येयं जगद्योनिं जगत्संहारकारकम्
जगद्बन्धुं जगन्नाथं नमामि जगतांपतिम् ॥४३॥
सर्वेशं सर्वकान्तं च सर्वादिं सर्ववन्दितम्
सर्वदेवात्मकं गुरुं सर्वारिष्टनिवारणम् ॥४४॥

भाषा

अव्यक्त रूप वाले, अनन्त गुणवीर्य वाले, सहस्र भुजा वाले वेताल, राक्षस पिशाचादि के भय को दूर करने वाले, दरिद्रता के दुःख दूर करने वाले हे जगत्पति, जनता दुःख दूर करने वाले लोकों से वंदित विबुध आत्म रूप संसार कष्ट को शमन करने वाले आनन्दमूर्ति, करुणा रूपी अमृत के समुद्र, समस्त जनता के तापको दूर करने वाले ध्यान करने योग्य जगत्कारण निश्चय जगत् संहारक सर्वेश सभी के कान्त रूप सर्वादि सर्व से वन्दित सर्व देवात्मक परम गुरु सर्वारिष्टों के नाश करने वाले का ध्यान हम करते हैं ॥४१-४२-४३-४४॥

स्तोत्र

मृत्युञ्जयं महाकायं सहस्रभुजमण्डितम्
कोटिसूर्यप्रकाशं च वन्देहं शिरसानृपम् ॥४५॥
अनादिनिधनं देवं मनोवाक्कायनाशनम्
किरीटकुण्डलधरं प्रणमामि हरिप्रियम् ॥४६॥
हरिरूपं हरं नर्मदातीरवासिनम्
दशाननदर्पहरं वन्देऽहं लोकभूषणम् ॥४७॥
सिद्धिसंवृद्धिदातारं भक्तचरितभक्षणाशनम्
कालप्रज्ञानं दान्तं देवं वृद्धपतिं द्विजम् ॥४८॥

५१

यज्ञेशं यज्ञ भोक्तारं सर्व यज्ञ फल प्रदम्
निरीहिणं निराधारं वन्दे धर्म निरञ्जनम् ॥५८

भाषा

मृत्युञ्जय, महाकाय, सहस्र भुजाओं से शोभित, करोड़ों सूर्य के समान प्रकाशमान भगवान को हम फिर से प्रणाम करते हैं। अनादि निधन देव, मनो वाक्य जड़ता नाशक, किरीट कुंडल धारण करने वाले विष्णु भगवान के प्रिय पात्र भगवान को हम प्रणाम करते हैं। हरि (विष्णु) रूप भगवान विष्णु के अंश स्वरूप श्री नर्मदा तीर निवासी, रावण के दर्प को चूर करने वाले लोक के भूषण स्वरूप को हम प्रणाम करते हैं। सिद्धि सुसिद्धि के देने वाले, किये हुए पापों का नाश करने वाले काल को शमन करने वाले शान्त, यज्ञपति देव दिव्य रूप, यज्ञेश यज्ञ भोक्ता सब यज्ञों के फल दाता निरीह निराधार निरंजन धर्म रूप देव को हम प्रणाम करते हैं। ५५-५६-५७-५८-५९

संस्कृत

शंख चक्र धरं दक्षं सर्वाधारं सनातनम्
योगीशं योगवेद्यं च वन्दे योगविभीश्वरम् ॥६७
योगज्ञं योगराजं च योगाधारं निमेषदम्
अव्यक्तमव्ययं भव्यं जगन्मोहनमच्युतम् ॥६१०
सुभालं सुनासं किरीटोल्लसन्तं
सतामेकरूपं कृपा सागरं तं।
भवारि प्रणाशं निराकार रूपं
सहस्रं च बाहुं भजे विष्णुरूपम् ॥६२०
ॐ कारस्वरूपं जगत्पालितं
राजाधिराजं रवि मण्डलस्थं
विदूरं न्यस्त समस्त बन्धुं
सुदर्शन मौलिकृपा वतारम् ॥६३॥

भाषा

शंख चक्र गदा को धारण करने वाले सनातन रूप सबके आधार योगीश, योगवेद्य योगीपति को मैं वन्दन करता हूँ। योग के जानने वाले, योगराज, योगाधार

५२

मोक्षदाता, अव्यक्त व्यक्तरूप जगन्मोहन अच्युत, शोभित
भाल वाले सुन्दर नासिका वाले किरीट से शोभित सतमेक
रूप, कृष्ण सागर, मुरारि, पुरारी, निराकाररूप वाले
सहस्रनाम रूप विष्णु को मैं वन्दना करता हूँ। ॐ कारस्वरूप,
जगत्जनित रविपण्डलस्थ रूजाधि राज का पूजन करता हूँ
विदुर बन्धु प्रिय सुदर्शनावतार मैं वन्दना करता हूँ

६० ६१ - ६२ - ६३

संस्कृत

अनेक नामा चानन्त वीर्य
महोदधि नाथ रनाप्रमेयम्
त्रैलोक्य नाथं कृत लोक रक्षं
महाबलं नौमि गुणाकरं तम् ॥६४॥
यस्यैक नाम्नैव वृजन्ति लोक
सुदुर्जना वैष्णव लोक सार्थ
भवानजो भोदम रूप मेकं
तुभ्यस्मि नित्यं शरणं गतोऽहम् ॥६५॥
दाता दयालु परचक्र नाशक पूर्ण चिदानन्दमयं निधुं हम्
निराश्रयं शंरव गद्य धरेशं विश्वेश्वर रामहं भजामि ॥६६

भाषा

अनेक नाम वाले, अनन्त वीर्ययुक्त महासागर, अप्रमेय
त्रैलोक्य के स्वामी, लोक रक्षक, महाबली गुणाकर देव को मैं
नमस्कार करता हूँ। लोग प्रायः एक नाम से ही जान लेते हैं वे दुर्जन हैं
उनका तो अनेक सहस्र नाम है मैं उन्हें नमस्कार करता हूँ।
दाता दयालु परचक्र नाशक पूर्ण सच्चिदानन्द निधु हम आप
शंरव गद्य धारण करने वाले नरेश विश्वेश्वर जी को हम भजते
हैं ॥

६४ - ६५ - ६६

संस्कृत

अतीन्द्रिय सूक्ष्मचनन्त सर्वं ध्यानस्थं पापहरं जनानाम्
अनाथ नाथेश नरेन्द्रवेद्यं वन्दे सदा हे हयनाथ मीशम् ॥६७
परं ज्योति परब्रह्म व्यक्त स्वरूपिणम्
अनेक गुणगंभीरं प्रणमामि हरिं प्रियम् ॥६८॥

५३

भक्तोद्धारण संस्थानं भक्ति गाढ़ दुरासदम्
भक्तैकनिलयं कान्तं नन्दे श्रीवत्सवक्षसम् ॥५८
निशालाख्यं गुणाध्यक्षं सर्व रोग निनाशनम्
दिव्यास्त्र विदं माकाशं राजेन्द्रं प्रणमाम्यहम् ॥५९
गतमन्यं वीतरागं भवबन्ध विमोचनम्
राजचूडामणिं भद्रं ब्रह्मज्ञं ब्रह्मवर्धनम् ॥६१
दुःस्वप्ननाशनं वैद्यं वशिनं विबुधेश्वरम्
जितारातिं जितक्रोधं प्रणमामि सदाशिवम् ॥६२॥

भाषा

अतीन्द्रिय सूक्ष्म अनन्त रूपवाले ध्यानास्पद, पापहरने वाले, अनाथों के नाथ इन्द्रियेश हैहयपति अर्जुन को हम नमस्कार करते हैं। पांज्योति परब्रह्म व्यक्त अव्यक्त स्वरूपवान अनेक गुणों वाले गंभीर महापुरुष को हम नमस्कार करते हैं। भक्तों का उद्धार करने वाले भक्ति मय दुरासद भक्तों का निलय श्रीकान्त वक्षस्थल वत्सल को नमस्कार करता हूँ। निशालाख्य, गुणाध्यक्ष, सर्व रोग निनाशक, दिव्यास्त्र विद, राजेन्द्र को प्रणाम करता हूँ। अहंकार रहित, वीतराग भव बन्ध विमोचन राजचूडामणि भद्रशील ब्रह्मज्ञ ब्रह्मवर्धन, दुःस्वप्न नाशन, वैद्यराज, वशमें रखने वाले विबुधेश्वर शत्रुविजयी क्रोधजयी सदाशिव को प्रणाम करता हूँ। ५७-५८-५९-६० -६१-६२

संस्कृत

दुर्जनेष्वप्रियतमं चापिनं रथिनं हरिम्
सुदुर्जयं महाकान्तं नन्दे वानिनासिनम् ॥६३
निधीशं सहितं धन्यं लोकसाक्षीच मृण्मयम्
स्वर्णं भुवं परेशानं नमामि शक्रहृद्वजम् ॥६४
रक्तवासाश्च सर्वाङ्गं तूणिनं नमिणं हरम्
गुरुप्रियं सुगोप्तारं कार्तवीर्यं महं भजे ॥६५
सुस्मं सुमुखं रक्त लोचनं रक्त भूषणम्
व्याधिनं व्याधितं घ्नं भुंडीवा नाथरमं भजे ॥६६
विप्रप्रियं सनाथं च शत्रुहाणं सुसूक्ष्मिणम्
अनन्त निकमं स्वस्थं भजे कैलास वासिनम् ॥६७

५४

भाषा।

भगवान् दत्तात्रेयजी के परम प्रिय शिष्य चाप रथ वाले सुदुर्जय हरि को जो रेवातट निवासी भी हैं, को मैं वन्दना करता हूँ। निर्धारा राजित धन्य लोक साक्षी स्वयंभू भगवान्, परमेश्वर गरुड़ध्वज को प्रणाम करता हूँ। रुद्राक्ष धारण करने वाले, तरकस, कवच वाले गुरुप्रिय, सुगोप्ता श्री कार्तवीर्यजी का पूजन करते हैं, सुस्वर-सुमुख, लाल नेत्र वाले लाल वस्त्र और लाल ही भूषण (मणि) धारण करने वाले - न्यास ध्यान करने वाले शंभु स्वरूप का हम भजन करते हैं। ब्राह्मण प्रिय सनाथ इन्द्रादि से पूजित अनन्त पराक्रमी कैलास पति शिव स्वरूप का हम भजन करते हैं। ७३ से ७७ तक

संस्कृत

तपस्विनं महाभागं महाभागवतोत्तमम्
सुधीरं शास्त्रपारं च सप्तद्वीपपतिं तथा ॥७८॥
अव्याहतगतिं चैव भूतप्रेतनिवारणम्
संसारनाशनाय प्रणमामि पुनः पुनः ॥७९॥
नमो नमः शस्त्रधरेषु चापं निषंग बाणानि भृशं बिभ्राणाय
भास्वत्किरीटांगद नूपुराय पूर्णेन्दुबिम्बाय रथस्थिताय ॥८०॥
करुणामृतसागराय सुभ्यं भवनाशकाय सोदराय राजन्
सकलेप्सित देवपादपाय स्मरन्ति तीव्रानल नीरदाय ॥८१॥
जालसंयुतनादभिन्न स्वनाय सज्जनोद्धरणकर्मठताय
रथ नाथपतिमध्य गाय स्मरतीव्रानल नीरदाय नित्यम् ॥८२॥

भाषा

महातपस्वी, महाभाग, महाभागवतोत्तम सुधीर, सकल शास्त्रपारंगत सप्त द्वीपों के स्वामी, अव्याहत गति वाले, भूत प्रेतादि को निवारण करने वाले संसार रूपी नाश के लिये गरुड़ समान को मैं बार बार प्रणाम करता हूँ। शंख चक्र गदा बाण तरकस धनुष धारण करने से सुशोभित हो प्रकाश। मान किरीट बाजूबन्द पायल आदि धारण करने से पूर्ण चन्द्रमा के समान शोभायमान सिंहासन पर बैठे हुए करुणा के समुद्र के समान सकल इच्छा पूर्ण करने वाले ईष्ट देव! हम संसार के चाल चलन को नाश करो।

५५

संस्कृत

त्रिभुवन कमनीय सुन्दराङ्गं रविशत कान्ति मलं च्य वीर्यवन्तम्
सुर नर नयनानु मोह मंत्र हृदय सदा भज कार्तवीर्य मीशमुग्रम् ३
स्मरणात् सर्व दुःखानी नश्यन्त्येव न संशयः
कृतवीर्य हृय नृपते सुतः कार्माणि निश्चितानि भ्रान्तिहि ॥८४॥
कार्तवीर्यो महे ष्वासो महा वीर्यो महानल
हैहयाधिपतिर्भीमो दुरन्तो दुष्ट नाशनः ॥८५॥
मारीचो मानदो मानी माया तीतो गुरुप्रियः
धन्वी राजाधिपो ध्यानी दत्तात्रेय प्रियो हरिः ॥८६॥
एकवीरो यज्ञाधिपो यज्ञो यज्ञपरश्चोर नाशनः
सहस्र भुज धारी च दीर्घ बाहुर्महा निधिः ॥८७॥
नर्मदा जल विहारी च दशग्रीव मदापहः
रक्तवस्त्र किरीटी कुण्डली गदी ॥८८॥

भाषा

तीनो लोकोमे कमनीय, सुन्दर शरीर वाले सैकडो सूर्य समान कान्ति और वीर्य वाले, देव स्त्रियों के नेत्रको मोहने वाले कार्तवीर्य भगवान का स्मरण करो है। जिनके स्मरण से सर्व प्रकार के दुःखो का नाश होजाता है इसमे लेश मात्र संदेह नहीं है। कृतवीर्य के प्रिय पुत्र के कार्य विचित्र होते है। कार्तवीर्य, महेष्वास, महावीर्य महानल, हैहयाधिपति, भीम, दुरन्त नाशक, दुष्टदमन, मारीच मानद, मानी, मायातीत, गुरुप्रिय, धनुषधारी, राजाधिप, यज्ञ रूप, ध्याता, दत्तात्रेय भगवान के प्रिय शिष्य, एकवीर, यज्ञाधिप, यज्ञ रूप, यज्ञप, चोर नाशन, सहस्र भुजाधारी, दीर्घबाहु, महानिधि, नर्मदा जल विहारी, रावण दर्पदलन, रक्तवस्त्र धारी किरीट कुण्डल और गदा धारी

८३ - ८४ - ८५ - ८६ - ८७ - ८८

संस्कृत

हरि प्रियो हताशौघो मुक्तिदो योगिवत्सलः
महायोगी महाभोगी महा भाग्यवतोऽव्ययः ॥८९॥
गुणागारो महा बुद्धि रनंतोऽच्युत ईश्वरः
असाध्य निग्रहो देवः कालज्ञः सिद्धिदायकः ॥९०॥

५५

अनुलोम विलोमाभ्यां बीजानि पुटितानि च
गौरण मातृकावर्ज: क्रमात् संपुटितानि च ॥९१
तत्स्युतानि नामानि प्रोच्चार्य तदनन्तरम्
अनुष्टुपं महामंत्रं जपेच्चौरादिशान्तये ॥९२
कार्तवीर्यार्जुनोनाम राजाबाहु सहस्रवान्
तस्य स्मरण मात्रेण हृतं नष्टं न लभ्यते ॥९३॥

भाषा

हरि प्रिय:, हृतोघ (पाप हरने वाले) मुक्तिदाता, योगिवत्सल महायोगी, महाभोगी, महाभागवत, अव्ययस्व, गुणागार, महाबुद्धिमान, अनन्त, अच्युत, ईश्वर - असाध्य विग्रह - कालज्ञ सिद्धिदायक को प्रणाम करता हूँ। अनुलोम विलोम से प्रणव मातृका युक्त संपुट पाठ करने से तत्तनाम मिलाकर पाठ करने से अति शीघ्र लाभ, अनुष्टुप महामंत्र चोरादिशमन के लिये "कार्तवीर्यार्जुनो नाम राजा बाहु सहस्र वान
तस्य स्मरण मात्रेण हृतं नष्टं च लभ्यते" इस मंत्र का जपकरे ८९-९०-९१-९२-९३

संस्कृत

इतिते कार्तवीर्यस्य स्तवराज मनुत्तमम्
कथितं मम सर्वस्वं रहस्यं पुण्यवर्द्धनम् ॥९४॥
दुःख दारिद्र्यशमनं चौरादि दुष्टनाशनम्
महामृत्युहरं सर्वं सौभाग्यं चैववर्धनम् ॥९५
सर्व पापहरं पुण्यं सर्व तीर्थफल प्रदम्
यज्ञ व्रततपोदान फलदं मुक्तिदं नृणाम् ॥९६॥
स्तवमेतं पठेत् नित्यं त्रिसन्ध्यं श्रद्धयान्वित:
तिनधानीह भोगाश्च भुक्त्वा मोक्ष मवाप्नुयात् ॥९७॥
कार्तवीर्य के) भाषा

स्तवराज को मैने आप से कहसुनाया पुण्य बढाने वाला है। दुःख दरिद्रता का नाश करने वाला है। चौरादि दुष्टो का शमन करने वाला है। महामृत्यु दूर करने वाला सौभाग्य बढाने वाला है। सब पाप को हरने वाला पुण्य और तीर्थ फल को देने वाला। यज्ञ व्रत-तपस्या

५८

दान फल को देने वाला है। जो इसे नित्य त्रिकाल संध्या काल में पढ़ता है वह अन्त में मोक्ष फल प्राप्त करता है। निर्विघ्न कर के भोग लाभ पाता है ९४-९५-९६-९७

संस्कृत

स्तवराजमिदं देवि पर शिष्याय नो वदेत्
राज्यं दद्याच्छिरो दद्यात् स्तवराजमिदं नहि ॥९८॥
अकथ्यं तु क्वचिद्देवि गुणिने धार्मिकाय च
दयावृत्ते च भक्ताय परस्त्री विमुखाय च ॥९९॥
अष्टोत्तरशतं देवि पुरश्चरण मुच्यते
पायसेन दशांशेन जुहुयात् हव्यवाहने ॥१००॥
सर्वमन्त्रान् समाराध्य प्रयोगान् कुरुते बुधः
तान् शृणुष्व सुरेशानि त्वया गोप्यं सदैव हि ॥१०१॥

भाषा

शंकर जी ने कहा कि, हे देवि! इस स्तव राज को पर शिष्य को नहीं बताना, राज्य दे दो, अपना शीश दूसरे को दे दो लेकिन स्तवराज को दूसरे को नहीं देना। गुणी धार्मिक प्रवृत्ति वाले को कभी बता देना। दयालु भक्त, परस्त्री को माँ के समान देखने वाले को बता देना। १०८ एकसौ आठ पाठ का एक पुरश्चरण होता है। पायस से दशांश हवन करना चाहिये सब मंत्रों से आराधना पूर्वक प्रयोग करना चाहिये हे देवि! इन प्रयोगों को सदैव गोप्य रखना चाहिये। ९८-९९-१००-१०१

संस्कृत

भोजपत्रेऽष्टगन्धेन स्तवं राजं समं लिखेत्
लिखित्वा धारयेद्यस्तु तस्य सिद्धिर्न संशयः ॥१०२॥
दीपं दत्त्वा धरेद्राज्ये एकपाठं स्थिरो नरः
त्रिना पठते निर्लक्ष्मि तुल्यं त्रिगमाप्नुयात् ॥१०३॥
चौरादि भोपद्रवे प्राप्ते सप्तवारं जपेन्निशि
पश्चिमायां मुखस्थित्वा चौरनाशश्च जायते ॥१०४॥
निशीथे सप्तदिवसं जपेद्वा दशसंख्यया
नष्टं पाठ्यं पश्चिमास्यं नष्टप्राप्तिर्भवेद्ध्रुवम् ॥१०५॥

भाषा

५८

भोज पत्र पर अष्ट गन्ध से स्तव राज को लिखकर धारण करे तो सर्वसिद्धियां प्राप्त होंगी। महाराज को दीपक लगाकर एक पाठ करे यदि तीन पाठ नित्य करे तो लक्ष्मी प्राप्त होवे। चौरादि उपद्रव में सात पाठ रात्रि में पश्चिम मुख होकर करे चोरों का नाश होगा। रात्रि में सात दिन कर बारह पाठ नित्य करे तो नष्ट हुई वस्तु मिल जायेगी २-३-४-५

संस्कृत

चतुर्दश्यां दिने देवि त्रिवारं दक्षिणामुखः
पठेत् बन्ध विमुक्त्यर्थं मुच्यते नात्र संशयः ॥१८८॥
त्रिसप्त दिनपर्यन्तं प्रत्यहं सप्तधा निशि
पठन् पूर्वाभिमुखो राजानं वशमाप्नुयात् ॥१८९॥
त्रिसन्ध्यं प्रत्यहं घोरे षण्मासं चतुरश्यम्
अन्याभिलाषी कन्यां लभते नात्र संशयः ॥१९०॥
सपूर्वारं जपेन्नित्यं षण्मासान् विजितेन्द्रियः
महामृत्युभयं घोरं नश्यत्येव न संशयः ॥१९१॥
परचक्र भये प्राप्ते सपूर्वारं जपेन्निशि
त्रिदिनान्नश्यति क्षिप्रं परचक्रभयं महान् ॥१९२॥

भाषा

शिवजी ने कहा कि हे देवि! चौदह दिन तक तीन पाठ दक्षिण दिशा मुख करके करे तो बन्ध से मुक्त हो जाय इसमें संदेह नहीं। इक्कीस दिन तक नित्य सात पाठ करे तो राजा वश में हो पूर्व मुख पाठ करना होगा। त्रिकाल जो चार माह तक पाठ करे तो कन्याभिलाषी कन्या प्राप्त करे। छः माह एक रात्रि में पाठ सात करे तो महामृत्यु भय दूर होवे परचक्र नाश के लिये सात पाठ करे सात दिन तक भय दूर हो तीन दिन में ही भय दूर हो जायेगा। ८-९-१०

संस्कृत

एतैर्मन्त्रैः कुरुते देवि प्रयोगान् नृपते प्रियान्
न तस्य जायते क्वापि भयं च त्वत्प्रसादतः ॥११॥
उच्चाटेला नाट सहस्र शान्तिरथास्य मन्त्रोद्धरं दयालु रक्षोऽभय
व्यान्

६०

श्री वायु पुराण मे वर्णित माहिष्मती माहात्म्य
का पन्द्रहवा अध्याय पूरा हुआ।

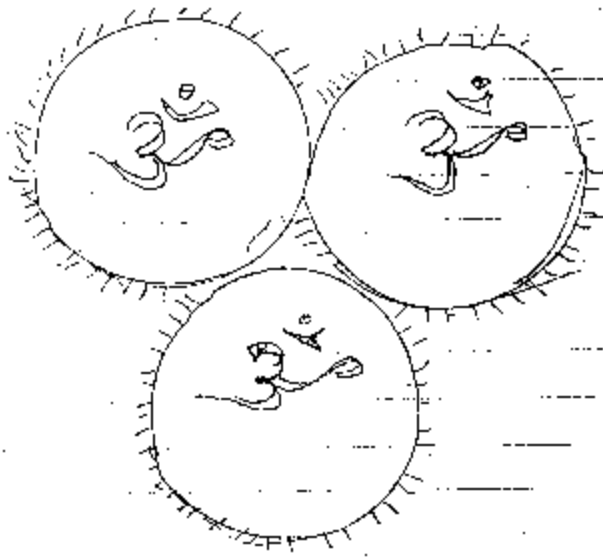

शान्तिः !! शान्तिः !!!

शान्तिः !

[illegible] तास्तं नमामि देवाधिपं पूजितं सर्वसिद्धिभिः ॥
दुःखघ्नं दुर्गघ्नं मतिविकासं रत्नकरं हाटकमालयायुतम्
सहस्रबाहुं सुरवृक्षकल्पं नमामि तं प्रणमामि नित्यम् ॥११२
माहिष्मतीनाथ अनाथनाथं राजेन्द्र पूर्वं शशिनं नमोऽस्तु ते
रक्तांगरागं भवरोगवैद्यं श्रीकार्तवीर्यं हृदि भावयामि ॥११३॥
[illegible] राजराजेश्वरस्य च
अनुवादं न पठेद्यापि सर्वान् कामानवाप्नुयात् ॥११४॥

भाषा

श्री कार्तवीर्यमहाराज का जो प्रिय प्रयोग करता है उनकी कृपा से उसे कोई भय नहीं होता है। उदय होते करोड़ों सूर्य के समान रथ पर बैठे हुए दयालु निर्भयदाता, कमलनेत्र देवों के देव को मैं नमस्कार करता हूँ। रावण के दर्प को चूर करने वाले रक्त वस्त्र और स्वर्ण मुखे लक्ष्मी की माला से सुशोभित, हजार भुजाओं के कल्पवृक्ष के समान मनोकामना पूर्ण करने वाले अनाथों के नाथ राजेन्द्र, चन्द्रवंश के केतु (ध्वज) समान रक्तांग राग से शोभित संसाररूपी रोग के वैद्य स्वरूप श्री कार्तवीर्य को हृदय से स्मरण करता हूँ। जो मनुष्य राजराजेश्वर के इस स्तव को पढ़ेगा सुनेगा उसकी संपूर्ण कामना पूरी होगी

संस्कृत

सूतउवाच :— सूतजी से कहा

इत्थं देव्यभिपृष्टेन महादेवेन कीर्तितम्
कुलं ब्रह्मादयो देवा दधुः सर्वगुणान्वितम् ॥११५
[illegible]
एवं नाम विधं तत्र मंत्रस्तेऽभ्र समन्वितम्
आगमस्य स्वयं प्रोक्तं शृणुष्व मुनिसत्तम ॥११६
इति श्री वायु पुराणे माहिष्मती माहात्म्ये पंचदशोऽध्यायः

भाषा

इस प्रकार देवी से इच्छा हुआ [illegible] शंकर जी ने कहा हुआ
[illegible] के तेज मंत्र आगमों को ब्रह्मादि देवों ने
अर्जुन के वर्णन सुनकर प्रसन्नता जताई

६१

अथ षोडशोऽध्यायः

सूत उवाच :— सूतजी ने कहा

संस्कृत

अथ ब्रह्मादयो देवा महेश्वर समन्विताः
सवासुदेव आजग्मु यत्र सिद्धो धरापतिः ॥१॥
एकतीरे सभां चक्रुः पितृ सिद्धर्षि भिस्सह
एवं त्रिलोकयामासुः सिद्ध तीर्थान्वितं तदा ॥२॥
तत्र ब्रह्मादयो देवा ये निस्मर्थं ययुः
स्वर्गापवर्गदा देवी शिव सिद्धान्त सन्निभा ॥३॥
भाति भूमि तले देवी भगिनी दुरितापहा
एतस्मिन्नन्तरे तत्र नारदोऽपि जगाम ह ॥४॥
विचार क्रियमाणेतु धीमद्भिः शास्त्रचक्षुषा
सारासार विचारज्ञैस्तीर्थानां पृथगादृतैः ॥५॥
त्रिजगत् पद्म मधुपं ब्रह्मा प्रपच्छ नारदम् ॥

भाषा

अब ब्रह्मादि देवगण भगवान विष्णु भगवान आदि सभी देवगण सिद्ध पृथ्वीपति अर्जुन के पास आगये। नर्मदा तट पर सभा किये जहाँ पितरलोग, सिद्ध लोग ऋषि समूह पहले से ही आये थे। सिद्ध तीर्थ सब श्री नर्मदा को देखकर के ब्रह्मा आदि देवगण परम विस्मय युक्त होगये। स्वर्गापवर्ग देने वाली शिव पुत्री नर्मदा शिव जी के समान ही है। भूमि तल पर शिव पुत्री देवी नर्मदा पापों को नाश करनेवाली है विद्वानों द्वारा शास्त्र नेत्र से देखने पर सारासार विचार करने तीर्थों का सम्मान करने ब्रह्माजी चिन्ता कर ही रहे थे कि इतने में ब्रह्मपुत्र ब्रह्मर्षि देवर्षि नारदजी आगये तब ब्रह्माजी ने नारदजी से कहा

ब्रह्मो वाच :— ब्रह्माजीने कहा

त्वया त्रिजगती भ्रान्ता बहुशः सुर पूजितः ॥६॥
सूहि तीर्थ विशेषान्, सरितां शास्त्र साधुतम्
यद्दृष्टमनुभूतञ्च सर्वं तत कथ्यतां मुने ॥७

नारद उवाच :—

६२

ऋषयश्च महाभाग, सिद्धाः देवा ब्रह्म पुरोगमाः
भारतभूमि रस्मिन्नाकर्म भूमिति विश्रुता ॥७०॥
एतस्माच्च्युतानां सेषां तथान्याभोग भूमयः
शुभाशुभ कृतं कर्म भारते फलमानहेत ॥७१॥
तीर्थानि सन्ति बहुशः सरितश्चापि सत्तमाः
नदी नर्मदया पुण्येन न तुलामपि गच्छति ॥१०॥
ब्राह्मी न वैष्णवी रौद्री नागाद्दृष्टा नदी नर्मदा
सरस्वती स्मृता ब्राह्मी गङ्गा विष्णुपदी स्मृता ॥११॥
रेवा रौद्रीति विख्याता तापत्रय भयापहा
सर्वा मोक्ष प्रदा हेतोः पापनाशकराः पराः ॥१२॥

भाषा

श्री नारद जी ने कहा कि ऋषिगण देवगण सिद्धगण तथा ब्रह्मदेव सहित सभी लोग यह समझ लें कि संपूर्ण भारत भूमि कर्म भूमि है। इनसे च्युत होने वाले तथा दूसरे भोग भूमि वालों को शुभाशुभ कर्म भारतवर्ष में ही फलप्रद होता है। नदी और तीर्थ बहुत से हैं उनमें तीस की बराबरी कोई नहीं कर सकता है। ब्राह्मी, वैष्णवी और रौद्री संसार में श्रेष्ठ नदियां हैं सरस्वती ब्राह्मी है, गङ्गा विष्णु पदी है और नर्मदा रौद्री है तापत्रय दूर करने वाली, पाप नाश करने वाली स्वर्ग और मोक्ष देने वाली है। ८-९-१०-११-१२

संस्कृत

दृष्टः काश्चिद्विशेषोऽस्मे नर्मदा तीर संभवः
सर्व स्थानेषु सर्वत्र गीर्णाणा सर्व वस्तुषु ॥१३॥
चराचरे च नियतं निर्मलः स्फुटः
महानेष निशोषोऽयं दृष्टो मे नर्मदोद्भवः ॥१४॥
यत कुक्षि सम्भवात्मानो भजन्ती श्वाहा यतः
सा नेकिं सेव्यते रेवा देवादि पदहेतु नृणाम ॥१५॥
क्षिप्रा पि सेवनाद्यस्या क्षिप्रं कुर्वन्त्यार्चने जने
दुर्लभं मानुषं जन्म भारते सुरसत्तमा ॥१६॥
सत कुलं सत्वर्द्धिश्च नर्मदापि च दुर्लभा
भारते भूय मनुजो भजनं यो न गच्छति ॥१७॥

६३

भाषा

नारदजीने कहा कि हमने नर्मदा तीर मे विशेषता देखा है। सब स्थानो मे सर्वत्र सब वस्तु मे देवताओं का वास है। वाराह जी निर्णय है। विष्णु जी नीरज है हमने यह विशेषता नर्मदा मे देखा है। इसके कुक्षि मे रहने वाले से देवत्व प्राप्त कर लेते है ऐसे गुण वाली नर्मदा का सेवन क्यो न किया जाने जिसमे वास करने से मत्स्य जी शंकर बन जाते हैं। हे देवता गणो! मनुष्य जन्म दुर्लभ है भारतवर्ष मे पैदा होना और कठिन है। सत्कुल, सत बुद्धि, नर्मदा वास भी दुर्लभ है अहो नर्मदे मनुष्य होकर भजन नर्मदा को क्यो नही सेवन करता। १३-१४-१५-१६-१७

संस्कृत

दुःप्राप्य मानुषं जन्म मुधा हे नैव हारितम्
मोक्षमार्गो महानेष प्रवाहः पापशान्तनः ।।१८
नर्मदा सर्वजन्तूनां मज्जतां मनलंबनम्
भवाब्धौ भारतभुवो भूषणं भव नाशनी ।।१९।।
यद्दर्शनं मृतं पातु सुस्नाता या तु नर्मदाम्
यमेभ्यो यातनाभ्यश्च नरकेभ्यश्च दुर्गतिम २०
यद्दर्शनं पितॄन् पातु सास्नातुं यातु नर्मदाम्
भवाभव भयोद्विग्नाः संसार दुःख संकुलात् ।२१

भाषा

मनुष्य जन्म पाना कठिन है यह मोक्ष का मार्ग नर्मदा तीर है सब प्रकार के पापों का शमन करने वाला है। नर्मदा जल सब प्रकार के जंतुओं के लिये अवलम्बन (सहारा) है। संसार रूपी सागर के लिये भारत भूमि भूषण स्वरूप है भव पुत्री नर्मदा है। यह दर्शन से मृतो के लिये अमृत तुल्य है। यमयातनाओं से नरक से दुर्गति से दूर रखने वाली है। जो अपने पितरों को तारना चाहते हैं उन्हें नर्मदा जल मे स्नान करना चाहिये संसार सागर भय से व्याकुलो के लिये संसार दुःख सागर के लिये... नर्मदा ही है १८-१९-२०-२१

६९

संस्कृत

य इच्छेदात्मनः स्नातुं स स्नातुं यातु नर्मदाम्
नमे नाके सुखं भोक्तुं भुवि राज्यमकंटकम् ॥२२॥
य इच्छेच्च पयं दातुं स स्नातुं यातु नर्मदाम्
पुण्या पुण्यतरा प्रोक्ता गंगा तीर्थे चतुष्टये ॥२३॥
मुक्तेश्वरे शुभे च प्रयागे चापि पूजिता
तथा मनखले तीर्थे विश्वनंद्याय नाशिनी ॥२४॥
स्थाने तीर्थे शुभे पुण्या सुरश्रेष्ठा सरस्वती
विशेषतः कुरुक्षेत्रे श्रीस्थले रुद्र सन्निधौ ॥२५॥

भाषा

जो अपना कल्याण चाहता है वह नर्मदा स्नान करे। स्वर्ग मे सुख भोगकर पृथ्वी पर साम्राज्य अकंटक करेगा। अपने को जो देने की दान करने की इच्छा हो उसे नर्मदा स्नान करना चाहिये। पुण्य पुण्यतम गङ्गा तीर्थ कहलाता है। मनखल मे विश्व पूज्या गङ्गा जी है। मुक्तेश्वर सुभ क्षेत्र प्रयागादि मे गङ्गा जी पूज्य है। प्रत्येक तीर्थ मे सुर श्रेष्ठा सरस्वती पुण्य स्वरूपा है। विशेषकर कुरुक्षेत्र श्रीस्थल रुद्र सन्निधि मे सरस्वती पूज्य है।
२२-२३-२४-२५

संस्कृत

प्रभासे च विशेषेण ब्राह्मी सर्वाघ नाशिनी
सर्वत्र दुर्लभा रेवा शिवा फल विभूषिता ॥२६॥
विशेषात सप्त तीर्थेषु तानि मे श्रृणु तानघ।
पुण्यात्पुण्यतरा रेवा तीर्थे नाम्ना कैण्टके ॥२७॥
माहिष्मत्यां द्वितीया च शूल भेदे तृतीयका
रेवारि संगमे तुर्या पंचमी कोटिलापुरे ॥२८॥
भृगुस्थाने तथा षष्ठी रेवा पापविनाशिनी
सप्तमी चमहापुण्या रेवा सागर संगमे ॥२९॥
ख्याता गुप्त प्रयागोऽयं यत्र रेवारि संगमः
गुप्तकाशीति विख्याता चावै माहिष्मती पुरी ॥३०॥

६५

भाषा

विशेषरूप से प्रभासक्षेत्र में काशी (सरस्वती) सब पापों को दूर करती है। कल्याण करी रेवा तो सर्वत्र ही दुर्लभ है। हे महापुरुषो! विशेष कर सात तीर्थों में पुण्यात्पुण्यतर है पहला अमरकण्ट है दूसरा स्थान माहिष्मती का है। तीसरा स्थान शूलपाणि का है। चौथा स्थान रेवोदि संगम का है पांचवा स्थान कोटितीर्थ का है। छठा स्थान भृगु स्थान है सातवां रेवा सागर संगम का है। जो रेवोदि संगम है वह गुप्त प्रयाग है। गुप्त काशी तो माहिष्मती पुरी है। २६-२७-२८-२९-३०

संस्कृत

तत्र वासः वरं मन्ये यत्र माहिष्मतीपुरी
काशी वासेन किं तेषां माहिष्मत्यां वसन्ति ये ॥३१॥
श्रूयते पितृभिर्गाथा सर्वे गुणा विभाविना
मा वत्स गच्छ गङ्गां त्वं मा प्रभासं च पुष्करम् ॥३२॥
रेवायां तत्र गच्छस्वं यत्र माहिष्मतीपुरी
प्रयागं च परित्यज्य किं कार्यं किं गया मपि ॥३३
श्रूयते यदि सर्वेषां माहिष्मती महापुरी
तत्र गत्वा शुभो दद्यात् स्वमपेक्ष जलाञ्जलिम् ॥३४॥
विरस्नात्वा परमा तीर्थे भविष्यति मूल संभूता
कर्म बन्ध विमोक्षाय भवाब्धि तारणाय च ३५॥
तत्र पुत्र वसेथास्त्वं यत्र माहिष्मती पुरी
इत्यादि पितृभिर्गीतं श्रूयते वै पुरा सुरा ॥३६
एतत्प्रसङ्गं यद्वै वासो माहेश्वरे पुरे
ब्रह्मो वाच:—

भाषा

यहां वास करना अच्छा मानता हूं जहां माहिष्मती पुरी है। भला काशी वास करने से क्या लाभ जिनका वास माहिष्मती पुरी में है। पितरों से यह गाथा सुनने में आती है कि सर्व गुण माहिष्मती में ही है पितर ऐसा कहते हैं पुत्र! गंगा मत जाओ, प्रभास या पुष्कर तीर्थ करने मत जाओ सर्वदा को जाओ जहां माहिष्मती नगरी है जयाग जाने का क्या काम, गया श्राद्ध करने का क्या काम? इत्यादि

६६

माहिष्मती में निवास करते हो वहां माहिष्मती पुरी में शीघ्र
जाकर केवल एक अञ्जलि जल हमें देदो हमारी वृष्टि
प्रलय काल तक कोलि में हो जावेगी पुत्र। वहां हीवसो
जहाँ माहिष्मती पुरी है। इत्यादि वाक्यों को हमने पितरों से
सुना है इसलिये हमारा मत है महेश्वर में ही निवास करना...
३१-३२-३३-३४-३५-३६

ब्रह्मोवाच : — ब्रह्मा जी ने कहा

संस्कृत

समीचीनमिदं देवा यदुक्तं नारदेन हि ॥३७॥
पुराणेऽपि मया दृष्टं क्षेत्रं माहेश्वरं पुरम्
तत्र वः क्रियतां मंत्रो स्थितिं वा पुरःसरा ॥३८॥
कर्म बन्ध निनाशाय पुनर्भवसमुद्भवे
अद्यप्रभृति गाहनीयं हि नर्मदा शर्मदायिनी ॥३९॥
भवद्भिः कोटि तीर्थं कोटि तीर्थफलप्रदम्
देवर्षि कोटि निर्दिष्टं पुण्यकोटि गुणान्वितम् ॥४०॥
तच्छ्रुत्वा वचनं तस्य देवाद्या सस्नुराद्दरात्
नमूचुः सुमनो जाता कोटि तीर्थप्रसादतः ॥४१॥
स्नुत्वा देवं समभ्यर्च्य देवा कोटीश्वराशिवम्
पूजयाः प्रासुरम्भोभिः पंचभिश्चोपचारकैः ॥४२॥
कोटीश्वरे तु यद्दत्तं सर्वं कोटि गुणं भवेत्
स्नानं सन्ध्या जपो होम स्तप कोटि गुणं सदा ॥४३॥

भाषा

ब्रह्मा जी ने कहा कि हे देवगण। जो नारद ने कहा है वह सब ठीक
है। पुराणों में भी मैंने देखा है माहेश्वरपुर को। अतः हम लोग अपने
अपने अंगों से यहाँ ही निवास करें। कर्मबन्ध निनाश के लिये
पुनः सृष्टि प्राप्ति के लिये आज हम लोग नर्मदा में स्नान को यह
कोटि तीर्थ हो जावेगा। देवऋषि कहा हुआ कोटी तीर्थ कोटि गुण।
फलदायक होगा इस बात को सुनकर सभी देवों ने नर्मदा जी
में स्नान किया। स्नान देखा तथा नर्मदा जी का पूजन किया
पंचोपचार से। कोटीश्वर जो कुछ किया जाता है वह कोटि गुणा
फलदायी हो जाता है ॥३७-३८-३९-४०-४१-४२-४३

६७

संस्कृत

कोटि तीर्थे तु यः स्नात्वा तर्पयेत पितृ देवतः।
अतिरिक्तेन तस्य यज्ञस्य फलं प्राप्नोति निश्चितम् ॥४४
श्राद्धं कृत्वा पितॄंश्च कृतकृत्यो भवेन्नरः
कोटि तीर्थे स्नात्वा यो ददाद्विजभोजनम् ॥४५
एकस्मिन्भोजिते विप्रे कोटिभोजनम्
ब्रह्मसूत्रं च छत्रं च वस्त्रं पात्रं कमण्डलुम् ॥४६
ददाद्यो महादानं दृष्ट्वा ओंकारं सर्वस्वदान्
सर्वं कोटि गुणं तस्य कोटितीर्थे न संशयः ॥४७
गायत्रीजप मात्रेण वेदपाठ फलं लभेत्
प्राणत्यागं प्रकुर्वन्न पुनर्भवमाप्नुयात् ॥४८

भाषा

कोटि तीर्थ में जो स्नान करके पितरों का तर्पण करता है
वह अतिरिक्त यज्ञ का फल प्राप्त करता है। पितरों का श्राद्ध करके
मनुष्य कृतकृत्य हो जाता है। कोटि तीर्थ में जाकर जो ब्राह्मण भोजन
कराता है उसे एक ब्राह्मण भोजन से करोड़ों गुना लाभ होता है।
यज्ञोपवीत, छत्र, जूता, वस्त्र, कमण्डलु दान देने से महादान
संपन्न हो जाता है। गायत्री जप मात्र से वेद पाठ का फल मिलता
है। जो महाप्राण त्याग करता है उसका पुनर्जन्म नहीं होता।

संस्कृत

इत्युक्त्वा च हे दुष्टं राजा राजेश्वरः शनैः।
दृष्ट्वा तस्मिन्नहं देव दीप्यमानं स्वतेजसा ॥४९
रजः चक्षुर्विधानेन चक्षुरस्य विदुः सुरैः।
नाना विधो पुरुषैश्च स्तुत्वा स्तोत्रैरनेकधा ॥५०
कार्तवीर्योऽपि धर्मज्ञो धर्मरूपं कृपान्वितः।
दृष्ट्वा कालदेवानां शक्रादि स्वगणान्वितः ॥५१
दृष्ट्वा राजा राजेन्द्रं प्रीतो प्रोच्य सहेश्वरः।
प्रार्थयि मास रीशानं चिन्तं नश्वरे श्वरः ॥५२
स्थानस्य रक्षणार्थाय कार्तवीर्य विश्वेश्वरोऽमया।
सर्व लोकहिताचार्य गतो स्वौ पालितः ॥५३

OM: One God Universal Garland of Offerings #12

६८

भाषा

इतना कहकर वे देवगण राजराजेश्वर जी के देखने के लिये
चले गये जो अपने तेज से दीप्यमान हो रहे थे। लिङ्गरूपी
सुदर्शनचक्र की इन लोगों ने विधी विधान से किया। अनेक
प्रकार के उपचार से पूजा करके स्तोत्र पाठ किया। धर्मात्मा मार्तण्डीय
जी ने कृपा करके रुद्राक्ष आदि अपने गणों के साथ सबको
दर्शन दिया। राजेश्वर जी को देखकर प्रसन्न होकर शिवजी
ने कहा चिरकाल के इस स्थान को रक्षा काशी विश्वनाथ के सरीखे
करना चाहिये जिससे सबका कल्याण होवे।

४६-५७-५९-५८=५३

संस्कृत

यथा मुक्तिप्रदा काशी गङ्गयाभिः समन्विता
तथा रेवाभिजुष्टेयमस्तु स्वर्गफलप्रदा ॥५४॥
एवं तैः प्रार्थितो देवस्तत्रावासमरोचयत्
स्थिरीभूतं नरेशं तं ज्ञात्वा ब्रह्मा ऽब्रवीत्तदा ॥५५॥
प्रतिदिक्षु गणेशाश्च क्षेत्रपालाश्च चण्डिका
रक्षार्थं तस्य तीर्थस्य स्थापनीयं महेश्वर ॥५६॥
सार्द्धकोशद्वयं क्षेत्रं तत्तीर्थस्य मुक्तिदम्
पुरी माहिष्मती सेयं चतुर्योजनसंस्थिता ॥५७॥
प्रदक्षिणेन विजया प्रमाणं देव निर्णये
तत्र मध्ये मृतो जन्तुः स्वर्गमोक्षाय कल्पते ॥५८॥

भाषा

जिस प्रकार काशी गंगा जी के कारण मोक्ष देने वाली होगई है
उसी प्रकार नर्मदा के साथ से माहिष्मती भी मोक्षदात्री होगई है।
इस प्रकार देवगणों के प्रार्थना करने पर कहे कि यहां पर निवास करना
अच्छा है। स्थिर नरेश कार्तवीर्यार्जुन जानकर ब्रह्मा जी ने कहा कि माहिष्मती
के दिशाओं में गणों की रक्षा के लिये गणेश और क्षेत्रपाल रखे जाने
अढ़ाई कोश के क्षेत्र में कार्तवीर्य जी का मुक्तिदाता क्षेत्र है
माहिष्मती की चार योजन लम्बी प्रदक्षिणा चाहिये दक्षिण उत्तर
का घेरा लेकर प्रमाण है। स्थित जीव को मोक्षार्थी समझना ॥५८॥

६०

संस्कृत

कायिकं वाचिकं पापं मानसं यत् पुरा कृतम्
तत् क्षालयति देवेशो दर्शनादेव नर्मदा ॥५९॥
इत्युक्त्वा ददृशुर्देवी राजराजेश्वरी तदा
पूजां चक्रुः सिद्धिविनायकम् गणं सिद्धिं जिनाधिपम् ॥६०॥
कवचोक्तप्रकारेण ददृशुः सर्वदेवताः
नमस्कृत्वा यथान्यायं ततो जग्मुश्चतुर्भुजम् ॥६१॥
नारायणं पद्मकरं शंखचक्रगदाधरम्
सुनन्दनन्दप्रमुखैः सेव्यं पीतवस्त्रधरम् ॥६२॥
महालक्ष्म्याः समीपं ते पूजयामासुरादरात्
दिव्यगन्धैः पुष्पैः दीपनैवेद्यभक्तिभिः ॥६३॥
उपचारैः षोडशभिः पूजयित्वा जनार्दनम्
नमस्कृत्वा यथास्थानं कृताञ्जलिपुटाः स्थिताः ॥६४॥

भाषा

कायिक वाचिक मानसिक तथा पुराने किये हुए पापों को
श्री नर्मदा जी दर्शन मात्र से छोड़ा करती हैं। इतना कह
श्री राजराजेश्वरी देवी को तथा सिद्धि विनायक जी को
पूजा किया। कवचोक्त प्रकार से सब देव गण चतुर्भुज
भगवान को प्रणाम किये नारायण कमलों में शंख चक्र
गदा धारण किये हुए हैं। नन्द सुनन्द प्रमुख गण पीताम्बर
धारण किये हुए थे लक्ष्मी जी के पास धूप दीप नैवेद्य
आदि षोडशो उपचारों से पूजा किये नमस्कार करके हाथ जोड़कर
यथा स्थान बैठ गये - ५९-६०-६१-६२-६३-६४

संस्कृत

ततः प्रसन्नो भगवान् देवानां प्रत्युवाच ह
भवतीभिः रहस्यमासितव्यं क्षणे सदा ॥६५॥
लोकैः संपूज्य मानानां भवतां हि भविष्यति
चतुर्भुजस्य नगरं अतुलं ब्रह्मा ब्रवीति हि ॥६६॥
स्थास्यामः पुण्डरीकाक्ष तव दर्शन कांक्षया
ये पश्यन्ति जिन क्षोभ्यां ते मुक्ता सर्वकिल्बिषैः ॥६७॥

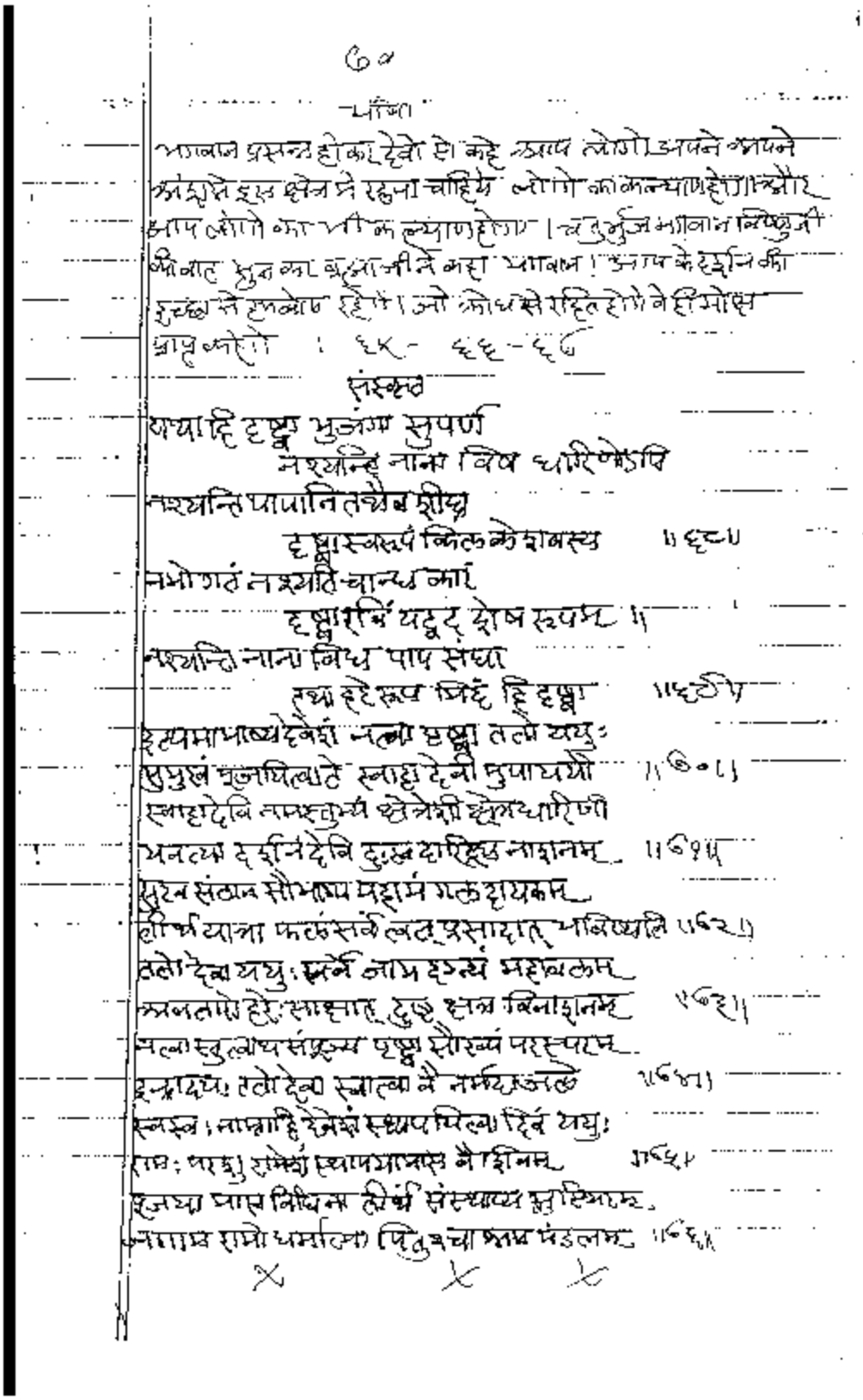

६०

भाषा

भगवान प्रसन्न होकर देवों से कहे आप लोगों अपने अपने
अंशों से इस क्षेत्र में रहना चाहिये लोगों का कल्याण होगा और
आप लोगों का भी कल्याण होगा। चतुर्भुज भगवान विष्णु जी
ओ नाथ ध्रुव का ब्रह्मा जी ने कहा भगवान! आप के दर्शन की
इच्छा से हम लोग रहेंगे। जो क्रोध से रहित होंगे वे ही मोक्ष
प्राप्त करेंगे। ६५-६६-६७

संस्कृत

यथा हि दृष्ट्वा भुजंगं सुपर्णं
नश्यन्ति नाना विष धारिणोऽपि
नश्यन्ति पापानि तथैव शीघ्रं
दृष्ट्वा स्वरूपं किल केशवस्य ॥६८॥
नभो गतं नश्यति चान्धकारं
दृष्ट्वा रविं यद्वद् दोष रूपम् ॥
नश्यन्ति नाना विध पाप संघा
तथा हरे रूप मिदं हि दृष्ट्वा ॥६९॥
इत्यमाभाष्य देवेशं नत्वा दृष्ट्वा तत्रो ययुः
सुमुखं मुनयित्वा ते स्नाह्वा देवी मुपाययौ ॥७०॥
स्नाह्वा देवि नमस्तुभ्यं क्षेत्रेशी क्षेत्रधारिणी
भवत्या दर्शनं देवि दुःख दारिद्र्य नाशनम् ॥७१॥
सुख संतान सौभाग्य महाभंग फल दायकम्
तीर्थ यात्रा फलं सर्वं त्वत् प्रसादात् भविष्यति ॥७२॥
ततो देवा ययुः सर्वे नाम दृश्यं महाबलम्
अनन्तो हरे साक्षात् दुष्ट शत्रु विनाशनम् ॥७३॥
नत्वा स्तुत्वा च संपूज्य पृष्ट्वा सौख्यं परस्परम्
इन्द्राद्याः ततो देवा स्नात्वा वै नर्मदा जले ॥७४॥
स्नात्वा नाम्नाहि देवेशं स्थापयित्वा दिवं ययुः
राम: परशु रामेशं स्थापयामास वै शिवम् ॥७५॥
रजया प्राप्त विधिना तीर्थं संस्थाप्य मुक्तिदम्
नाम्नाम रामो धर्मात्मा पितुश्चा श्रम मंडलम् ॥७६॥

देव सिद्धाये राजानो जग्मु सर्वे यथागता।
यः पठेत् कोटि तीर्थस्य श्रृणुयात् सर्व मुक्तिभाक् ॥ ६६ ॥
इति श्री वायु पुराणे माहिष्मती माहात्म्ये षोडशोऽध्यायः

भाषा

इस प्रकार कहकर भगवान शिव को नमस्कार करके सुमुख गणेश
की प्रदक्षिणा करके स्नाह देवी के पास गये। देवि स्नाहजी आपको हमारा
प्रणाम है आप इस क्षेत्र की स्वामिनी हैं। आप के दर्शन मात्र से ही
दुःख और दरिद्रता दोनों मिट जाती है। आप का दर्शन सुख संतान और
धन धान्य देने वाला है। तीर्थ यात्रा का फल आप के आशीर्वाद से मिले
आशीष। इसके बाद देवगण भगवान परशुराम जी के पास गये
प्रणाम करके परस्पर कुशल क्षेम पूछे इसके बाद इन्द्रादि देवगण
नर्मदा जी में स्नान करके अपने अपने नाम से शिवलिंग स्थापित
किये। परशुराम जी ने अपने नाम के परशु रामेश्वर शिव जी की स्थापना
किया। पश्चात पिता जी के पास चले गये। देवगण सिद्धगण और
राजालोग जहां से आये थे वहां वहां अपने अपने घर चले गये
जो इस कथा को सुनता है वह मोक्ष लाभ करता है ॥

५८-५९-६०-६१-६२-६३-६४-६५-६६

श्री वायु पुराण में वर्णित माहिष्मती माहात्म्य का सोलहवाँ
अध्याय पूरा हुआ

ॐ
सत्यं वद
धर्मं
चर

६३

अथ सप्तदशोऽध्यायः

शौनक उवाच → शौनक जी ने कहा

संस्कृत

अरण्ये विन्ध्यकूटे यद्गुरुपर्वत सन्निधौ
अमरकण्टकतो प्रत्यक् मेकलातीरसंस्थितम् ॥१॥
क्षेत्रमेतद् चमाख्यातं कार्तवीर्यस्य धीमतः
पुण्यं पापहरं दिव्यं सर्वदेवैरधिष्ठितम् ॥२॥
प्रदक्षिणानुसारेण तीर्थं लिंगाभिषेचनम्
आश्रमाश्चेतिहासाश्च देवर्षीणां नृपोत्तमा ॥३॥
स्नानदानजपोहोम स्वाध्यायस्य फलं वद
पितॄणां श्राद्धदानस्य व्रतानां च विशेषतः ॥४॥
वक्त्रमुखोद्भवं पीयूषं पीत्वा कर्णपुटेन हि
तृप्तिं नैव गता सूत तीर्थं विस्तरतो वद ॥५॥
शौनकस्य वचःश्रुत्वा नत्वा केशव शंकरौ
कार्तवीर्यं च देवीं च सूतः प्रोवाच शौनकम् ॥६॥

भाषा

विन्ध्यपर्वत के अरण्य में गुरुपर्वत के समीप से अमरकण्टक पर्वत में नर्मदा तीर पर स्थित जो क्षेत्र है, वह परम प्रसिद्ध महाराज कार्तवीर्य जी का क्षेत्र है। यह क्षेत्र पुण्य स्वरूप पाप नाश करने वाला, देव गण से स्थित जाना प्रदक्षिणा क्रम से तीर्थों को कृपया कहिये जो कि ऋषियों के आश्रमों तीर्थों के स्थान, स्नान दान से भरपूर, जप होम स्वाध्याय का फल दाता है। आपके मुखारविन्द से निकली हुई अमृत वाणी श्रवण करने पर मेरे सबको तृप्ति नहीं हो रही है; कृपया विस्तार पूर्वक कहिये। शौनक जी की बात सुनकर सूत जी ने भगवान शिव और विष्णु भगवान श्री कार्तवीर्य जी व श्री नर्मदा माँ को मन से प्रणाम करके कहा ॥ १-२-३-४-५-६

संस्कृत

सूत उवाच:—

शृणु शौनक वक्ष्यामि यत् पृष्टोऽहमिह त्वया
तत्सर्वं तु समासेन को नु विस्तरतो वदेत् ॥७॥
प्रातः स्नानं विधायादौ सन्ध्याकर्म समाचरेत्
कुश पुष्पाक्षतान् गन्धानादाय हरिं मर्चयेत् ॥८॥
राजराजेश्वरं सांगं पूजयित्वा महेश्वरम्
कोटितीर्थं ततो गच्छेत् ब्राह्मणैः सह सादरम् ॥९॥
तत्र स्नानं विधायादौ द्विजमंत्रपुरस्सरम्
पूजयेन्नर्मदां देवीं द्विजान् कोटीश्वरं तथा ॥१०॥
दध्यादानं यथाशक्त्या धेनुं स्वर्णादिभूरिशः
आदौ संप्रार्थ्य देवेशं राजराजेश्वरं शिवम् ॥११॥
देव देव जगन्नाथ भक्तानुग्रहकारक
देहि प्रदक्षिणानुज्ञां मम शान्तिकरो भव ॥१२॥

भाषा

सूत जी ने कहा, हे शौनक जी! आपने जो हमसे पूछा है, उसे मैं संक्षेप में ही कहूँगा। विस्तार से वर्णन करने में भला कौन व्यक्ति समर्थ है!! पहले प्रातः शौचादि से निवृत्त होकर स्नान के बाद प्रातः सन्ध्योपासना करने के बाद कुश, फूल, अक्षत, चन्दन इत्यादि से भगवान राजराजेश्वर की पंचोपचार षोडशोपचारादि से पूजा करे, पूजा करने के पश्चात कोटितीर्थ ब्राह्मणों के साथ जावे, वहाँ सब के साथ फिर स्नान करके मंत्रपूर्वक स्नान करना चाहिये। श्री नर्मदा माता की पूजा करे फिर विद्वान ब्राह्मणों की पूजा करे अपनी शक्ति अनुसार गोदान, स्वर्णदान, अन्नदान वस्त्राभूषणादि दान करे। भगवान राजराजेश्वर की प्रार्थना करे हे देवाधिदेव जगन्नाथ! भक्तों पर कृपा करने वाले प्रभो! हमें प्रदक्षिणा की आज्ञा दीजिये हमारे लिये आप शान्तिदायक बनें!!

६५

संस्कृत

असारे खलु संसारे मृगतृष्णेन चञ्चले
स्थावरे जंगमे चैव न्यून ग्रामे चतुर्विधे ॥१३॥
नास्ति धर्मात परो बन्धु नास्ति धर्मे सुखं परम्
धर्मो माता पिता बन्धु धर्मो भ्राता सुहृत्सखा ॥१४॥
आधारः सर्व भूतानां त्रैलोक्ये सचराचरे
स धर्मस्त्वं परो देव तस्मात धर्मं समाचरेत ॥१५॥
क्षेत्र प्रदक्षिणा येन कृता देव विधानतः
भूमि प्रदक्षिणा जातं फलं तस्य मुहूर्तमयः ॥१६॥
अतो माहेश्वरं क्षेत्रं प्रादक्षिण्यं करोम्यहम्
निर्विघ्नं चास्तु मे देव ब्राह्मणानां प्रसादतः ॥१७॥

भाषा

यह असार संसार मृगतृष्णा के समान चञ्चल है। स्थावर जंगम उत्पन्न स्थावर चार प्रकार का संसार है। धर्म के समान कोई बन्धु नहीं है, धर्म के समान कोई सुख नहीं है धर्म माता है, धर्म पिता है, धर्म ही भाई है, धर्म ही सुहृत्सखा है, सचराचर संसार में सब भूतों का आधार धर्म है। हे भगवन् धर्म ही सब कुछ है इस लिये धर्माचरण सदैव करना चाहिये जिसने इस माहेश्वर क्षेत्र की प्रदक्षिणा किया उसने सारी पृथ्वी मण्डल की परिक्रमा कर ली ऐसा हमने सुन रखा है अतः मैं इस माहेश्वर क्षेत्र की प्रदक्षिणा करूँगा आप से प्रार्थना है हमारी यह प्रदक्षिणा प्रक्रिया सफल हो जाये यही आप से विनती है। १३ - १४ - १५ - १६ - १७

संस्कृत

इत्यं प्रदक्षिणां कुर्यात यस्य यात्राविधानतः
कामदं मोक्षदं चैव कोटितीर्थं पुरातनम् ॥१८॥
दुग्धाख्यमेव कमलेश तिलकं तिलकेश्वरम्
गोतमं गौतमेशं च मातृकं मातृकेश्वरम् ॥१९॥
लक्ष्मीनारायणं तीर्थं गृहस्थीं च गृहेश्वरम्
सुमुखं सुमुखेशं च भार्गवं भार्गवेश्वरम् ॥२०॥

६५

साक्षीतीर्थं महापुण्यं गौरीतीर्थं मतः परम्
मातंगतीर्थं विख्यातं मातंगेश्वरमेव च ॥२१॥
नर्मदायाश्च मध्यस्थे रत्नद्वीपे त्रिलोचनम्
सिद्धेश्वरं च बाणेशं रावणेश्वरमेव च ॥२२॥

भाषा

कहे हुए के अनुसार प्रदक्षिणा करना चाहिये, कामनापूर्ण करने वाला और मोक्षदेने वाला प्राचीन कोटितीर्थ है; दुग्धेश्वर, अहल्येश्वर, तिलकेश्वर, तिलकेश्वर तीर्थ, गौतमेश्वर तीर्थ, लक्ष्मीनारायण तीर्थ, गरुड़तीर्थ, गरुड़ तीर्थ, सुमुख, सुमुखेश्वर तीर्थ, अग्नि अग्निश्वर तीर्थ, साक्षी विनायक, गौरीश्वर तीर्थ मातंग तीर्थ मातंगेश्वर तीर्थ; नर्मदा जी के मध्य में रत्नद्वीप है जहां तीन त्रिनेत्र जी विराजमान हैं। जो कि सिद्धेश्वर - बाणेश्वर रावणेश्वर के नाम से प्रसिद्ध हैं॥१९-२०-२१-२२

संस्कृत

अशोके च तत्तीर्थं कालं कालेश्वरं तथा
नलतीर्थं नलेशं च अंगारतीर्थं समागमम् ॥२३॥
अंगारेशं गणेशं च क्षेत्रं विस्तारतः स्थितम् ॥२४॥
चन्द्रमसं नमस्कृत्य सुदर्शनं मुनेस्तथा
निम्बं दैत्यं नमस्कृत्य मनोरथं नमं तथा ॥२५॥
हनुमन्तं गणेशं च दक्षिणकालिकां भजेत्
पुनर्नामाश्रमानत्वा रामाश्रमं ततो व्रजेत ॥२६॥

भाषा

अशोक में अशोक नामक तीर्थ को कालेश्वर को, नल तीर्थ नलेश तीर्थ, अंगार तीर्थ; अंगारेश गणेश का दर्शन करना जो क्षेत्र की सीमा पर है। चन्द्र तीर्थ को नमस्कार करके सुदर्शन मुनि का दर्शन करना निम्नासुर नाम के दैत्य को नमस्कार करके हनुमान जी, गणेश जी का दर्शन करना फिर दक्षिण कालिका का दर्शन करना मुनियों के आश्रमों को नमस्कार करके रामाश्रम को जाना चाहिये। २३-२४-२५-२६

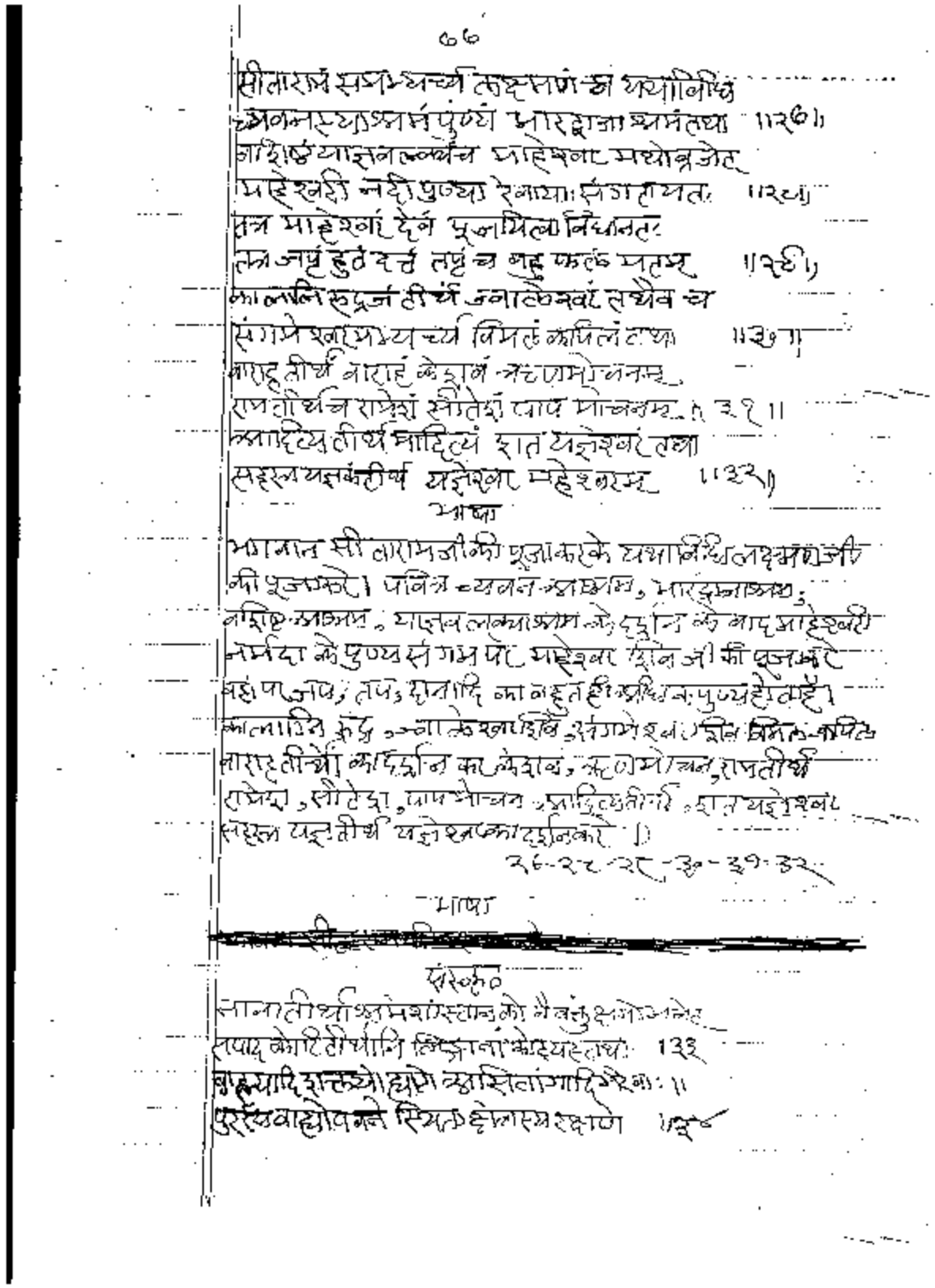

६८

मण्डलेश्वर मारभ्य करमर्दी समाश्रयम्
ब्राह्मी पुरेश्वरी कालभैरवं चान्तःपुरेश्वरम् ॥३५॥
तत्र तीर्थाश्रम सुरः विनिध्या नाम तः स्थिता॥
मनसा भावयेत्सर्वान् नमस्कृत्वा सुरेश्वरम् ॥३६॥
मध्यमा कुस्वी त्रिधा प्रोक्ता प्रदक्षिणा
यथा शक्त्या च कर्तव्या भुक्ति मुक्ति प्रदायिनाम् ॥३७॥

भाषा।

मैं बहुत से तीर्थों और आश्रमों की महिमा वर्णन करने में समर्थ नहीं हूँ, सवा करोड़ शिव लिंग और सवा करोड़ ही तीर्थ हैं। ब्राह्मी माहेश्वरी आदि शक्तियाँ हैं, काल भैरव आदि आठ भैरव हैं। ये लोग इस पुरी (माहेश्वरपुर) रक्षा के लिये लगे हुए हैं। मण्डलेश्वर से लेकर करमर्दी संगम तक अग्नायुरी देवी से लेकर कालभैरव तक सीमा है; यहाँ देवों के आश्रम विनिध्य नाम से प्रसिद्ध हैं; सभी को मन से पूजा व नमस्कार करके जाना चाहिये। बड़ी मध्यम लघु ये तीन प्रकार की प्रदक्षिणा होती है यथा शक्ति जो सके वह करना चाहिये।

३३-३४-३५-३६-३७

संस्कृत

निर्माल्यं च देवस्य राजराजेश्वरस्य च
तीर्थ यात्रादिकं सर्वं प्रायश्चित्तं नराधिपम् ॥३८॥
देवदेव जगन्नाथ चक्रपाणे जनार्दन
यथा शक्त्या कृतं कर्म सर्वं तत् सफलं कुरु ॥३९॥
इन्द्राग्नेश्वरणं स्थिलाकरणात्पूजयेत्तरः
गोदानं स्वर्णदानादि दद्याद्वै सोपकारणम् ॥४०॥
दक्षिणां गुरवे दद्यात् भूयसीं च ततः परम्
शक्त्या दद्याद्यथा शक्त्या चित्तं शाठ्यं निवर्तयेत् ॥४१॥
सर्वं ब्रह्मार्पणं कृत्वा नत्वा देवं ततो व्रजेत्
एवं च समासिकं प्रोक्तं तीर्थं यात्रा विधानकम् ॥४२॥
य इदं शृणुयात् भक्त्या यत वाक्कुरुयात् मानवः
तेदानेन समं पुण्यं लभते नात्र संशयः ॥४३॥
इति श्री माधुपुराणे भविष्यती माहात्म्ये सप्तदशोऽध्यायः

१७

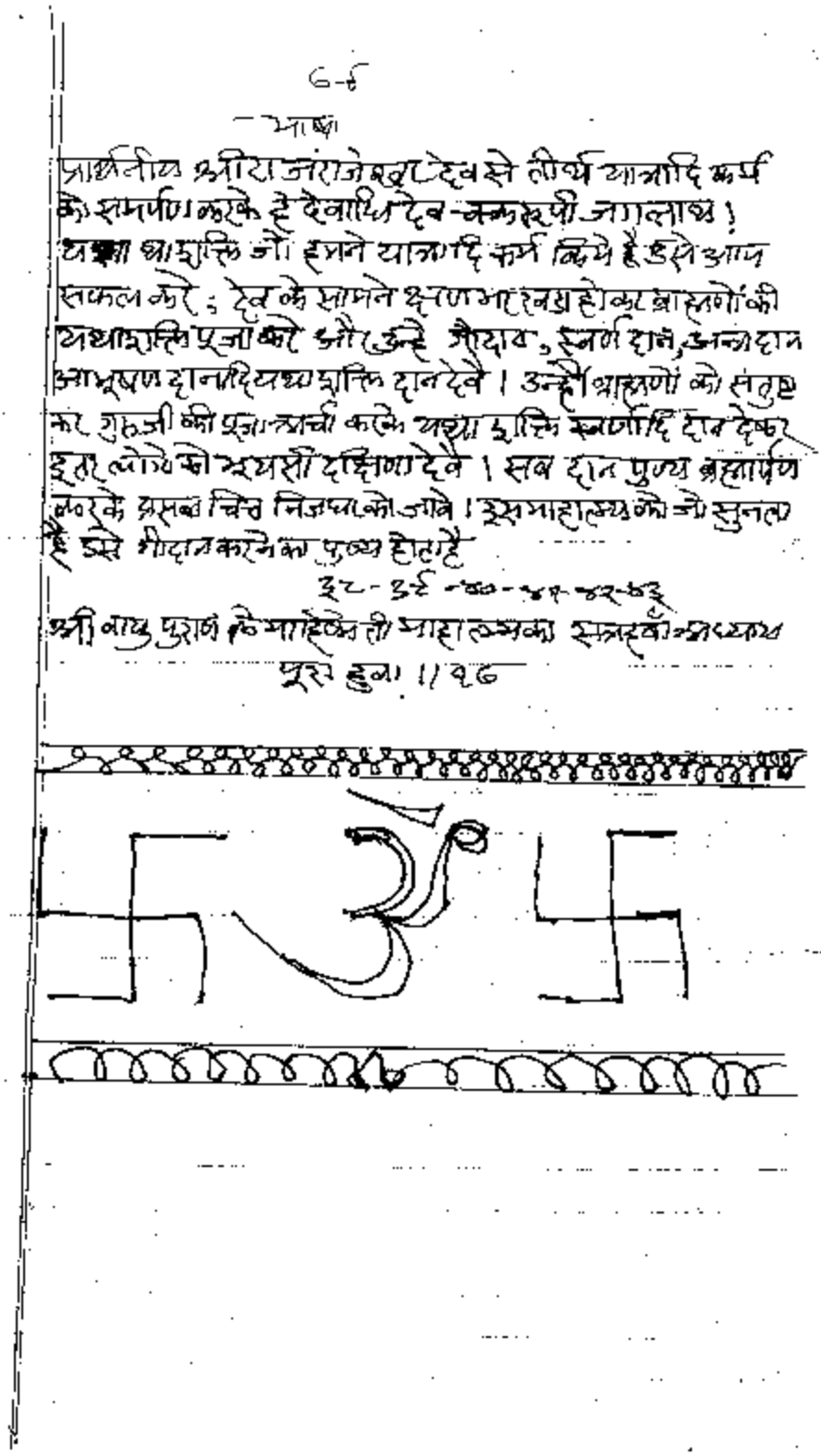

६-६

भाषा

प्रार्थनीय श्रीराजराजेश्वर देव से तीर्थ यात्रादि कर्म
को समर्पण करके हे देवाधिदेव - रूपी जगन्नाथ !
यथा शक्ति जो हमने यात्रादि कर्म किये है उसे आप
सफल करे ; देव के सामने क्षण भर स्थिर होकर ब्राह्मणों की
यथाशक्ति पूजा करे और उन्हे मोदाव, स्वर्ण दान, अन्नदान
आभूषण दानादि यथा शक्ति दान देवे । उन्हीं ब्राह्मणों को संतुष्ट
कर गुरुजी की पूजा-अर्चा करके यथा शक्ति स्वर्णादि दान देकर
इतर लोगों को यथासी दक्षिणा देवे । सब दान पुण्य ब्रह्मार्पण
करके प्रसन्न चित्त निजघर को जावे । इस माहात्म्य को जो सुनता
है उसे मोदान करने का पुण्य होता है

३८-३९ ~~४०-४१-४२-४३~~

श्री वायु पुराण के माहेश्वरी माहात्म्य का सत्रहवाँ अध्याय
पूरा हुआ ॥ १८

अथाष्टादशोऽध्यायः

शौनक उवाच :-
धर्मारण्ये विन्ध्यकूटे यज्ञ पर्वत सन्निधौ
अमरकण्टकतो प्रत्यक्मेकलातीर संस्थितम् ॥१॥
क्षेत्रमेतत्तु विख्यातं कार्तवीर्यस्य धीमतः
पुण्यं पापहरं दिव्यं सर्व देवैरधिष्ठितम् ॥२॥
प्रदक्षिणानुसारेण तीर्थ लिङ्गा भिदं वद
आश्रमाश्चेतिहासांश्च देवर्षीणां नृणां तथा ॥३॥
स्नान दान जपो होम स्वाध्यायस्य फलं वद
पितॄणांश्राद्धदानस्य व्रतानां च विशेषतः ॥४॥
त्वन्मुखेदभव पीयूष पीत्वा कर्ण पुटैर्न हि
तृप्तिं नैव गता सूत तीर्थं विस्तरतो वद ॥५॥
शौनकस्य वचः श्रुत्वा नत्वा केशव शंकरौ
कार्तवीर्यं च रेवां च सूतः प्रोवाच शौनकम् ॥६॥
सूत उवाच
शृणु शौनक वक्ष्यामि यत्पृष्टोऽहमिहत्वया
तत्सर्वं तु समासेन न तु विस्तरतो वदे ॥७॥
इति श्री वायुपुराणे माहिष्मती माहात्म्येऽष्टादशोऽध्यायः ॥१८॥

भाषा

शौनक जीने कहा कि हे सूतजी! धर्मारण्य में विन्ध्यपर्वत के समीप में यज्ञ पर्वत है उसके समीप अमरकण्टक से पश्चिम दिशा में नर्मदा के किनारे जो क्षेत्र है वह संपूर्ण क्षेत्र महाराज कार्तवीर्यार्जुन जी का है जहां पाप हरने वाले पुण्य दायी देवगण ऋषि सिद्धों के आश्रमों से व्याप्त है वहां स्नान, ध्यान, जप, होम, स्वाध्याय, पुराणादि आदि का पठन पाठन होता रहता है। पितरों का श्राद्ध करने दान देने व्रतादि करने अधिक पुण्य है। आपके मुखारविन्द से अमृत समान वाणी सुनकर तृप्ति नहीं होती। शौनक जी की बात सुनकर भगवान विष्णु और शिव जी को नमस्कार करके कार्तवीर्य जी व नर्मदा जी को नमस्कार करके सूत जी ने कहा जो आपने कहा वह मैं संक्षेप में ही अल्प शब्दों में कहूँगा।

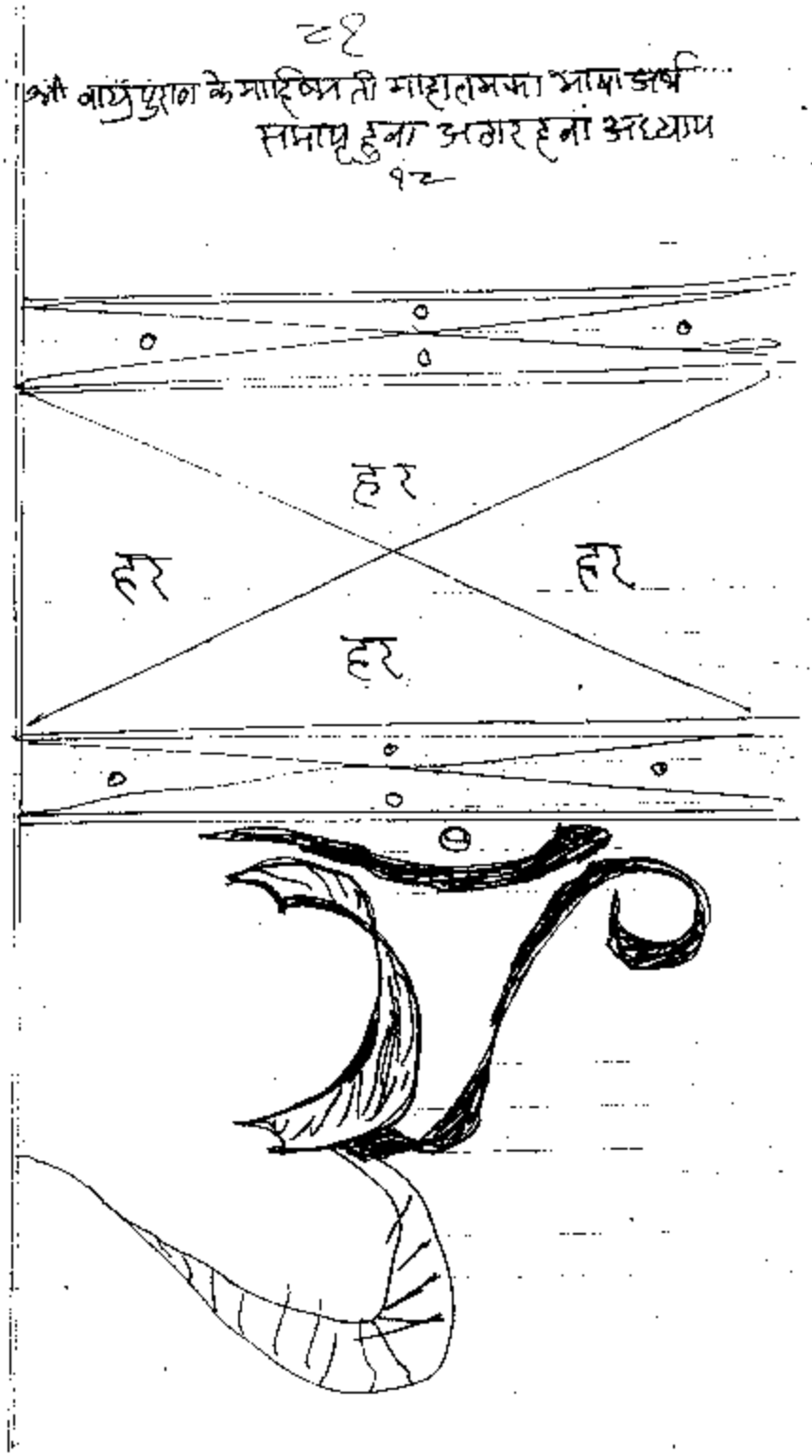
हर
हर
हर
हर

एकोनत्रिंशोऽध्यायः

मार्कण्डेय उवाच :—

मार्कण्डेयजी ने कहा

ततो गच्छेत राजेन्द्र तिलकेश्वरमुत्तमम्
रेवायाश्चोत्तरे कूले माहिष्मत्यां च सन्निधौ ॥१॥
गौतमो नाम विप्रर्षि ब्रह्मदेव सुतः स्वयम्
शापमायामहिल्यातु शक्रं तुष्टो युधिष्ठिर ॥२॥
नर्मदा तीर माश्रित्य तपश्चक्रे समाहितः
मन्त्राश्रमे सशिष्यश्च ब्रह्मध्यानरतोमुनिः ॥३॥
ध्यायन्नक्षरं जप्त्वा ब्रह्मब्रह्म निदिध्यासदा नृत
ब्रह्मेव ब्रह्म तनयश्चचार तप चोत्तमम् ॥४॥
पूर्णे सहस्रवर्षे च तपस्तेपे समाहितः
एवं लोकेन महता विनस्वतः कुलोद्भवः ॥५॥
वैवस्वतमनोः पुत्रो विद्वान् सर्व गुणान्वितः
तिलको नाम राजर्षि भूपानां तिलको यथा ॥६॥

भाषा

श्रीमार्कण्डेयजी ने कहा हे महाराज ! इसके पश्चात् तिलकेश्वर
नाम शिवलिंग कहना चाहिये जो कि माहिष्मती नगरी में नर्मदा
जी के उत्तर तट पर है। ब्रह्मर्षि गौतम जी जो स्वयं ब्रह्मदेव
के पुत्र थे अपनी भार्या अहिल्या देवी को इन्द्र द्वारा दूषित
होने के कारण शाप दे दिया (पाषाण हो जाने का शाप) नर्मदा
तट अपने शिष्यों के साथ आकर घोर तपस्या किया पूरे एक
हजार वर्ष तक ब्रह्म का ध्यान जप आदि कठोर तप किये बहुत दिनों
में सूर्य वंश में तिलक नामक राजा विद्वान धार्मिक अपने वंश
में तिलक समान थे ... १-२-३-४-५-६

संस्कृत

कदाचिन्मृगयां राजा रममाणो निशोषतु
तपोवनानि संपश्यन् तीर्थानीर्थ वनाद्वनम् ॥७॥
रेवा तीरतो दृष्ट्वा गंभीरं नीलमुत्तमम्
तथैव मलिनं वीक्ष्य पुलिनं नलिनेक्षणः ॥८॥

भाषा

एक बार महाराज मृगया खेलने के बहाने से तपोवनों को देखते हुए, एक तीर्थ से दूसरे तीर्थ को चलते हुए नर्मदा तट पर आये यहाँ गम्भीर अगाध जल देखकर प्रसन्न हो गये लेकिन कुछ गन्दगी वाले किनारे को देखकर राजा सोच में पड़ गये

संस्कृत

गौतमस्य मुनेर्मत्वा आश्रमं भ्रमनाशनम्
आगत्य सहसा विप्रं नमश्चक्रे रथो नृपः ॥९॥
अर्घेण च तथा पाद्य विष्टरैः कुशलेन च
गौतमेनार्चितो राजा बहुमान पुरस्सरम् ॥१०॥
अन्योन्यं कुशलं पृष्ट्वा राजा प्रपच्छ तं मुनिम्
रेवातीरे विशेषं च तपसः कारणं मुने ॥११॥

भाषा

श्रीमान् गौतम ऋषि जी के आश्रम को जानकर परमानन्द दूर करने के लिये सहसा मुनि जी के आश्रम में आकर महाराज ने मुनि जी को प्रणाम किया। मुनि जी ने अर्घ पाद्यादि से राजा का सत्कार किया एवं दूसरे का परस्पर कुशल क्षेम पूछे। नर्मदा तट पर आकर तपस्या करने का ऋषि जी से कारण पूछा ॥९-११॥

संस्कृत

राजोवाच :— महाराज ने कहा
अद्य मे सफलं जन्म मुने प्राप्तं न किं मया
धन्योऽस्मि नानुगृहीतोऽस्मि ब्रह्म पुत्रेण वै मुने ॥१२॥
प्राप्तो यदहं प्रसंगेन रेवा तीर्थ च गुरुम्
तपस्तीर्थं निलयं गौतमं मुनिपुंगवम् ॥१३॥
सदिभराचरितं तीर्थं न स्नातोऽहं भवं क्वचित्
तपस्य कारणं वद किमर्थं तप्यसे मुने ॥१४॥
ज्ञानमपि सद् नुदेया योजय स्नातिषि गृहे
गौतम उवाच :—

भाषा

महाराजा ने कहा कि, भावन्! आज मेरा जन्म सफल हो गया। मैंने क्या क्या? नहीं पाया सब कुछ पा लिया। मैं धन्य हो गया। अनुग्रहीत हो गया। ब्रह्मदेव के पुत्र महर्षि गौतम जी के दर्शन मात्र से। हमने भाग्य से ही भावी नर्मदा जी के तट पर सिद्ध गुरु जी को पाया। इस पवित्र तीर्थ स्थल पर महान तपस्या करते हुए मुनि श्रेष्ठ गौतम जी को पाया। सज्जनों से आचरित, स्वाभाविक प्रकट होने वाले स्थान अचित ही होते हैं। भावन्! तपस्या का कारण बताइये। क्यों इतना कठोर तप कर रहे हैं? हमें भी सद् बुद्धि देकर अपने अतिथि गृह में रख लीजिये। इतना सुनने पर महर्षि गौतम जी ने कहा —— १२-१३-१४

संस्कृत

राजन् त्वं ह्येष तिलकः तिलकद्वय उच्यते ॥१५॥
शृणु तत्कारणं येन तप्यते ऽत्र तपो मया
सुरैश्वर्यं श्रियं प्राप्य मदोन्मत्तः पुरन्दरः १६
मायाविना तमुपागम्य आश्रमं मे वपुर्धरः
अहिल्यां धर्षयित्वा मां शापं मह्यं प्रदत्तवान् १७
शापाच्चाहिल्या च राजेन्द्र पाषाणोऽहं त्रिलोचनः
तस्माद्भर्गं निहत्यैव तत्पदं नैव निर्वृतः ॥१८॥
कालं सार्थकतां कर्तुं आगतोऽहं निरामयः
तपसि पापदहनं स्मर्तुं स्मरहरं हरम् ॥१९॥
अनादिनिधनो देवः शूलपाणिर्महेश्वरः
असन्यस्तो चोत्तरे तीरे देवोऽस्मिन् राजसत्तम ॥२०॥

भाषा

राजन् आप अपने सूर्यवंश में तिलक नाम वाले सिंह में तिलक के समान श्रेष्ठ आदर से पूज्य हो। आप कारण सुनिये जिस कारण से मैं यहाँ तपस्या कर रहा हूँ। देवराज इन्द्र ने अपने तप पदवी के ऐश्वर्य के चमक में मस्त होकर मायावी दुष्ट वेश रूप धारण कर मेरी परमप्रिया स्त्री अहिल्या को भ्रष्ट कर दिया। अहिल्या मेरे ही शाप से पाषाण हो गई। हम दुखी होकर भगवान शिव जी की पुत्री नर्मदा तीर पर दुखी होकर तप करने लगे काल को सार्थक करने के लिये भगवान शिव की आराधना कर रहा हूँ। १५-१६-१७-१८-१९-२०

८५

संस्कृत

सप्तमन्वन्तराणीह देवस्य स्थितिधारिणः
मन्वन्तराद्ये तद्वंश्या प्रादुर्भावितिशंकरः ॥२१॥
मन्वन्तरान्ते च पुनः प्रलयो मध्ये निलीयते
मन्वन्तरस्य पूर्वार्धे यावल्लिङ्गं समुद्भवेत् ॥२२॥
ततोऽपरार्धे तस्यैव स्वरूपं भाल्यं प्रयोद्भवेत्
पुरा प्रियव्रतो राजा स्वायंभुव मनोः सुतः ॥२३॥
श्रुत्वा तेन महाभाग शिव देहोद्भवं सरित्
नर्मदा नाम सप्तकल्पा च वर्तिनी ॥२४॥
पुण्या शिव प्रियाहेनी पाप सापापहारिणी
तस्यातीरे शिवो नित्यं सत्यं वास मुपाश्रितः ॥२५॥

भाषा

राजन्! देव की रहते यहाँ सात मन्वन्तर होगये। मन्वन्तर के आदि में शिवजी से शिव जी निकलते हैं अन्त में मन्वन्तर के पृथिवी में ही निलीन हो जाते हैं। पूर्वार्ध के बाद बहुत धीरे धीरे पृथिवी में चले जाते हैं। स्वायंभुव मनु के पुत्र प्रियव्रत राजा नर्मदा की कथा सुनो कि नर्मदा शिव पुत्री सप्तकल्पा है पुण्य स्वरूप पाप नाशक करने वाली इसके तट पर शिव जी निवास करते हैं।

२१-२२-२३-२४-२५

संस्कृत

इत्याकर्ण्य तदा राजा पुत्रं राज्ये निवेश्य च
देवसेवा समिलाषी विप्रैः सार्धमुपागतः ॥२६॥
इतः प्रगत्योत्तरं तीरं मुदं प्राप्य पार्थिवः
स्नात्वा दर्भासनासीनः संनिवेश्य मनं शिवम् ॥२७॥
तपश्चचार सिद्धात्मा मनुपुत्र प्रियव्रतः
दिव्यं समं सहस्रं तु तुष्टु कामः सनातनम् ॥२८॥
त्रिपुरान्तकं देवं मनोवागिन्द्रियातीतम्
शातु संवत्सरं पूर्वं तिलाहारो स्थितो नृपः ॥२९॥
शतं द्वितीयं वर्षाणां भिक्षुभक्षनृतक्षणः
धात्रीफलाशन तत्वत्तृतीये नृप सत्तमः ॥३०॥

८३

भाषा

एक बार महाराज मृगया खेलने के बहाने से तपोवनों को देखते हुए, एक तीर्थ से दूसरे तीर्थ को चलते हुए नर्मदा तट पर आये यहाँ गम्भीर अगाध जल देखकर प्रसन्न हो गये लेकिन कुछ गन्दगी वाले किनारे को कमलनयन राजा सोच में पड़ गये ७-८

संस्कृत

गौतमस्य मुनेर्मत्वा चाश्रमं श्रमनाशनम्
आगत्य सहसा विप्रं नमश्चक्रे नृपोत्तमः ॥९॥
अर्घेण च तथा पाद्य विष्टरैः कुशलेन च
गौतमेनार्चितो राजा बहुमान पुरस्सरम् ॥१०॥
अन्योन्यं कुशलं पृष्ट्वा राजा प्रपच्छ तं मुनिम्
रेवातीरे विशेषं च तपसः कारणं मुने ॥११॥

भाषा

श्रीमान् गौतम ऋषि जी के आश्रम को जानकर थकान दूर करने के लिये सहसा मुनि जी के आश्रम में आकर महाराजा ने मुनि जी को प्रणाम किया। मुनि जी ने अर्घ्य पाद्यादि से राजा का सत्कार किया एक दूसरे का परस्पर कुशल क्षेम पूछे। नर्मदा तट पर आकर तपस्या करने का ऋषि जी से कारण पूछा। ९-११

संस्कृत

राजोवाच :— महाराज ने कहा
अद्य मे सफलं जन्म मुने प्राप्तं न किं मया
धन्योऽस्मि चानुगृहीतोऽस्मि ब्रह्म पुत्रेण वै मुने ॥१२॥
प्राप्तो ह्यहं प्रसंगेन रेवा तीर चां गुरुम्
तपन्तं तीर्थ निलयं गौतमं मुनिपुंगवम् ॥१३॥
सदिभराचरितं तीर्थं न स्नानादृ भवं क्वचित्
तपसः कारणं ब्रूहि किमर्थं तप्यसे मुने ॥१४॥
मामपि सद् बुद्ध्या योजय स्वातिथि गृहे
गौतम उवाच :—

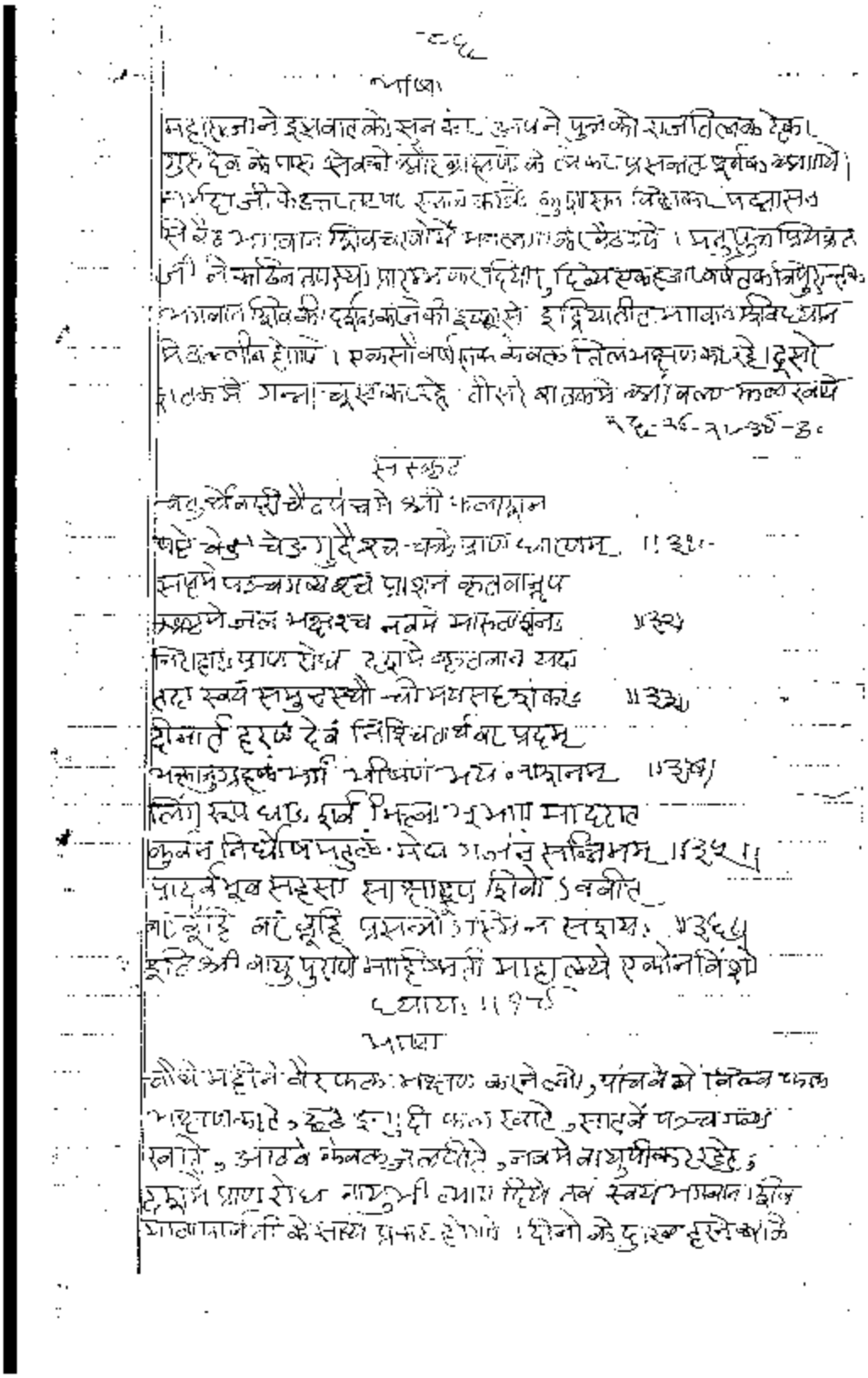

भाषा

महाराजा ने इस बात को सुन कर अपने पुत्र को राजतिलक देकर गुरु देव के पास सेवकों और ब्राह्मणों के साथ प्रसन्नता पूर्वक आये। नर्मदा जी के उत्तर तट पर एक कोस पर गुप्त विशाल महासर से दक्षिण भागवान शिवजी के मन्दिर में आकर बैठ गये। मनु पुत्र प्रियव्रत जी ने कठिन तपस्या प्रारम्भ कर दिया, दिव्य एक हजार वर्ष तक निर्जन स्थान भगवान शिव के दर्शन करने की इच्छा से इन्द्रियातीत भगवान शिव ध्यान में तल्लीन हो गये। एक सौ वर्ष तक केवल तिल भक्षण करते रहे। दूसरे वर्ष में गन्ना चूसकर रहे। तीसरे वर्ष में केवल फल खाये

२६-२७-३४-३०

संस्कृत

चतुर्थे नदी चैव पंचमे श्री फलाशन
षष्ठे वेणु चेक्षु गुडैश्च चक्रे प्राणं फलाशनम् ॥३१॥
सप्तमे पञ्चगव्यश्च प्राशनं कृतवान्नृप
अष्टमे जल भक्षश्च नवमे मारुताशनः ॥३२॥
निरोहाः प्राण रोधं च दशमे कृतवान् यदा
तदा स्वयं समुत्तस्थौ चीमयसह शंकरः ॥३३॥
दीनार्त हरणं देवं निश्चितार्थ वर प्रदम्
भक्तानुग्रहकं भर्गं भीषणं भय नाशनम् ॥३४॥
लिंग रूप धरं दृष्ट्वा भिन्नाञ्जन प्रभा मादरात
कुर्वन निर्घोष मुत्तुङ्गं मेघ गर्जन सन्निभम् ॥३५॥
प्रादुर्बभूव सहसा साक्षाद्रूप दिनो ऽवनीत
नाऽहं हि नाऽहं प्रसन्नो ऽस्मि न संशयः ॥३६॥
इति श्री वायु पुराणे माहेश्वरी माहात्म्ये एकोनत्रिंशो
ऽध्यायः ॥१८॥

भाषा

तीसरे महीने में बेर फल भक्षण करने लगे, पांचवें में निम्ब फल भक्षण करते, छठे में इक्षु दी फल खाते, सातवें में पञ्चगव्य खाते, आठवें में केवल जल पीते, नवमें में वायु पीकर रहे, दशमें में प्राण रोध वायु भी त्याग दिये तब स्वयं भगवान शिव भगवान जी के सामने प्रकट हो गये। दीनों के दुःख हरने वाले

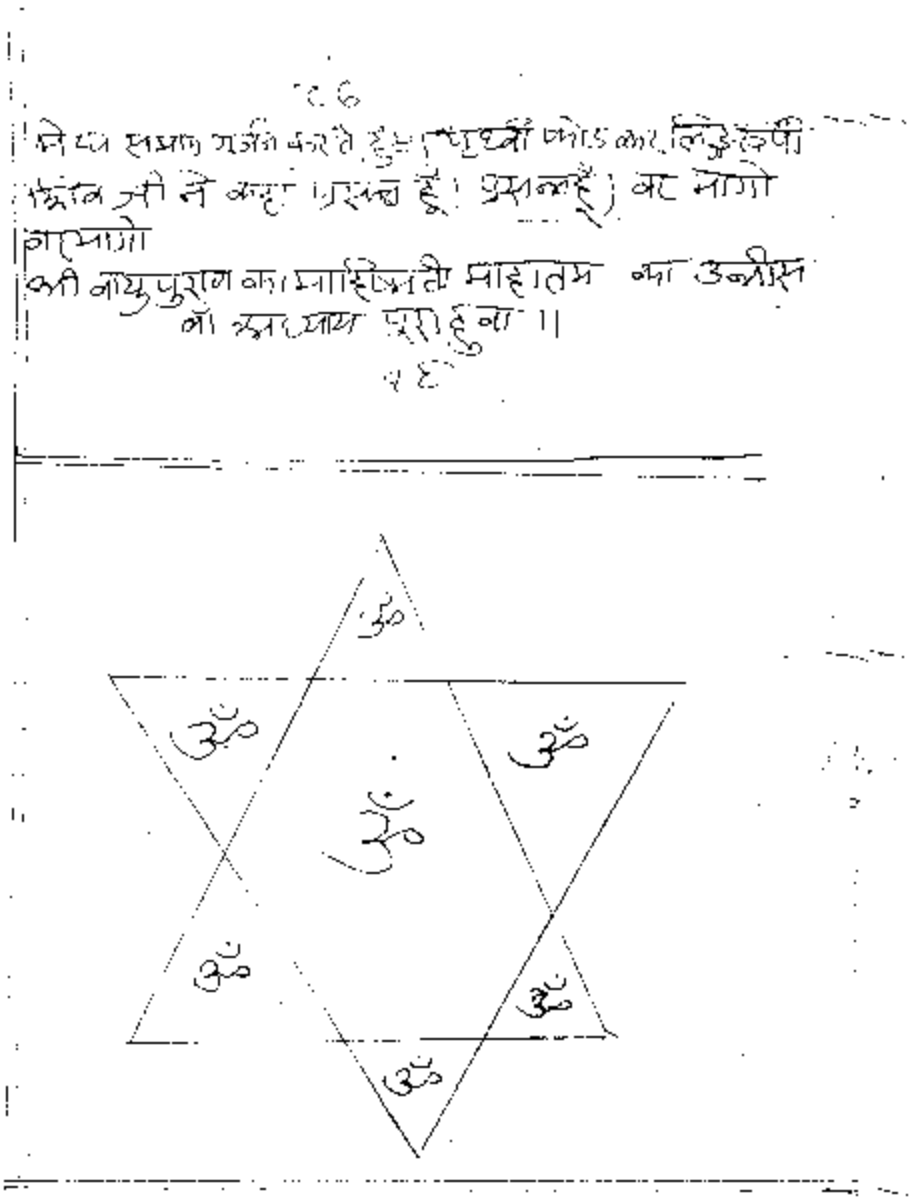

अथ विंशोऽध्यायः

शिव उवाच:--

उत्तिष्ठोत्तिष्ठ भूपाल ब्रूहि यत्तेऽभिवांछितम्
किं क्रियते बहुधा भूमौ भूत्वा नृपो प्राणी ॥१॥
इत्याकर्ण्य ततो राजा सहसा नीक्ष्यते जस
दृष्ट्वा देवं स्वयं सोमं दण्डवत् पतितो भुवि ॥२॥
प्रणम्य पार्वतीं कान्तां बद्धांजलिरीशिताञ्जलिम्
स्तुतिं चक्रे महीपालः पुरतः प्राञ्जलिं स्थितम् ॥३॥

भाषा

भगवान शिवजी ने कहा राजन! उठो उठो आपके मनमें जो
वरदान हमसे मांग लो। स्वयं भूपालों में अग्रणी होते होते हुए
क्यों कष्ट उठा रहे हो? इतनी बात सुनकर राजा सहसा
प्रकाश देखा, और देखा स्वयं भगवान शंकर माता पार्वतीजी
के खड़े हैं, यह शिवपार्वती माताजी का स्वरूप देखकर महाराजा
दण्डवत् प्रणाम किया हाथों को जोड़े हुए सामने खड़े
माता सहित शिव पार्वती की प्रार्थना करने लगे ॥ २ ॥

संस्कृत

पृथुरुवाच:--

नमस्ते देवदेवाय महादेवाय ते नमः
नमोऽस्तु शंभवे तुभ्यं नमस्तेऽस्तु स्वयंभुवे ॥४॥
नमो मूर्तायदेवाय तथा मूर्तायि ते नमः
नमश्चिद्भानगम्याय गौरीशाय स्तुते नमः ॥५॥
नमः पिनाकिने तुभ्यं शूलिने मुण्डमालिने
कपालिने च जटिने बहुरूपाय ते नमः ॥६॥
एकानेकस्वरूपाय भूर्तिभूताय ते नमः
इन्द्रियागोचरायास्तु नमो ते गुण्यमालिने ॥७॥
इत्युक्त्वा महेशानं दिव्यां कात्यायनीं पुनः
पुत्रैकधूर्जटिकस्य निधुना शोषराशितम् ॥८॥
गङ्गोत्तमांगमा रूढ़ं कं स्थान्यस्य शिवे विना
कालकूटं च कालिंदु यः पुत्रस्तत्वं विना प्रभो ॥९॥

भाला।

महाराजा प्रियव्रतजी ने कहा कि देवाधिदेव महादेवजी को मेरा प्रणाम है। भगवान शिव जी को हमारा प्रणाम है। स्वयं भू भगवान को हमारा प्रणाम है। मूर्त स्वरूप अमूर्त स्वरूप भगवान शिवजी को हमारा प्रणाम है। चिद् भान शिवजी को प्रणाम है। भगवान गौरीपति को हमारा प्रणाम है। भगवान पिनाकी, शूलपाणि, पुण्डु माली को हमारा प्रणाम है। भगवान कपाली, नेत्रधारी, बहुरूप धारी को हमारा प्रणाम है। एक रूप - अनेकरूप - भूतपति इन्द्रियातीत - गुणरूप - भगवान शिव को प्रणाम है। भगवान शिव के मस्तक जो शिवलिंगों में शंकरजी के नेत्र चन्दन को धारण कर सके। जिसके शिर पर गङ्गा जी बैठी है दूसरा भला कौन है जो इस प्रकार धारण करे। काल कूट महाभयानक विष को खाकर पचाने वाले भगवान शिव के सिवा कौन है कोई नहीं त्रिलोकी में है

८-५-६-७-८-९

संस्कृत

निशाधारं जगद्भारं मायाभ्रमरं स्वयम्
वंदिता कल्पकल्पान्त वह्निना लिलकार्यगतम् ॥११॥
को नरः सुरः सर्व भूषणं स्यात् शिवं विना
एकदेवं शिवं मन्ये सर्वकारण कारणम् ॥१२॥
त्याजे सर्व दुर्गेभ्यो निश्चकारण कारणम्
धारणं धर्म मूर्तीनां पुरस्त्रय निवारणम् ॥१३॥
प्रारब्धं वाय संधानं लाय त्रय निवारणम्
योगेन निश्चरूपं हि सांख्य योगविदो विदुः ॥१३॥
तमादि पुरुषं देवं वन्दे तत्त्व निशंकम्
कर्म काल त्रयं प्राहु, पंचभेद विदो द्विजा ॥१४॥
तमादि पुरुषं वन्दे सर्वतत्त्वानुगं शिवम्
ये वेदान्त विदो विप्रा पुनर्वन्ति परमं श्रवम् ॥१५॥
पुरुष पंचदेशं तं नमामि शिवं परम्
विद्या निधे गुणनिधे सर्वज्ञास्त्वं हि निर्गुण ॥१६॥

९०

सर्वस्य सर्वदः शूर्वः निर्गर्भः सर्व संसर्वदः
नेदी मानसि गौरीशदृष्टो यालपि वै भवान् ॥१७॥

भाषा

जो संपूर्ण निश्चय का आधार है, अपने पेट में संपूर्ण निश्चय को धारण करता है। आपके बिना दूसरा कौन है? जो कल्पान्त अग्नि को एक तिल के समान छोटा समझता है। भला ऐसा कौन है जो नाग राज वासुकी को अपने गले का हार बनाये? हम तो केवल शिव जी को ही एक मात्र देव मानते हैं। सब प्रकार के दुःखों को दूर करने वाले; सारे संसार के होने का कारण स्वरूप; मूर्त मान धर्म; पुरुषार्थ को विनाश करने वाले; पाप समूहों को नाश करने वाले; दैहिक-दैविक-भौतिक इन तीनों तापों को भगाने वाले; जिसे सांख्य वेत्ता विद्वान और योगीजन निश्चय करके जानते हैं; उस आदि देव पुरुष को मैं प्रणाम करता हूँ। बीस तत्वों वाले - कर्म काण्ड मय जिसे वैदिक विद्वान जानते हैं। उस अनादि पुरुष को मैं प्रणाम करता हूँ। जिसे वेदान्त शास्त्री ब्रह्म कहते हैं उस संपूर्ण क्रिया निधि, गुण निधि सर्वज्ञ शिव जी को प्रणाम करता हूँ॥

११-१२-१३-१४-१५-१६-१७

संस्कृत

आदि यान्तं सदा भासि सदा सिद्धि निषेवितः
काहं मशक मात्रश्च क्व च त्वं जगदीश्वरः ॥१८॥
का बुद्धिः किं परिज्ञानं क्व च वाच्य कगल्मतः
त्वां स्तोतुं मम शक्तिर्नार्य ब्रह्मादयो विदुः ॥१९॥
त्वां द्रष्टुं च परिज्ञातुं नैव तीर वां शिव
पुनर्भूमि मनः शंभो निष्प्रत्य जलजात सुतम् ॥२०॥
तद धत्ते कृपया प्राप्त दुर्लभं ते महेश्वर
स्थिरोभवात्र गिरीश मम नाम्ना सदा शिव ॥२१॥
अत्र तीर्थे तु यः स्नात्वा त्वां चैव पूजयेन्नरः
तस्य नाद्धिसिद्धिस्यादिति मे प्रार्थना प्रभो! ॥२२

हे भानव ! आप ही अकारादि से क्षान्त पर्यन्त व्याप्त हैं।
महासिद्धियाँ भी आप में ही व्याप्त हैं। मैं तो एक प्रच्छन्न से
रूपवान हूँ और आप आदीश्वर हैं। कहाँ हमारी तुच्छ बुद्धि कहाँ
सम्पूर्ण ज्ञान समुद्र हैं। कहाँ हमारी अल्प वाणी और कहाँ
आप प्रगल्भ स्वरूप हैं। हमारी शक्ति आपका स्तवन करा कर
सकती है आप का वर्णन ब्रह्मादि देव गण भी नहीं कर सकते।
आप के दर्शन के लिये मैं इस आप पुत्री श्री नर्मदा के तट पर
आया। पहिले मैंने ब्राह्मणों द्वारा सुन रखा था इसलिये यहाँ मेरे ईश्वर
आया। हे भानव आपके नाम यहाँ स्थिर होने यह पुण्यार्थ क्षेत्र है।
यहाँ जो स्नान करके आपकी पूजा विधिवत् करेगा उसको सिद्धि प्राप्त होगी

१८-१९-२०-२१-२२

संस्कृत

ईश्वर उवाच :—

एवमस्तु नृप श्रेष्ठ यन्ते मनसि संस्थितम्
परितुष्टोऽस्मि भद्रं ते यावन्मन्वन्तरावधि ॥२३॥
ऊर्ध्वं आधाय गत्वा लोकानां हितकाम्यया।
दृश्यो भविष्यामि पुनरस्मिन्नन्तरे मनोः ॥२४॥
स्तुतिमेतां तु यो भक्त्या पठिष्यन्ति नरोत्तमाः
इष्टं फलं प्राप्य यास्यन्ति परमां गतिम् ॥२५॥
द्विविधस्तु सुखं नास्तु लोका सन्तु निरामयाः
लोकोपकारकं तीर्थं त्वमेव स्थापितं यतः ॥२६॥
वंशवृद्धिकरं पुण्यं शत्रूणां विजयप्रदम्
पितृस्तवान्तरं यावत् पुत्र पुत्रान् नरो लभेत् ॥२७॥
इति श्री वायु पुराणे भविष्यती माहात्म्ये रेवा खण्डे
२७॥

भगवान शिव जी ने कहा हे राजन! जो आपके मन में है वही होगा
तुम आपसे प्रसन्न हूँ इस मन्वन्तर तक रहूँगा। लोकों के कामना
से ऊर्ध्व गति से अदृश्य हो जाऊँगा। जो इस स्तोत्र को पढ़ेंगे
भक्तिपूर्वक वह इष्ट फल पायेगा परमगति प्राप्त करेगा।
कल्याण होवे सुख होवे। वंशवृद्धि होवे शत्रुओं का संहार

होगा, लड़के-के लड़के राज्य होंगे शुभम् भवतु
श्री वायु पुराण के माहिष्मती माहात्म्य का बीसवां
अध्याय पूरा हुआ ॥२०

एकविंशोऽध्यायः

एवमुक्त्वा महादेवस्तत्रैवान्तरधीयत
तस्मिन्लिङ्गे नृपश्रेष्ठ तस्य भूपस्य पश्यतः ॥१॥
ततः संपूज्य देवेशं स्वयं राजा प्रियव्रतः
शिवालयं कारयित्वा स्वपुरं प्रतिजग्मिवान् ॥२॥
स राजा राज्यमकरोत्तत्र बहुवर्षसहस्रकम्
एवं प्रादुर्भवेच्छम्भुस्तदा स्वायंभुवान्तरे ॥३॥

भाषा

इस प्रकार कहकर शिवजी अदृश्य होगये उसी लिङ्ग में, राजा को देखते देखते, इसके बाद महाराज प्रियव्रत ने भगवान शिव की विधिवत पूजा किया, बहुत सुन्दर शिवालय बनवाया स्वयं महाराज हजारों वर्ष राज किये इस प्रकार स्वायंभुव मन्वन्तर में शिवजी का प्रादुर्भाव हुआ १ २ ३

संस्कृत

प्रियव्रतेश्वरो नाम तस्मिन् मन्वन्तरेऽभवत्
पुनर्दर्शनं तस्यान्ते तथा स्वारोचिषान्तरे ॥४॥
स्वारोचितनयश्चैव प्राप्य तीर्थं मिदं नवम्
तपश्चचार निपुणं प्रादुर्भूतस्तदा शिवः ॥५॥
स्वनाम्नाच कृतं तीर्थं चिह्नं श्वेत मिति श्रुतम्
तत्रस्वदृश्यमभवत्तस्यान्ते नृपसत्तम ॥६॥
पुनो पश्य दिलोनं च पुनश्चैनाश्यन्ते
उत्तमस्य मनोरन्ते तस्याजस्रो नाम धार्मिक ॥७॥
तत्रागत्य तपस्तप्त्वा पुनर्लिङ्गे प्रकाशितम्
तथाच नाहितं प्राप्य स्वनाम्नाख्यात्य शंकरम् ॥८॥

भाषा

प्रियव्रते श्वर नाम धारी भगवान जी इस मन्वन्तर में हुए, बाद में विलीन होगये। स्वारोचिष मनु जी के पुत्र इस तीर्थ में आकर तपस्या किये। शंकर भगवान प्रकट होगये उनका नाम चिन्तेश्वर हुआ। मन्वन्तर बाद अदृश्य होगये। शिव जी उत्तम मन्वन्तर में फिर प्रकट होगये। इसके बाद स्वारोचिष मनु हुए उनके पुत्र ने तपस्या किया। शंकर भगवान फिर प्रकट होगये अपने नाम से शिव जी का नाम रखा।

संस्कृत

चक्रे राज्यं महिष्वान्त्यथेन्द्रे च सुरा लये
अजस्तेश्वर नामा सीत् तस्मिन् मन्वन्तरे शिवः ।७।
पुनश्चादर्शनं भेजे भ्रूमध्ये लिङ्ग वान् हरः
तस्यान्ते चतुर्थो दौ पुत्रः प्रादुर्बभूवह ।७०।
तामसस्य मनो पुत्रे शान्तिर्नामनृपोऽग्रणी
तेन सदभाव योगो शिव स्प्रेरितेनच ।७१।
रेवा तीरे शिवं प्राप्य तप्यते स्म ह वै तपः
तपसः तोषितस्तुष्टो प्रादुर्भूतस्तदा शिवः ।७२।
लिंग रूप धरो देवः प्रसन्नश्च वराद् ददौ
तेन स्वनाम्ना तीर्थेऽस्मिन् कृत शान्तीश्वरो विभुः ।७३।

भाषा

राजा इन्द्र के समान ज्ञान चिह्न सहस्रों वर्ष राज्य किये इस मन्वन्तर में शिव जी का नाम अजस्तेश्वर हुआ। फिर अन्त में भ्रूमध्य में समा गये। अन्त चौथे मन्वन्तर में प्रकट होगये। तामस मनु पुत्र शान्ति नाम वाले थे। महायोगी बड़ा मर्यादा किये। घोर तप किये लिंग रूप धारी शिव जी प्रसन्न होगये जिनका नाम शान्तीश्वर शिव हुआ।

संस्कृत

इदं मन्वन्तरं कृत्वा स्थितः शान्तीश्वराह्वयः

तदन्ते चापि भूमध्ये लीन शर्मा: क्रमात् पुन: ॥१५४॥
मन्वन्तरे तथा प्राप्ते पंचमे रैवतस्य च
रैवतस्य च वंशे ऽभूत् सत्यके नाम पार्थिव: ॥१५५॥
तेनापि च तपस्तप्तं प्रसादं प्राप्य शंकरात्
प्रकाशितं च तत्तीर्थं नाम्ना वै सत्यकेश्वरम् ॥१५६॥
तस्यान्ते च क्रमेणैव पुनर्लिङ्गं धरां गत:
षष्ठे चाक्षुष मनोरन्तरे च नृप सत्तम ॥१५७॥
चाक्षुषस्य मनो पुत्र शतद्युम्नो महीपति
स च तीर्थ प्रियो साधु सात्विको सत्यसंगर: ॥१५८॥
स्नेपे सोम समाप्याय पौरैरुक्तेन पार्थिव:
तीर्थानुसरणं कुर्वन् प्राप्य दक्षिण नाहुषीम् ॥१५९॥
एकदेव पदं स्थाणं प्राप्यात्तु तपश्चरन्
जपन् पंचाक्षरीं विद्यां शतं युग्मो महीपति: ॥१६०॥
प्राय: दृग्गोचरं रुद्रं पूर्ण न लिंग रूपिणम्
तेजो निधौ महादेवं तुष्टाव च नृपेश्वर: ॥१६१॥

भाषा

उस मन्वन्तर में शान्तीश्वर नाम से प्रसिद्ध हुए; उसके बाद क्रम से भूमि में विलीन हो गये; पांचवां रैवत मन्वन्तर आया; रैवत के वंश में सत्यक नाम राजा हुए; उन्होंने भी तपस्या करके शंकर भगवान का दर्शन लाभ किया। उस समय सत्यकेश्वर नाम से प्रसिद्ध हुए। क्रम से पुन: शिवलिंग पृथ्वी में विलीन हो गया। छठवें चाक्षुष मन्वन्तर में शतद्युम्न नाम मनुपुत्र हुए, स्नान में शिवमाहात्म्य कथा देख कर नर्मदा तट पर तपस्या किया पंचाक्षरी मंत्र का जप पूर्वक तप किया राजा को लिंगरूप शिव जी का दर्शन प्राप्त राजा से आनन्द की प्रार्थना किया। १४-१५-१६-१७-१८-१९-२०-२१

संस्कृत

शतद्युम्नो लाच:---
नमो देवप्रमेयाय निर्विकल्पाय शम्भवे
नमो निष्कलशीलाय नमस्ते ऽन्धक नाशिने ॥२२

६५

उन्मत्तरूपाय नमस्तथो - मत्तप्रियाय च
नमो गजासुरघ्नाति प्राण निर्वाण हेतवे ॥२३॥
अर्कैश्च बिल्वपत्रैश्च काश धत्तूर पुष्पकैः
पूजितो भक्ति योगेन वन्ये मूलैः फलैरपि ॥२४॥
सुलभे दुर्लभा लक्ष्मी योददाते कल्पनातिगाम
तं नमामि सुरेशानं आशुतोषं महेश्वरम् ॥२५॥
किं नास्य कृतैः पुण्यैर्यदि चित्त स्थितो हरः
तथा च किं कृतैः पुण्यैर्यदि चित्तो स्थितो हरः ॥२६॥
किमर्चितैः सुरैरन्यैर्नार्चितो यदि शंकरः
किं मुक्तैः सार्थिलाषैश्च दुर्भुक्ति मुक्ति सत्यहे ॥२७॥
वांछिताभीष्टफलदः स किं न प्रार्थ्यो मनुष्यैः
इत्येवमादि भिर्वाक्यैः स्तुतो भगवतो महेश्वरः ॥२८॥
प्रत्यक्षोऽभून्महादेवः प्रोवाच च नृपोत्तमम्
वांछ हि नरं भूप प्रसन्नोऽस्मि न संशयः ॥२९॥
इति श्री वायुपुराणे माहिष्मती माहात्म्ये एकविंशोऽध्यायः

भाषा

महाराज शातद्युम्न जी ने कहा कि: वायु प्रेयदेव को नमस्कार है निरीह को नमस्कार है; विष कंठ को प्रणाम है; उन्मत्तरूप को प्रणाम है उन्मत्तप्रिय को प्रणाम है; गजासुरघ्नि को नमस्कार है प्राण निर्वाण के प्रदाता; अर्क, बिल्वपत्र, काश, धतूर के पुष्पों से पूजित हुए जी को प्रणाम; मंगली, फल, मूल, कन्द से पूजित हुए अलभ्य लक्ष्मी को कल्पनातीत देने वाले शिव जी को प्रणाम है। सुरेशान - आशु तुष्टि शिव को प्रणाम मनुष्य ने किया हुआ पुण्य यदि चित्त स्थित हो जाये तो क्या कहना। दूसरे देवताओं की पूजा से क्या लाभ जो शिव जी की पूजा नहीं किया। वांछित फल देने वाले ये मूढ़ मन नहीं पूजा किया भगवान शिव का तो क्या। निरीह इस प्रकार के स्तोत्रों से भगवान शिव जी प्रसन्न हो जाने पर प्रत्यक्ष कहे हे राजन! मैं प्रसन्न हूँ तुम्हारे लिए मांगो कि, सन्देह। २३-२४-२५-२६-२७-२८-२९

श्री वायु पुराण का माहिष्मती माहात्म्य का भाषा टीका इक्कीसवां समाप्त हुआ। २१।

द्वाविंशोऽध्यायः

ईश्वर उवाच :

तुष्टोऽस्मि भो नृपश्रेष्ठ वरं वरय सुव्रत
किमनन्ते तपस्तप्तं किं प्रार्थयसि सत्तम ॥१॥
यद् वांछसे नृपश्रेष्ठ तद् देयं न संशयः

राजोवाच :—

दैवदेव जगन्नाथ प्राप्तं सर्वं मयाऽधुना ॥२॥
यद्विधं मण्डलं तेजो दृष्टं त्वद्रूपजं विभो
तथाऽपि चेद् प्रसन्नोऽसि मद्विशोचयस्य शंकर ॥३॥
अपनामा महेशान तीर्थं स्याद्वल निश्चितम
तपेन शोचयास्ते दीना श्रद्धा भाग्य वर्जिताः ॥४॥
न त्वद् भक्तो हि यच्चेतो येषु प्रीति

ईश्वर उवाच :—

एवमस्तु नृपश्रेष्ठ यत्ते मनसि वांछितम् ॥५॥
स्मितोऽहमत्र त्वन्नाम्ना यावन्मन्वन्तरं नृप
वाक्षुष राज शार्दूल शतद्युम्ने रवाह्वयः ॥६॥

भोष्य

भगवान शिव जी ने कहा कि हे राजन! मैं आपकी तपस्या से प्रसन्न हूँ। मुझसे यथेच्छ वर मांगो। क्यों कठोर तप कर रहे हो। जो आपकी इच्छा हो वह हमारे लिये अदेय नहीं है। महाराजने कहा कि, भगवन! जगदीश मुझे सब कुछ प्राप्त होगया। मैं आप का अलौकिक दर्शन प्रकाश पाकर बहुत ही संतुष्ट हूँ मेरे प्रभो! आपका दर्शन ही मेरे लिये सब कुछ है फिर भी मेरी इच्छा है मेरे नाम से आप इस तीर्थ में निवास करें। तप श्रद्धा हीन मुझे नहीं कर सकते जिन पर आपकी कृपा न होवे। जो आपका भक्त नहीं होगा वह ऐसा नहीं कर सकता है। भगवान शिव जी ने कहा राजन! आपकी इच्छा पूरी होगी मैं आपके नाम से मन्वन्तर तक निवास करूंगा और आप शतद्युम्नेश्वर होगा। १-२-३-४-५-६

संस्कृत

इत्युक्त्वा शिवः साक्षादन्तर्धानमगाद्विभुः ॥७॥

९७

लिङ्गरूपः स्थितश्चात्र सर्वाहितफलप्रदः ॥७॥
मन्वन्तरान्ते चादृश्य प्रभवल्लिंग मैश्वरम्
शतद्युम्नोपि नृपतिर्नगात्र स्थानमात्मनः ॥८॥
साम्राज्य प्राप संतान श्चाक्षयंच रिपोर्जयम् ॥
गौतम उवाच
तथैव संपूज्य चाप्राप्य मन्वन्तरोत्तमः ॥९॥
वैवस्वतर्षिं प्राप्तो फलं वै न स्नतो मनुः
नरिष्यन्तं सुतश्च त्वं पौत्रो वैवस्वतस्य च ॥१०॥
साम्राज्यं तिलक ख्याति प्राप्तोऽसि वसुधातले
प्रसंगादिदं संप्राप्तः शिवस्याराधनं कुरु ॥११॥

भाषा

इतना कहकर शिवजी अदृश्य होगये। लिङ्गरूपी शिवजी वाञ्छित फलदाता है। मन्वन्तर के बाद शिवजी प्रकट होंगे शतद्युम्नजी अन्त में शिवलोक प्राप्त कर लिये। उनको पुनः अक्षय साम्राज्य प्राप्त कर अनेक सहस्र वर्षों तक राज किया
गौतम जी ने कहा कि इस प्रकार पूजा कर शिवलोक प्राप्त कर लिया उसके बाद वैवस्वत मनु ने अनेक राज किया उनके पुत्र आप तिलक नामक पुत्र हुए हो आप भी शिवाराधन कीजिये

संस्कृत

यथाशक्ति यथा चेष्टो यथा वृत्तं यथा श्रुतम्
तं नरेण प्रकर्तव्यं यथा तुष्यन्ति देवताः ॥१२॥
मार्कण्डेय उवाच
इत्यमाकर्ण्य नृपतिस्तिलकः पुण्यपेशलः
पप्रच्छ गौतमं ऋषिं यानदृष्टं कुलोचितम् ॥१३॥
तिलक उवाच
साधु साधु मुनिश्रेष्ठ सुधातुल्यं त्वदीयं वचनं प्रभो
किं किं नप्राप्यते भूमि प्रसादाद्गुरुजन्मनः ॥१४॥
आह्लादैरिह संतुष्टे तुष्टं स्यात् सकलं जगत् ॥

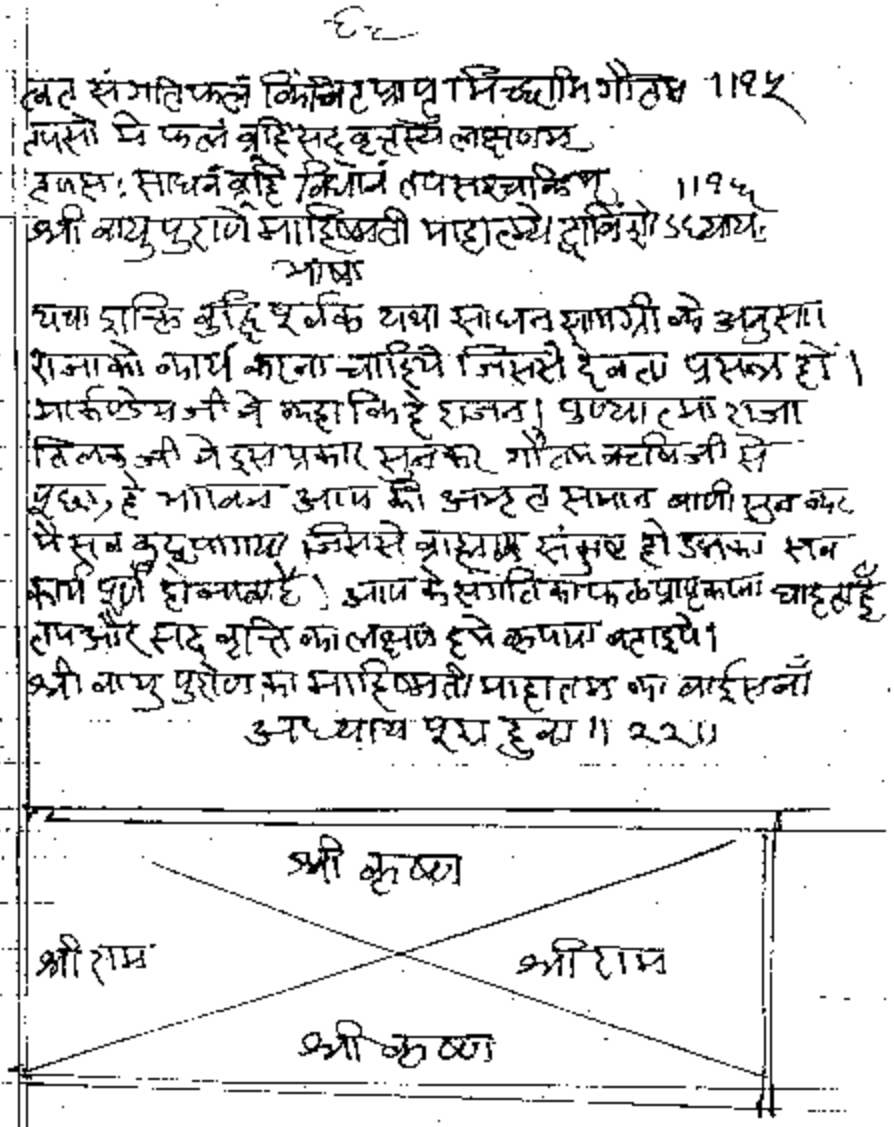

एतत् संगतिफलं किंचित् प्राप्तुमिच्छामि गौतम ॥१९५
तपसो मे फलं वृद्धिं सद्वृत्तस्य लक्षणम्
इतरस्य साधनं वृद्धिं क्रियायां तपसश्चाक्षिण ॥१९६
श्री वायु पुराणे माहिष्मती माहात्म्ये द्वाविंशोऽध्यायः

भाषा

यथा शक्ति बुद्धि पूर्वक यथा साधन सामग्री के अनुसार
राजाको कार्य करना चाहिये जिससे देवता प्रसन्न हों।
मार्कण्डेय जी ने कहा कि हे राजन्! पुण्यात्मा राजा
तिलक जी ने इस प्रकार सुनकर गौतम ऋषिजी से
पूछा, हे भगवन् आप की अमृत समान वाणी सुन कर
मैं सब कुछ पाया जिससे ब्राह्मण संतुष्ट हो उनका सब
कार्य पूर्ण होजाता है। आप के संगति का फल प्राप्त करना चाहता हूँ
तप और सद् वृत्ति का लक्षण हमें कृपया बताइये।
श्री वायु पुराण का माहिष्मती माहात्म्य का बाईसवाँ
अध्याय पूरा हुआ ॥ २२ ॥

श्री कृष्ण

श्री राम

श्री राम

श्री कृष्ण

६६

अथ त्रयो विंशोऽध्यायः

गौतम उवाच

साधु पृष्टं महाराज धन्यस्त्वं ज्ञानवानसि
सत्सु पृच्छन् सदा सर्वं पाण्डित्यं लभते नरः ॥१॥
धर्मः श्रुतो यदृष्टश्च निहितः कारितोऽपि वा
प्रोत्साहितो वा नृपते पुनात्याशु सदा कुलम् ॥२॥
वृणु सर्वं प्रवक्ष्यामि तपसः साधनं फलम्
सत्यं च ग्राम्यात् चित्तद्वैधं वर्जयेत् ॥३॥
पुण्यान्ये विविधं भोज्यं शाकं मूलफलेन वा
त्रिःस्नायी जटिलो मुण्डी श्रीवृक्षफलवान्नरः ॥४॥
यद्भक्ष्यश्च न दद्यात् बलिभिक्षा च शक्तितः
दाता न संयतस्तस्मात् सर्वभूतानुकम्पकः ॥५॥
नैकः पाणिः पादयोः पत्यं दृक् चापल्यं च वर्जयेत्
तपसः सिद्धिमाकांक्षन् यथा लब्धाशनो मुनिः ॥६॥

भाषा

श्रीगौतमजीने कहा कि हे राजन्! तुम्हारे द्वारा प्रश्न पूछा गया प्रश्न पूछते करता है वो आप सज्जन साधु प्रकृति है। धर्म देखा सुना वर्णन किया हुआ राजा के द्वारा प्रोत्साहित किया हुआ शीघ्र ही पवित्र करता है। सारे कुटुम्ब को। मैं आप को सब कुछ बताऊँगा तपस्या साधन कौन उपाय सब कहूँगा। ग्राम्य आहार छोड़ कर चित्त की दुविधा को छोड़ दे। मुनि भोजन (फलाहार कन्द मूलादि) निर्मल स्नान करे (प्रातः मध्याह्न सायं) शिखा बाँधे रखे आचमन मुण्डी शीश के बाल बनवाते रहे) ऐसा करने से श्रीसम्पदा आदि की वृद्धि होती है। जो कुछ भोजन को उसी से बलिवैश्वदेव कर्म को भिक्षुक को भी दान देवे। दाता सब प्राणियों पर दया करे। संयमवाणी संयम पैर का संयम करे सिद्धि की इच्छा करने वाले को जो कुछ मिल जाये उसी में संतोष करना चाहिये चित्त की चञ्चलता करनी चाहिये १-२-३-४-५-६

संस्कृत

स्मरन् स्मरन् हरं देवं नियमं च सदैव हि
शान्तो दान्तो तथा मौन सलभाव सुसमाहितः ॥
योगाभ्यासं सदा कुर्यात् दीपदानं कृतिं शिवे ॥ ८ ॥
ध्यायन् देवं जपन् देवं यजन् संकीर्तयन् शिवम्
ज्ञाने, ज्ञाने स्तवन् कुर्यात् तनुं मनुज पुंगवः ॥ ९ ॥
प्राणायाम प्रमाणेन तिष्ठेत् पद्मासन स्तथा
एवं कृत्वा नरो भूप तपस्तु सिद्धिमाप्नुयात् ॥ १० ॥
यदुरी कुरुते मर्त्यो तत्र प्रष्टं भविष्यति करे
नकिंचित् दीयते देवैः फलं लाभ्यं स्वसाधनात् ॥ ११ ॥

भाषा

भगवान शिव जी का स्मरण करते हुए नियम हमेशा करना चाहिये, बीच में खण्डित नहीं होना, शान्त दान्त, मौन रखने वाला होना चाहिये इसी बात का हमेशा प्रयत्न करना चाहिये, योगाभ्यास नित्य करना आसन भी नित्य करना जो कुछ किया जाय सब शिव भावना को अर्पण करो। स्तोत्र पाठ धीरे धीरे मध्यम स्वर से करना। प्राणायाम प्रमाण (शक्ति अनुसार) पद्मासन पर ही बैठना इस प्रकार करने से तप सिद्धि प्राप्त होती है। देव गण कुछ नहीं देते अपनी साधना से ही सब कुछ प्राप्त होता है।

८-९-१०-११

संस्कृत

कुशगृहे कुशैश्चैव भूते सांतपनैस्तथा
ब्रह्मकूर्चे तथा चान्दे शोषयेत् वपुरात्मनः ॥ १४ ॥
इहास्थानि यदा पश्येत् दृढमनो बलमाचरेत्
तदा मूलफलैः पुष्पैः गन्धैश्च पायसैस्तथा ॥ १५ ॥
पाषाणे दारुमनो देहं न दासो योजयेत् क्वचित्
अस्थि वै शाकमध्यानि स्नायो मूलं फलं पयः ॥ १६ ॥
इति कृष्णस्य काव्यं च गुरोर्वचन मौषधम्
तपसा जायते स्नायी तपसा मोक्ष माप्नुयात् ॥ १७ ॥

१०१

तपसा सुख संतानमैश्वर्यादि भवेन्नृणाम्
तपसा शत्रुनाशं च तपसा धनमुत्तमम् ॥१८
सिद्धयः तपसा साध्या तपसा किं न लभ्यते
न साध्यं तपसः किंचित् कल्पवृक्षादिकं तपः ॥१९
सूर्यचन्द्रादयः सर्वे दीप्यन्ते दिवि संस्थिताः
ध्रुवो ध्रुवपदं प्राप्तं तपसैव नराधिपः ॥२०

भाषा

दुर्बल होने पर कृच्छ्र अथवा चान्द्रायण व्रत को सांतपन ब्रह्मकूर्च करें। मूलिक कन्दमूल सोने सामर्थ्य के अनुसार ही ग्रहण करना। मूलकन्द-फल-फूल-दूध का भोजन करे। अपने शरीर को साधते हुए स्वयं अपना काम अपने हाथ से ही करे नौकर नहीं रखे। आठ पहर में एक बार खाये पीवे ब्राह्मण बनने की इच्छा से सुख करे, गुरु नक्षत्र ही औषध समझे। तपस्या से स्वर्ग-मोक्ष-सुख-ऐश्वर्य-संतान शत्रु का विनाश, श्रेष्ठ धनप्राप्त होता है। सिद्धियाँ तपस्या से ही प्राप्त होती है तपस्या के लिये कोई भी वस्तु असाध्य नहीं है सूर्य-चन्द्र तपस्या से ही आकाश में प्रकाशित है ध्रुव को ध्रुव पद तप से ही प्राप्त हुआ महाराज तपस्या से ही आदर्श बनता है। १८-१९-२०-२१-२२-२३-२४

संस्कृत

पुरा सृष्टिरियं चक्रे ब्रह्मणा तपसैव च
नासादिनि देवेशा शक्रो भूच्च तथा नृप ॥२१
तपसा विष्णुरजयद्दुर्विमुख्याश्च दानवान्
भक्तेनातिथिनूनं तपस्वी सर्वं पूजितः ॥२२
तपो नामेन्द्रियजयः तप देहदमः परम्
पश्चात्मान तपो मुख्यं तथाद्वन्द्वसहिष्णुता ॥२३
शृणु सद्वृत्तं योगस्य लक्षणं नृपसत्तम
धनयंत्रयो वापि लोकान् जयति मानवः ॥२४
तपसः कर्मणो वस्य श्रुतस्यापि जनस्य च
विज्ञ बुद्धि साकल्यमाचारं निगदेद्दह ॥२५

१०८

भाषा

पहिले समय मे श्री ब्रह्मदेवजी सृष्टि तपस्या से किया। स्वर्ग मे इन्द्रपद तपस्या से ही प्राप्त होता है। तपद्वारा हि विष्णु भगवान ने बलि आदि दैत्यों पर विजय पाई। देवों में पूजनीय तपस्या से हुए। तप का अर्थ है अपनी सभी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करना। दम का अर्थ है शरीर को इन्द्रियों से तपाना। शम का लक्षण है प्राणायाम द्वारा शरीर साधना अवस्था के अनुसार। यथा साध्य नियम करना। विष बुद्धि पूर्वक बनाकर जीवित निगल जाते २१-२२-२३-२४-२५

संस्कृत

बुद्धि वृद्धि कराण्याशु धान्यादि च हितानि च
नित्य शास्त्राणि प्रेक्षेत भजनं सद्वृत्तिलक्षणम् ॥२६॥
यथा यथा हि पुरुषः सच्छास्त्रमधिगच्छति
तथा तथा जिज्ञासा विज्ञानं चापि विन्दति ॥२७॥
न जीर्णमलवद्वासो धारयेद्वृथा भ्रमेत
न कामेत जलच्छायां सद्वृत्तलक्षणम् ॥२८॥
न प्रवेशं कुर्यात् नखरोमश्मश्रुदन्तः शुक्लाम्बरः शुचिः
परात्मचिन्तास्थाद्वृत्तं शुद्धं तल्लक्षणं हि तत् ॥२९॥
नेक्षेतोद्यन्तमादित्यं नास्तं यान्तं न मध्यगम्
नोपसृष्टं न वारिस्थं तत्सद्वृत्तलक्षणम् ॥३०॥

भाषा

बुद्धिमानी से हितकर धान्यादि इकट्ठा करना चाहिये। नित्य शास्त्रों पुराणों का अध्ययन पालन करना, भजन करना यह सद्वृत्ति का लक्षण है। ज्यों ज्यों पुरुष शास्त्रों का अध्ययन करता है त्यों त्यों निष्ठा बढ़ती जाती है। पुराने गन्दे को नहीं पहनना; व्यर्थ में इधर उधर नहीं घूमना चाहिये; जल में छाया का आक्रमण नहीं करना यह सद्वृत्त का लक्षण है; नख-रोम-दाढ़ी के बाल स्वयं नहीं काटना चाहिये। परमात्मा का चिन्तन शुद्ध स्वरूप से करना यह सद्वृत्त का लक्षण है। सूर्य को उदय होते अस्त होते और मध्याह्न में नहीं देखना। बैठकर पानी में भी सूर्य को नहीं देखना चाहिये यह सद्वृत्त का लक्षण है। २६-२७-२८-२९-३०

१०३

संस्कृत

उपवीतं अलंकारं स्रजं कण्ठमेव च
उपानहौ च वस्त्रं च धृतमन्यैर्न धारयेत् ॥३१॥
न मृल्लोष्ठं निमृद्यीत रहस्यधीकारणं विना
न वृथा फलं कुर्यात् नाप्यत्याप सुखोदयम् ॥३२॥
न विग्रहं कथं कुर्यात् बहिर्मौल्यं न धारयेत्
त्यजेद् गोपृष्ठगमनमेतत् सत्पुरुष लक्षणम् ॥३३॥
अहिंसा सत्यमस्तेयं शौचं चेन्द्रिय निग्रहः
दमः क्षमार्जवं दानं सर्वेषां धर्मसाधनम् ॥३४॥
न संशयं प्रपद्येत नाकस्मादप्रियं वदेत्
नाहितं नानृतं ब्रूयात् एतत् सद्वृत्त लक्षणम् ॥३५॥

भाषा

जूता, गहना, माला, जनेऊ, गडुआ, धोती दूसरे का प्रयोग किया हुआ नहीं लेना चाहिये। मिट्टी का ढेला व्यर्थ में नहीं फोडना। अयोग्य को कोई फल भविष्यादि नहीं कहना। झगडे की बात नहीं करना। कुत्ते के ऊपर माला नहीं पहनना। गाय के पीठ पर नहीं बैठना यह सद् वृत्त का लक्षण है। संशय की बात नहीं करना। बे मतलब की बात नहीं करना। अहित की बात नहीं करना। झूठ नहीं बोलना चाहिये ये सद् वृत्त की लक्षण है। ३१-३२-३३ ३४-३५

संस्कृत

कुर्यात् प्रदक्षिणं देवं आत्मनिद्रिं प्रनश्यति
नृप तपस्विनं साध्वीं एतत् सद् वृत्त लक्षणम् ॥३६॥
जलं नाञ्जलिना पिबेत् न शयानं प्रबोधयेत्
पृष्ठो पसेवी यत्नवान् चेत् एतत् सद्वृत्त लक्षणम् ॥३७॥
शुचिं देवाश्च रक्षन्ति रक्षन्ति पितरस्तथा
शुचिं विभ्रति रक्षांसि येचान्ये दुष्टचारिणः ॥३८॥
दानं ज्ञानं तपः स्थानो मूलं कर्म निरीक्षणम्
प्रगल्भा चार नियमा शौचं भ्रष्टस्य निष्फलम् ॥३९॥
दलनं मर्दनं चैव स्फोटनं नखकृन्तनम्
फलं कुरु रहस्यानि न नदेद् कारणं विना ॥४०॥

भाषा

देव की प्रदक्षिणा करनी चाहिये अहंकार नष्ट होता है।
राजा, तपस्वी, साध्वी स्त्री का भी प्रदक्षिणा करना।
अञ्जलि से पानी नहीं पीना, सोते हुए किसी की निंदा
नहीं पढ़ाना, वृद्धसेवी, यह नाक (वाणी संयम) यह सब
सद् वृत्त के लक्षण हैं। पवित्र को देवता रक्षा करते हैं। पितर
लोग भी रक्षा करते हैं। पवित्र रहने वाले को राक्षस भाग
जाते हैं। दुष्ट निंदा वाले प्रेत इत्यादि भी भयभीत होते हैं।
दान, ज्ञान, तप, त्याग, फल कर्मकाण्ड की क्रिया, पंचाल चार
शौच भेद को निष्फल हो जाते हैं। छेदना, परपीड़न, सीटी
बजाना त्याग देवे। कुल (वंश) कुल का भेद निंदा कार्य
नहीं करना चाहिये ३५-३६-इत्यादि

संस्कृत

न दद्यान्नाति नेदज्जात नैव संप्रेषयेदपि
नासीनः स्यात् स्थिते हृदि च आयुर्हस्य नाप्नुयात् ॥४२॥
यज्ञा मृष्टान्नदः सत्री शतायुर्धार्मिकः शुचिः
ज्ञाननिष्ठ तपोनिष्ठः सेव्यः श्रेयोर्थिनां सदा ॥४३॥
अभिवादन शीलस्य नित्य वृद्धोपसेविनः
चत्वारि तस्य वर्धन्ते विद्या आयुर्यशः श्रियम् ॥४३॥
अश्रु कर्माणि संधाये तृप्ते च भोजने
व्याधिनां चैव सर्वेषामायुर्व्यमभि वर्धनम् ॥४४॥
क्षमा सत्यं दया शौच इन्द्रियस्य च निग्रहम्
अहिंसा गुरु शुश्रूषा तीर्थानु सरणं तथा ॥४५॥

भाषा

अपने से बड़ों को तुम चले जाओ यहां से आओ धक्का देकर
निकालना, अपने बैठे रहे अपने से बड़े हो। यदि रुष्ट हुए ऐसा
व्यवहार करने से क्षीण आयु हो जाती है। यज्ञ करने वाले मिष्टान्न
भोजन कराने वाला पवित्र धार्मिक विद्यालाभ शतायु होता है।
ज्ञानी, तपस्वी, का आदर करने से श्रेय वृद्धि होती है। बड़ों की
नित्य प्रणाम करने वाले की विद्या, आयु, यश और श्री बढ़ती है।
बाल बनाने के बाद स्नान करना, तृप्त होकर भोजन करने

क्षमा, सत्य, दया, शौच, इन्द्रिय निग्रह, अहिंसा, गुरुसेवा
तीर्थवास ... ४१-४२-४३-४४-४५

संस्कृत

आर्जवं लोभशून्यत्वं देवब्राह्मणपूजनम्
अभ्यस्तुत्याचलं मे तत्सद्वृत्तं लक्षणम् ।४६।
सन्ध्ययोरुभयोर्जाप्यं भोजने दन्तधावने
पितृकार्ये च देवे च तथा मूत्रपुरीषयोः ॥४७॥
गुरूणां सन्निधौ दाने चैव विशेषतः
दृष्टास्वपि चरेन्नो नो प्रीति सद्वृत्तिलक्षणम् ॥४८॥
एतत्सोद्देशतः प्रोक्तो विधिरेष तपस्विनाम
तपसश्च फलं चापि तत्सद्वृत्तलक्षणम् ॥४९॥
संक्षेपेनैव ते प्रोक्तं प्रायः सर्वं न विस्तरम्
एतदेव चरेज्जाप्यं सर्वं संपद्यते नृणाम्
श्रीवायुपुराणे माहिष्मती माहात्म्ये त्रिंशोऽध्यायः संपूर्णः

भाषा

सरलता निर्लोभी देव ब्राह्मण की पूजा न मानने का अभ्यास करे
यह सद्वृत्त का लक्षण है। दोनों सन्ध्याकाल भोजन - दातुन
पितृकार्य देव कार्य टट्टी पेशाब - गुरु जी के पास दान देते समय
इच्छा नहीं रहे। यह काम उद्देशपूर्वक है ऐसा तपस्वीजनों
को करना चाहिये सब सद्वृत्त का लक्षण है। ये सब हमने
आपको संक्षेप से बता दिया विस्तार नहीं किया है इस प्रकार
करने से सफलता प्राप्त होती है। ४६-४७-४८-४९
श्री वायुपुराण के माहिष्मती माहात्म्य का तेईसवां
अध्याय पूरा हुआ ॥ २३॥

शान्तिः शान्तिः

सत्यं वद

१०६

चतुर्नवतितमोऽध्यायः

श्री मार्कण्डेय उवाच

इत्यमाकर्ण्य तत्सर्वं गौतमान्नृपसत्तमः
सविस्मयश्चातिलको तपसि मनदधिमवान् ॥१॥
सैवृत्या मुद्रया स्नात्वा वाग्मनःकायसंयमः
शिवध्यानपरो भूत्वा तपस्तेपे समाहितः ॥२॥
तपसा शुद्धदेहश्च निर्विकल्पो यदा नृपः
पुनर्नते गौतमर्षे लिङ्गरूपधरः शिवः ॥३॥
तदा लिङ्गात्मको लिंगः प्रणवेन पुरस्कृतः
साक्षाद्रूपं शिवं दृष्ट्वा रोचमानो दिशोदश ॥४॥

राजोवाच

अहोभाग्यमिदमन्ये मानुष्यमीश्वरः
क्वाहं मह्यं सहभावं कृत्वा निर्विघ्नेश्वरः ॥५॥
धन्योऽहं मया पुण्यो ऽहं भूरिभाग्यवतो वहम्
दृष्टं पूर्वं मे यथा यातः साक्षात् शिव सनातनः ॥६॥
इत्युक्त्वा दण्डपातेन प्रणम्याशु नरेश्वरः
बद्धाञ्जलिपुटस्तस्थौ यावत् प्रोवाच शङ्करः ॥७॥
ईश्वर उवाच

भाषा

मार्कण्डेय जीने कहा कि इस प्रकार महर्षि गौतम जी से उपदेश सुन कर आश्चर्य और श्रद्धा पूर्वक तपमें मन लगा दिये। महर्षिकी आज्ञानुसार महाराज तिलक जी स्नान करके वाणी मनसे कर्मण शिव जी में ध्यान लगा दिये कठोर तप पूर्वराजा शुद्ध देह शुद्ध मन निर्विकल्प समाधिस्थ होगये। पहिले की भांति लिङ्ग रूपी शिव जी ॐ रूप प्रकट होगये। लिंग रूपी शिव जी को देखकर जो सम्पूर्ण दिशाओं को प्रकाशित कर रहे थे शोभायित महाराज तिलक रोमांच होकर प्रणाम किया और कहे भाग्य! अहो भाग्य मेरा है जो आप मनुष्य रूप में मुझे दर्शन दिया; मैं मन्दभाग्य और आप हे नाथ देव परमेश्वर मैं धन्य हूं, पुण्य हूं इस प्रकार कह दण्डवत प्रणाम किये हाथ जोड़े रहे। फिर शिव जी ने कहा;

शिव उवाच ॥

१०७

साधु सोमवंश ! नृपते ! भाग्यवानसि निश्चितम्
तपसा तोषितस्तेऽहं वरं वरय सुव्रत ॥८॥
राजोवाच
यदि तुष्टोऽसि मे देव वराहो यद्यहं मतः
कान्तां मे पितुर्यत्र नाम्ना स्थिरो भव ॥९॥
इह तीर्थे महेशाद्य तिलकेश्वर संज्ञकम्
तिलकं देहि मे वंशे स्वराज्यं भुक्तिमुत्तमम् ॥१०॥
सततं भक्ष्यं चास्तु वंशे मे लक्ष्मीनिलयम्
दानशक्तिः दिने भक्तिः विरक्तिः फलसाधने ॥११॥
भक्तिर्निर्दोष निर्वाणे मुक्तिरस्तु ततः परम्
महेश्वर उवाच × ×
एवं भवतु राजेन्द्र प्रियोऽसि त्वं तव मे ॥१२॥

भाषा

शिवजीने कहा हे पुत्र ! राजन ! आप भाग्यवान हो, तुमने हमारा मुझे प्रसन्न कर दिया है पुत्र हमसे वर मांगो। राजाने कहा भगवन् यदि आप मुझपर प्रसन्न हैं हमें वर देना चाहते हैं तो आप पिताजीके नाम हमारे नामसे स्थिर होइये। आपका नाम तिलकेश्वर होवे। हमारे राज्यमें हमें तिलक दीजिये। हमारा संतान अक्षय होवे और अजेय होवे। दान में शक्ति, दिन रात में भक्ति, फल साधन में विरक्ति, भक्ति निर्दोष अन्तमें मोक्ष प्राप्त हो। भगवान शिवजीने कहा। हे राजन ऐसा ही होगा। क्योंकि तुम मेरे अत्यन्त प्रिय पुत्र हो... ८-९-१०-११-१२

संस्कृत

सुभक्तिस्त्वयि प्रीतं सद्यक्तिमदेयं प्रभो नृप
यदन्यदपि चित्तेन सर्वं वै भवतो तव ॥१३॥
अद्य प्रभृति यत् किंचिद् दिह मर्त्यो विधास्यति
योगे त्वदीयं तीर्थे फलं तस्य निदानम् ॥१४॥
शुभं वाथ शुभं वापि नूनं मन्नन्तरानुसार
मत्र साधु देशे दिव्यं भविष्यति तिलाधिकम् ॥१५॥
आरम्भे यतो यस्मात् तिलं वै प्राशितं त्वया
तस्मात् तिलेश्वरं लक्ष्मं नाम्ना तिलकेश्वरम् ॥१६॥

तिला: पवित्रमतुलं तिला: पाप विशोधना:
तिला: सर्वत्र प्रशस्ते दाने स्नाने च भोजने ॥१६॥
देव कार्ये तथा होमे मंगल्ये मनुजर्षभ
पितॄणां तृप्तिदा: सूक्ष्मा: नाना कार्येषु ॥१८॥

भाषा

भक्त हो आपके लिये इनसे पाप आदि कुछ भी नहीं है। कुछ भी मांगना हो मांग सकते हो। जो कुछ भी इस मर्त्य लोक में होगा उसका फल भी होगा। शुभाशुभ मन्वन्तरानुसार उसे सुनो मेरे आशीर्वाद से निःसन्देह तिल तिल भक्षण करेंगे क्योंकि तुमने तपके प्रारम्भ में तिल भक्षण किया है। इसलिये इसका नाम तिलके रूप होगा। तिल नाम अत्यन्त पावन है। तिल पाप शोध करने वाला होता है। तिल की सब जगह प्रशंसा होती है। तिल दान में, स्नान में, भोजन में, देवकार्य में हवन कार्य में मांगल कार्य में, पितरों की प्रसन्नता आदि नाना कार्यों में लगता है।

संस्कृत

तिला मलक संज्ञक औषधं शाकजं तु तम्
मार्गे जनस्याजेन तिल भक्षं न दोषभाक् ॥१७॥
सम्यगर्च्य तिले शुभ्रे तिल पृष्टे नृपो नृप
प्रणम्य गौतमं विप्रं ततः पुर स्वकं व्रज ॥२०॥
इत्युक्त्वान्तर्दधे देव स्तेनो रूप सनातन:
लिंग रूपं ततो राजा स्नात्वा संपूज्य तं तिलैः ॥२१॥
प्रणम्य दत्त्वा दानानि गौ स्वर्णाद्यं कराणि च
तिल दानानि बहुशः द्विजेभ्यो मुनिदत्तवान ॥२२॥
तथा प्रदक्षिणं कृत्वा गौतमं मुनि सत्तमम्
मम सिद्धिरियं प्राप्ता त्वत्प्रसादान्मुनीश्वर ॥२३॥
प्रणम्य पृच्छ लब्धाशी स्वपुरे च जगाम ह
मार्कण्डेय उवाच
इति ते कथितं पार्थ तीर्थं वै तिलकेश्वरम् ॥२४॥

भाषा

तिल आँवला पान औषधि है इसमें शाक नहीं मिलता। रास्ते जन समुदाय में तिल भक्षण करना दोष नहीं है।

१०७

साधु सोमवत्स ! नृपते ! भाग्यवानसि निश्चितम्
तपसा तोषितस्तेऽहं वरं वरय सुव्रत ॥८॥
राजोवाच
यदि तुष्टोऽसि मे देव वराहो यद्यहं मतः
कान्तां मे पितुर्यत्र नाम्ना स्थिरो भव ॥९॥
इह तीर्थे महेशाद्य तिलकेश्वर संज्ञकम्
तिलकं देहि मे वंशे स्वराज्यं भुक्तिरस्तु
सततं मम्यं चास्तु वंशे मे लयो जिनम्
दानशक्तिः दिने भक्तिर्विरक्तिः फलसाधने ॥१०॥
भक्तिर्विशेष निर्वाणे मुक्तिरस्तु ततः पाम
महेश्वर उवाच
एवं भवतु राजेन्द्र प्रियोऽसि त्वं तीव्र मे ॥१२॥
भाषा
शिवजीने कहा हे पुत्र ! राजन ! आप भाग्यवान हो, तुमने
हमारा मुझे प्रसन्न कर दिया है पुत्र हमसे वर मांगो ! राजाने कहा
भगवन् यदि आप मुझपर प्रसन्न हैं हमें वर देना चाहते हैं तो
आप पिताजीके नाम हमारे नामसे स्थिर होवे। आपका नाम
तिलकेश्वर होवे। हमारे राज्यमें हमें तिलक दीजिये, हमारा संतान
अक्षय होवे और अजेय होवे। दान में शक्ति, दिन प्रति में भक्ति,
फल साधन में विरक्ति, भक्ति विशेष अन्त में मोक्ष प्राप्त हो
भगवान शिवजीने कहा। हे राजन ऐसा ही होगा। क्योंकि तुम मेरे
अत्यन्त प्रिय पुत्र हो... ८-६-१८-१५-१२
संस्कृत
सुभक्तिस्त्वयि सद्यक्तिमदेयं प्रभो नृप
यदन्यदपि चित्तेन सर्वं वै भवतो तव ॥१३॥
अद्य प्रभृति यत् किंचिद् दिह मर्त्यो विधास्यति
योगे त्वदीयं तीर्थे फलं तस्य निदामय ॥१४॥
शुभं वाथ शुभं वापि नूनं मन्नन्तरानुसार
मत्र साधु देशे दिव्य भविष्यति तिलाधिकम् ॥१५॥
प्रारम्भे यतो यस्मात् तिलं वै प्राशितं त्वया
तस्मात् तिलेश्वरं नाम्ना तिलकेश्वरम् ॥१६॥

तिला: पवित्रमतुलं तिला: पाप विशोधना:
तिला: सर्वत्र प्रशस्ता: दाने स्नाने च भोजने ॥१९६॥
देव कार्ये तथा होमे मंगल्ये मनुजर्षभ
पितॄणां तुष्टिदा: सूक्ष्मा: नाना कार्येषु ॥१९८॥

भाषा

भक्त हो आपके लिये इनसे पाप आदि कुछ भी नहीं है। कुछ कोई भी मांगना हो मांग सकते हो। जो कुछ भी इस मर्त्य लोक में होगा उसका फल भी होगा। शुभाशुभ मन्त्रानुसार उसे सुनो मेरे आशीर्वाद से नि: सन्देह तिल तिल भक्षण करेंगे क्योंकि तुमने तपके प्रारम्भ में तिल भक्षण किया है। इसलिये इसका नाम तिलके रूप होगा। तिल नाम अत्यन्त पावन है। तिल पाप शोधन करने वाला होता है। तिल की सब जगह प्रशंसा होती है। तिल दान में, स्नान में, भोजन में, देवकार्य में हवन कार्य में मांगल कार्य में, पितरों की प्रसन्नता आदि नाना कार्यों में लगता है।

संस्कृत

तिला मलक संज्ञक औषधं शाकजं तु यम्
मर्त्यो जनस्याजेन तिल भक्षं न दोषभाक् ॥१९७॥
सम्यगर्च्य तिले शुभे तिल पृष्टे नृपो नृप
प्रणम्य गौतमं विप्रं ततः पुरं स्वकं व्रज ॥२००॥
इत्युक्त्वान्तर्दधे देव स्तेनो रूप सनातन:
लिंग रूपं ततो राजा स्नात्वा संपूज्य तं तिलै: ॥२०१॥
प्रणम्य दत्त्वा दानानि गौ स्वर्णं कराणि च
तिल दानानि बहुशो द्विजेभ्यो मुनिदत्तवान् ॥२०२॥
तथा प्रदक्षिणं कृत्वा गौतमं मुनि सत्तमम्
मम सिद्धिरियं प्राप्ता त्वत्प्रसादान्मुनीश्वर ॥२०३॥
प्रणम्य पृच्छ लब्धाशी स्वपुरे च जगाम ह
मार्कण्डेय उवाच
इति ते कथितं पार्थ तीर्थं वै तिलकेश्वरम् ॥२०४॥

भाषा

तिल आँवला पान औषधि है इसमें शाक नहीं मिलता। रास्ते जन समुदाय में तिल भक्षण करना दोष नहीं है।

१०६

सफेद तिल से पूजा करके पीछे लगाने प्रदक्षिणा गौतम
मुनी की करके फिर अपने घरको जाना। इतना कहकर शिव
जी अदृश्य होगये वह भगवान का प्रबन्ध अदृश्य हो गया ॥१३॥
ने स्नान करके लिंग रूपी शिव का तिल से पूजन किया प्रणाम
करके गौदान - स्वर्णालंकार - वस्त्रादि दानों को दिया शिवजी की
प्रसन्नता के लिये। गौतम मुनि की प्रदक्षिणा करके बोले भगवन
हमे सफलता मिल गई, आपके आशीर्वाद से पूजा सफल करके
मुनी जी से आशीर्वाद लेकर अपने घरको गये। श्री मार्कण्डेय
मुनि ने युधिष्ठिर जी से कहा हे पार्थ तिल के स्वरूप की महिमा
आप से कह दिया - १६-२७-२१-२२-२३-२४

संस्कृत

यः शृणोति सर्व पापेभ्यो मुच्यते नात्र संशय
तीर्थे स्नानादिकं कृत्वा तिलैश्च पूजयेच्छिवम् ॥२५॥
तर्पयेद्देव पितॄन् श्राद्धं कुर्यात् विधानतः
तस्य पुण्य फलं चैव कथितं च विशेषतः ॥२६॥
तृप्ता स्युः पितरस्तस्य यावन्मन्वन्तरं नृप
यश्च शुक्ल तिलैः कुर्यात् शुभे लिङ्गं प्रपूरणम् ॥२७॥
तिल पिष्टैर्न वा पार्थ पवित्रेण स्वशक्तितः
तिले तिले तिल द्रोण पुण्यं प्राप्नोति वै नरः ॥२८॥
यावन्मन्वन्तरं चैव पुण्य वृद्धि तिलाधिका
प्राप्तोऽहं नरशार्दूल तपैः नान्यैः शुभाशुभम् ॥२९
वृद्धि माप्नोति सततं शिवे नोक्तं यथा पुरा
तिलं होमान्न वस्त्रांसि यो ददाद्धि भूपते ॥३०

भाषा

जो इसे सुनता है निःसन्देह सब पापों से मुक्त होजाता है।
तीर्थ में स्नानादि करके तिल के स्वरूप शिव पूजा करके
देव पितरों का तर्पण करना विधानपूर्वक उसका पुण्य विशेष
उसके पितर मन्वन्तर तक तृप्त होजाते हैं। जो मनुष्य श्वेत तिल
से शिवलिंग भरता है अथवा तिल पिष्ट से अपनी शक्ति
अनुसार लगाता है तिल तिल द्रोण पुण्य पाता है। मन्वन्तर
तक वृद्धि होती है। तिल तिल उसकी वृद्धि होती है।

१५७

मन्वन्तर तक पुण्य बढ़ता ही जाता है। शिव जी ने ऐसा कहा है
तिल का हवन - दान - वस्त्र - आभूषणादि जो इस तीर्थ में करता
वह अक्षय होता है। २५-२६-२७-२८-२९-३०

संस्कृत

तिल होमेन दानेन वस्त्राभरण भूषणैः
शिवो मे प्रीयतां देव इत्युक्त्वा द्विजाय च ॥३१
शिव संतोषणात् सोऽपि शिव लोके महीयते
उपहारैश्च विविधैः तथा पंचामृतेनच ॥३२॥
संस्नाप्य पूजयेद्धास्तु तिलकेश्वरमुत्तमम्
नाना पुष्पैस्तथा धूपं दीप नीराजनैरपि ॥३३॥
अर्घ्यं ताम्बूल वस्त्रैश्च तथा नैवेद्य यत्नतः
पूजितः परमेशश्च दद्याच्च वांछितं फलम् ॥३४॥
पुत्र पौत्राभिवृद्धिश्च आयुरारोग्यतां तथा
एतद्वै परमं तीर्थं भुक्ति मुक्ति फलप्रदम् ॥३५॥
इति श्रीवायु पुराणे माहिष्मती महात्म्ये तिलकेश्वर तीर्थ कथनं
नाम चतुर्विंशोऽध्यायः ॥२४॥

भाषा

तिल होम दान वस्त्र आभूषण शिव जी के प्रसन्न के लिये
दान करता है ब्राह्मण को उसे शिव लोक की प्राप्ति होती है।
अनेक उपहारों पंचामृत से शिव जी को स्नान कराना विधि
विधान से चन्दन पुष्प धूप - दीप अनेक प्रकार के नैवेद्य से
पूजा करे तो भगवान तिलकेश्वर जी पुत्र - पौत्र - आयु - आरोग्य
की वृद्धि होती है। यह तीर्थ भुक्ति मुक्ति फल देने वाला है
३१-३२-३३-३४-३५

इति श्री वायु महापुराण के माहिष्मती माहात्म्य का चौबीसवां
अध्याय पूरा हुआ ॥२४

श्री राम जय राम जय जय राम

श्री राम राम राम

१११

अथ पंच त्रिंशोऽध्यायः

मार्कण्डेय उवाच —

तथैव गौतमेनात्र तपस्तप्तं महात्मने
स्थापितं परमं तीर्थं नाम्ना वै गौतमेश्वरम् ॥१॥
रेवायां स्नात्वा कृत्वा सर्व पाप क्षयं करे
न तीर्थ तज्जलस्याहु न स्पृष्ट्वा मनस्य वा ॥२॥
यद्ध्यासितं महर्षिभिस्तद्वै तीर्थं विदुर्बुधाः
गौतमेनाश्रितं तीर्थं लोकानां हितकाम्यया ॥३॥
स्वर्गसोपानभूतं तीर्थं मुख्यं युधिष्ठिर
तपसा तोषितः शर्वो गौतमेन महात्मना ॥४॥
उवाच स महात्मानं गौतमं तपतां वरम्

शिव उवाच

भो भो विप्र कथं क्लेशं कुरुते जाप्यना त्वया
दद्मि वांछितं ते यत्ते मनसि संस्थितम् ॥५॥

गौतम उवाच

भाषा

मार्कण्डेयजी ने कहा कि महर्षि गौतमजी ने महावन में परम तीर्थ रूप गौतमेश्वर शिव जी के नाम स्थापित किया जो कि नर्मदा जी के उत्तर तट पर सब पापों को नाश करने वाला है। तीर्थ की महत्ता जल तथा स्पर्श से नहीं होती है बल्कि बड़े महर्षि गणों के रहने से होती है गौतम जी का स्थापित तीर्थ लोगों के हित कल्याण कामना से है। हे महाराज युधिष्ठिर जी यह तो स्वर्ग जाने की सीढ़ी है। गौतम जी की तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान शिव जी ने कहा कि हे महाभाग देव! तपस्या से क्लेश क्यों करते हो आप को इच्छित फल दूंगा मुझसे वर मांगो। गौतम जी ने कहा -

संस्कृत

जगदेवजगन्नाथ महारुद्र कृपानिधे
यदि प्रसन्नो भगवन् वरदातुमिहेच्छसि ॥६॥
दातव्यमेव जगतां नान्योऽस्ति जगदीश्वर
गार्हस्थ्यस्य यावेमष्टभार्योऽस्मि शङ्कर ॥७॥

नगार्हस्थात् परो धर्म यतो धर्म पृथ्वि विभो
भार्याहीनो व्रतभ्रष्टो वलि पलित निग्रहः ॥११७॥
द्विजो न योग्यतामेति दैवे पित्रे च कर्मणि
त्रिवर्ग साधनं भार्या हीनं भार्याकुतः सुखम् ॥११८॥
भार्याहीनं गृहं शून्यं पितरस्तस्य पराङ्मुखाः
तस्मात्त्वं देहि मे भार्यां शुद्धां चैव वरांगनाः ॥११९॥
स्थापितस्त्वं मया चात्र मम नाम्ना स्थिरो भव
पवित्र तीर्थमास्ता लोकानां नाम्निदत्तवरः ॥१२१॥
महेश्वर उवाच

भाषा

गौतमजी ने प्रार्थना किया कि हे जगन्नाथ महारुद्र कृपालु भावन आप की जय हो जय हो। यदि आप हमपर प्रसन्न है और वरदेना चाहते है भावन आप के बगैर संसार मे कोई भी दाता नही है। मै गृहस्थ होना चाहता हूँ। भार्या सेरहित होगया हूँ। इस पृथ्वी पर गृहस्थ धर्म के बराबर कोई दूसरा धर्म नहीं है। स्त्री के नहोने से मै भ्रष्ट होगया हूँ शरीर बूढ़ा होगया है बाल पक गये है इसलिये भार्या चाहता हूँ। स्त्री बिना ब्राह्मण देव और पितृ कर्म कीयोग्यता नहीं प्राप्त कर सकता है। त्रिवर्ग अर्थ धर्म काम का साधन स्त्रीहीन पुरुष नहीं कर सकता है स्त्री बिना सुख कहाँ? स्त्री बिना घर सुनाई पितृगण मुख फेरकर लौट जाते है इसलिये आप हमे स्त्री दीजिये जो सदा पतिव्रता कारिणी और चरित्र वान पतिव्रता हो मैने यहाँ अपने नाम (गौतमेश्वर) आप को स्थापित किया है आप स्थायी रूपसे रहिये यह तीर्थ लोको की कामना पूरा करे यह सुनकर शिवजी ने कहा

संस्कृत

एवं भविष्यतिमुने स्वल्पकाले च गौतम
विष्णु पाद रजः पूतः निर्धूत किल किल्बिषात्
भार्या ते भावि सर्वा सत्य रूपा सनातनी
आदाय तामुपागम्य कन्यां दास्यन्ति ते द्विजाः ॥१२२॥

१९३

तपः कष्ट परा साध्वी शापमुक्तापि हैव हि
नष्टे स्थापि हि किंचित्तया तनो निर्मले दये ॥१९५॥
तपारपरश्च कल्याणे साध्वी बहुर्णि सत्तम
दोषो योषासु नारोप्यो न पापिनं नहि क्रिया ॥१९६॥
तपाकृष्य चाधिक्यं नरे स्वहित मिच्छुभिः
गौतमेहम नाम्नश्च लोकानां हितकाम्यया ॥१९७॥
इत्युक्त्वा देव देवेश तत्रैवान्तर धीयत
स्थापयन्न हि हिनि तत्र गौतमो मुनि सत्तम ॥१९८॥
पूजयन्न मिश्रनपूज्यर्थं दिनारान्न भुतं द्रितः
वेदपारायणं जप्ते शिव स्य पुरतो नृप ॥१९९॥
ततस्तु तीये दिवसे सर्वा स्ता देव माहतः
मुनि भार्यभिहिन्यः तां शुद्धां निष्पाप चेतसः ॥२००॥
गृहीत्वा तत्र संप्राप्ता गौतम स्य समीपतः
ब्राह्मीन्न वैष्णवी रौद्री कौमारी शक्र संभवा ॥२०१॥

भाषा

हे गौतमजी! बहुत शीघ्र आप का पाप हो जायेगा। विद्या भगवान की नाम धूलि से पवित्र हुई निर्दोष निष्पाप आपकी पत्नीले कर परसो आप के पास सप्तदेव माताये आवेगी आपको सौंपे गी तप कष्ट से पवित्र पतिव्रता साध्वी शापमुक्त हुआ आप बहुत सीमा मुक्त नहीं करना। स्त्रियों का अवगुण हितेषी मनुष्य को नहीं देखना चाहिये। गौतम ने श्रवणसे ये कल्याण सहित इतना कहकर शंकरजी अदृश्य होगये गौतम मुनी ने भगवान गौरमेश्वर को विधिवत पूजा किया वेदपारायण जापाला तीन दिनों तक किया तीसरे दिन देवमाता मुनिजी की स्त्रीको लेकर गौतम जीके समीप आगई ब्राह्मी वैष्णवी रौद्री कौमारी

१५-१६-१७-१८-१९-२०

संस्कृत

नारसिंही च वाराही सर्वे तत्रोपजग्मतः
दृष्ट्वा समागतास्तत्र मुनिरभ्युत्थितस्तदा ॥२०२॥
प्रणम्य सर्वसाध्वीः वद्धाञ्जलिपुटोऽब्रवीत्
जयशब्देन संपूज्य प्रोवाच मुनि पुंगवः ॥२०३॥

३३४

भाषा

इन्द्राणी नारसिंही वाराही ये सात लोक मातायें बनाई अर्थात
जो कैसा मन मुनि जी ने हाथ जोड़कर स्तुति प्रणाम किया फिर
बोले

संस्कृत

गौतम उवाच :—
या हंसवाहिनी कमण्डलु धारिणी
वरदा विश्वजननी पातु मां सदा ॥ २४
शंखचक्र गदा हस्त गौरी गरुड वाहिनी
त्रिशूल नंद्या जगत धात्री वैष्णवी पातु मां सदा ॥२५॥
त्रिशूल खट्वांगधरी देवी वृषभ वाहिनी
साम वेद मयी गौरी पातु मां सर्व पातकात् ॥२६
मयूरवाहना देवी शक्ति कुक्कुटधारिणी
विद्यात्रिका धनुर्वेद धारिणी पातु मां सदा ॥२७

भाषा

श्री गौतम मुनी जी ने कहा कि जो हंसवाहिनी कमण्डलु धारिणी
विश्वजननी माता वाहनी हमारी रक्षा करो हमारा प्रणाम है। शंखचक्र
गदा धारण करने वाली गरुड वाहिनी गौरी माँ जगत पूज्या
जगत धात्री वैष्णवी माँ हमारी रक्षा करो प्रणाम है। त्रिशूल खट्वांग
गदा धारण करने वाली वृषभ वाहिनी। साम वेद स्वरूपे गौरी
माता हमें पापों से रक्षा करो ॥ मयूर वाहिनी शक्ति कुक्कुट
धारिणी विद्यात्रिका धनुर्वेद धारिणी हमें पापों से रक्षा करो
हमारा प्रणाम है। २४-२५-२६-२७

संस्कृत

सहस्र नयना देवी गजराज वज्र धारिणी
कराला दैत्य मथिनी नृसिंही पातु मां सदा ॥ २८॥
सर्वाशीर्ष पुरा राला सुरेन्द्रा चक्र धारिणी
दीर्घ दंष्ट्रा दधत महि सा देवी पातु मां सदा ॥२९॥
दिक्पाला लोकपालाश्च ब्रह्मादि सुर सत्तमा
यदो राधनता सिद्धा त्रिशक्त्या नता ऽस्मि तान् ॥३०॥
सृष्टि पालन संहार कारिणी त्रिशक्ति धारिणीम्
जगत व्याप्य स्थिता शक्ति त्रिशक्त्या नतोऽस्मि तान् ॥३१॥

११५

स्वाहा मोक्ष प्रदा देवी सुख सौभाग्य दायिनी
वर्णाश्रमाणां या धात्री निश्वरूपां नतोऽस्मि ताम्॥ ३२॥

भाषा

सहस्र नेत्रों वाली गजगामिनी वज्र धारण करने वाली ऐन्द्री मातृ
को हमारा प्रणाम है। विकराल रूप दैत्यों का नाश करने वाली नारसिंही
मातृ को प्रणाम है। लम्बे स्तनों वाली घुर्घुर शब्द करने वाली
श्वेत वर्ण वाली बड़े बड़े दांतों से पृथ्वी को धारण करने वाली वाराही
मातृ जी को हमारा प्रणाम है। दिक्पाल लोकपाल ब्रह्मादि
देव जिसकी आराधना करते हैं सिद्ध गण जिसकी सेवा करते हैं ऐसे
विश्वधारिणी विश्वव्यापिनी मां को हमारा प्रणाम है
२८-२९-३०-३१-३२

संस्कृत

कालकूटो यस्य कृष्टा या तुष्टा चामृतं तथा
सर्वस्य जीवभूता या निश्वरूपा नतोऽस्मि ताम्॥३३
स्वाहा मोक्ष प्रदा देवी सुख सौभाग्य दायिनी
वर्णाश्रमाणां या धात्री निश्वरूपां नतोऽस्मि ताम्॥३४॥
या च बन्धु स्वबन्धूनां या नेत्रं चक्षुरक्षुषाम्
या च नाथो स्वनाथानां निश्वरूपां नतोऽस्मि ताम्॥३५॥
पुरा पुरुष मानिष्य ससर्जाखिलमाद्यया
तस्य पुष्टि महादेवी निश्वरूपां नतोऽस्मि ताम्॥३६॥
इति संस्तुत्य मुनयः ता गौतमे नाथमागतः
हृदि वैकल्य संयुक्ता प्रोचुर्विप्रं पुरः स्थितम्॥३७॥
इति श्री वायुपुराणे माहिष्मती माहात्म्ये पंचविंशोऽध्यायः॥२५॥

भाषा

जो मां कालकूट विष को अमृत बना सकती है जगत् जीव की जन्म दात्री है उस मां को
हमारा प्रणाम है। स्वाहा मोक्ष सुख देने वाली वर्णाश्रमों की मातृ
निश्वरूपा को हमारा प्रणाम है। जो बन्धुओं की बन्धु है नेत्रों की नेत्र वालों की
नेत्र है जो अनाथों का नाथ है उस निश्वरूपा मां को हमारा प्रणाम है।
पुरुष के प्रवेश काल जो संपूर्ण संसार को उत्पन्न कर सृष्टि करने
वाली देवी को हमारा प्रणाम है। इस प्रकार प्रार्थना कर गौतम ने प्रणाम किया
वायुपुराण के माहिष्मती के माहात्म्य में पच्चीसवां अध्याय समाप्त॥२५॥

२५

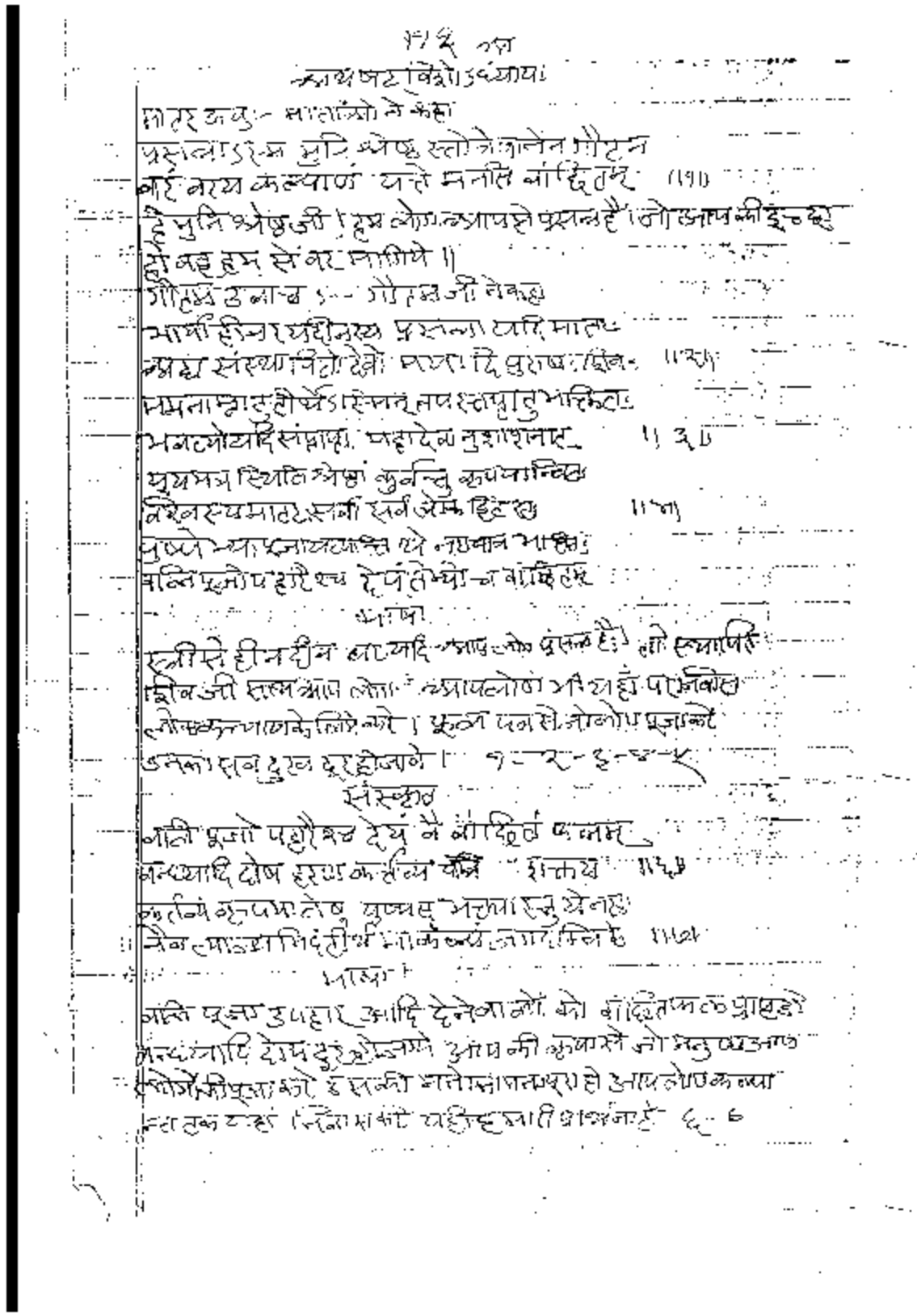

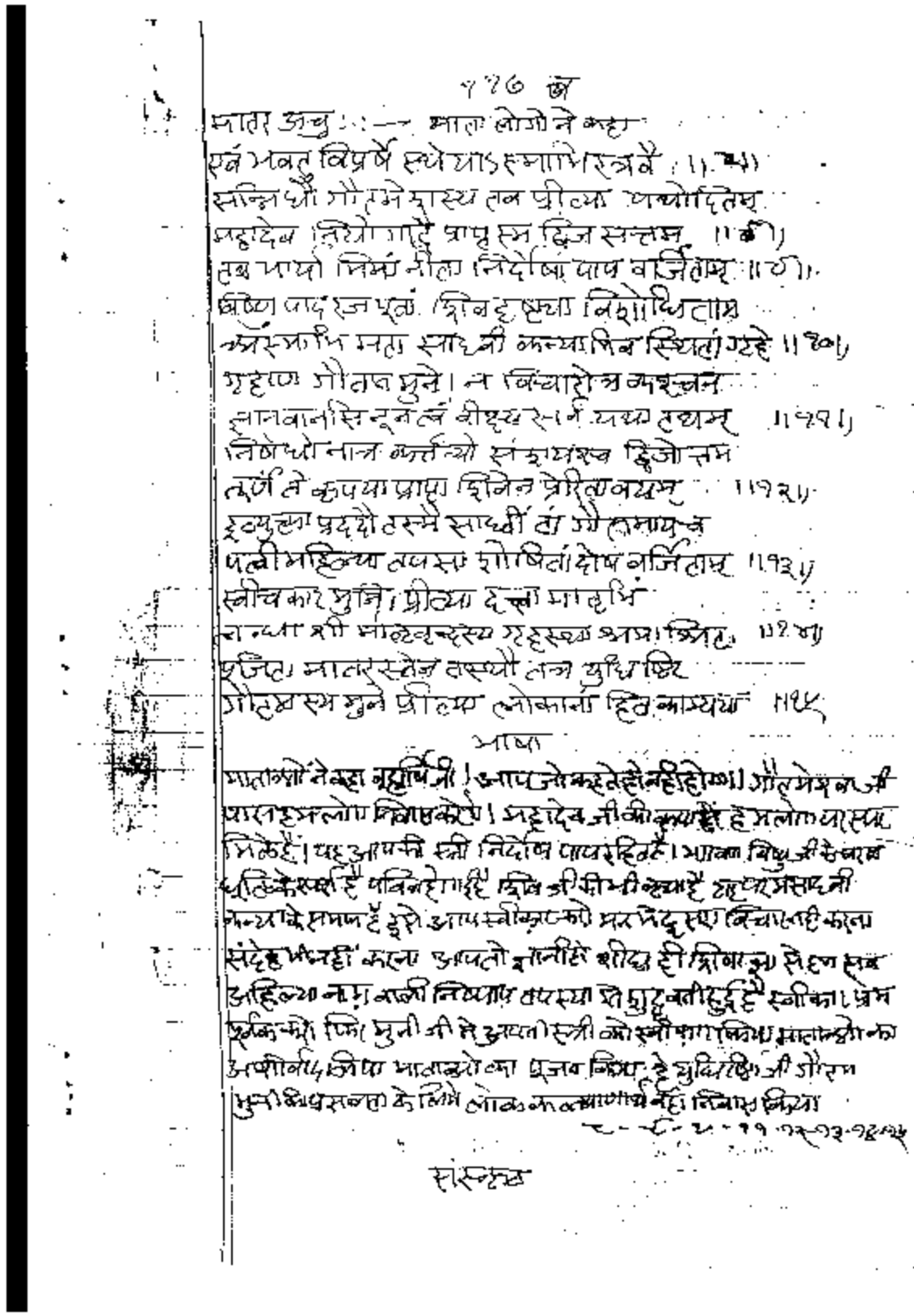

४१७ ब

मातर ऊचु :— माता लोगों ने कहा

एवं भवतु विप्रर्षे स्थेयाऽस्माभिरत्रवै ।।१४।।
सन्निधौ गौतमेनास्य तव प्रीत्या यथोदितम्
महादेव त्रियोगाद्वै प्राप्तु स्म द्विज सत्तम ।।१५।।
तव भार्या निर्मला निर्दोषा पाप वर्जिताम् ।।१६।।
शिष्य पाद रज पूतां दिव दृष्ट्या निशोधिताम्
अस्माभि मता साध्वी कन्या मिव स्थिता गृहे ।।१७।।
गृहाण गौतम मुने। न विचारो न कश्चन
ज्ञानवानसि मुने त्वं वीक्ष्य स्वर्गं यथा तथाम् ।।१९।।
निषेधो नात्र कर्त्तव्यो संशयस्य द्विजोत्तम
तूर्णं ते कृपया प्राप्ता दिनेन प्रेरितात्वयम् ।।१२।।
इत्युक्त्वा प्रददौ तस्मै साध्वीं तां गौतमाय च
पत्नीमहिल्यां तपसा शोधितां दोष वर्जिताम् ।।१३।।
स्वीचकार मुनि। प्रीत्या दत्ता मातृभि
कन्या श्री मान्धवस्य गृहस्थ आश्रमे स्थित ।।१४।।
पूजित। मातरस्तेन तस्थौ तत्र युधिष्ठिर
गौतमस्य मुने प्रीत्या लोकानां हित काम्यया ।।१५।।

भाषा

मातान्नों ने कहा महर्षि जी! आप जो कहते हो वही होगा। गौतमेश्वर जी
पारा इस लोक निवास करेंगे। महादेव जी की कृपा से हे इस लोक वासियों
मिले हैं। यह आपकी स्त्री निर्दोष पाप रहित है। माता विधु जी के चरण
धूलि के स्पर्श से पवित्र हो गई है दिव्य दृष्टि से भी शुद्ध है यह प्रसन्न
कन्या के समान है इसे आप स्वीकार करो मन में संदेह मत करो आपको ज्ञानी हो शीघ्र ही दिव्य रूप से इस
अहिल्या नाम वाली निष्पाप तपस्या से शुद्ध हुई है स्वीकार प्रेम
पूर्वक करो। फिर मुनी जी ने अपनी स्त्री को स्वीकार किया माताओं का
आशीर्वाद लिया माताओं का पूजन किया हे युधिष्ठिर जी गौतम
मुनी विश्व सभ्यता के लिये लोक कल्याणार्थ निवास किया
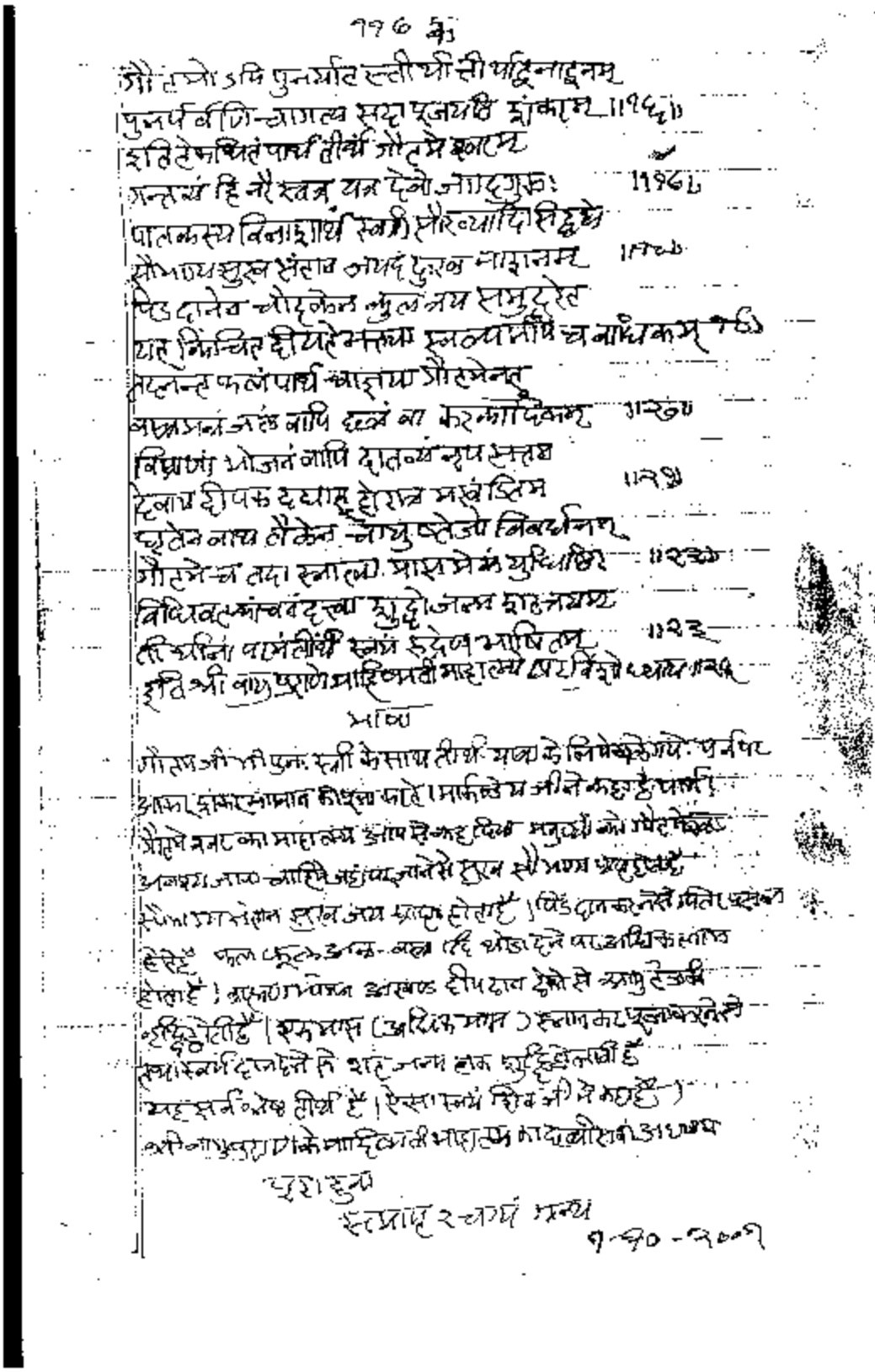
संस्कृत